MSS No. 327 Subject PHILOSOPHY

Name of MSS ਪਨਤੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼

Author Not Given

Period Folios 62

Script DEVANAGIRI Source Prithi Pal Singh

Missing Folios This Mss. have Some Unorganized Folios which have no numbering.

उत्तर अभिनवगुप्तपदार्थ॥ विरोधीगुनके भयेतें वह रूष दूर ह्वै जात है॥ चंदनके स्पर्स को रूष विरोधीगुन कौन दाहादिक
तिनके [illegible] उपजे तें दूर ह्वै जात है॥ असेई विभावादिकनको रूष विरोधीभावनके उपजे तें दूर ह्वै जात है॥ प्रस्न श्रीगोविंद॥
[illegible] रस विषै भी यही न्याय होय॥ जो विरोधीगुनो तें रूष दूर ह्वै जात है तो वाहीये विरोधीरसके उप[illegible]जे तें रस भी दूर ह्वै जाय॥
उत्तर अभिनवगुप्तपदाचार्य॥ यह न्याय रसमें नहीहोत॥ क्यो रस जो है सो अलौकिक जानबे की जो पहचान है तिस करके रूप है
रसके समें विषै अलौकिक ज्ञानही को [illegible] भाव होत है॥ तहा कोई विरोधीरस अंतर नहीपाय सकत॥ याहीतें रस दूर नहीहोत
है॥ प्रस्न श्रीगोविंद॥ चंदनस्पर्सजन्यरूषको जो न्याय है सो तुम रस विषै नहीमानत हो॥ ८ तौ यह चर्वना मेतौ होय॥ जौ लगविभा
वादिक रहे तौ लग ही चर्वना रहै॥ विभावादिनके दूर भये चाहीये दूर ह्वै जाय॥ चर्वना नित्य कैसे होयगी॥ उत्तर अभिनवगुप्तपदाचा
र्य॥ चर्वना जो है सो लोकोत्तर है॥ तिस विषै या दोषको स्पर्स नहीहोत है॥ क्यो यह दोष तो जगतमें है॥ औ चर्वनाको रूष तो जगतें भि
न्न ही है॥ ईसीतें काव्यों [illegible] चर्वनावसिष्ट जो स्थाई है सो रस रूप कह्यो है विभावादिदिकवसिष्ट स्थाईको रस नहीकह्यो॥ प्रस्न श्रीगोविं
द॥ जो एरत्यादिक स्थाईभावनमें के विभावादिक प्रकास करनवारे है तो इनको ज्ञापक कारन [illegible] मानों॥ जैसे दीपक ज्ञापक कारन
है पदारथों को॥ असेई विभावादिक ज्ञापक कारन है रत्यादिस्थाईभावनके॥ उत्तर अभिनवगुप्तपदाचार्य॥ जो ज्ञापक कारन होत है सो तो
ज्ञाप्य तें दूरवर्ती होत है औ भिन्न होत है॥ औ विभावादिक जे है तें स्थाई नतें दूरवरती नहीहै मिलेई हुये है॥ यातें विभावादिक
स्थाईको प्रकास तौ कर देत है॥ पै जो तुम कहो एज्ञापक कारन है॥ सो एज्ञापक कारन नहीहै॥ औ इनो करके रस ज्ञाप्य
भी नहीं है॥ प्रस्न श्रीगोविंद॥ जो तुम विभावादिकनको निर्केवल ज्ञापक भी नहीमानते हौ औ निर्केवल निष्पादक कार
जानवा रे भी नहीमानत हौ॥ तौ यह जो विभावादिकनकी एकसामग्री है तिसको कैही प्रकार की मानौं॥ ज्ञापक भी
मानो औ निष्पादक भी मानो॥ याहीतें चर्वनावसिष्ट स्थाई जो रस है ताको ज्ञाप्य भी कहो औ कजन्य भी कहौ [illegible] उत्तर
रस को
रस के 3 रस को ज्ञाप्य मानो जो प्रकासित नके

१।।

उत्तर गो [अ]भिनवगुप्तपदार्थ।। विरोधीगुनके भयेतें वह रूष दूर ह्वैजातहै।। चंदनके सर्स कोरूष विरोधी गुन कौन दाहादिक तिनके उपजे तें दूर ह्वै जातहै।। ऐसेई विभावादिकनको रूष विरोधी भावनके उपजेतें दूर ह्वै जातहै।। प्रश्न श्रीगोविंद।। रस विषै भीयही न्यायहोय।। जो विरोधीगुनोतें रूष दूर ह्वैजातहै तौ चाहीये विरोधी रसके उपजेतें रस भी दूर ह्वै जाय।।

उत्तर अभिनवगुप्तपदाचार्य।। यह न्याय रसमें नहीं होत।। क्योंरस जो है सो अलौकके जानबे कौ जो पहचान है तिस करके रूप है रसके समें विषै अलौकके ज्ञानही को भावहोतहै। तहां कोई विरोधी रस अंतर नहीं पाय सकत।। याहीतें रस दूर नहीं होत है।। प्रश्न श्रीगोविंद।। चंदन स्पर्स जन्य सुष कौ जो न्याय है सो तुम रस विषै नहीं मानत हो।। तौ यह चर्वना मैं तौ होय।। जौलग विभावादिक रहै तौ लगही चर्वना रहै।। विभावादिनके दूर भये चाहीये दूर ह्वै जाय।। चर्वना नित्य कैसे होयगी।। उत्तर अभिनवगुप्तपदाचार्य।। चर्वना जो है सो लोकोत्तर है।। तिस विषै या दोष को स्पर्स नहीं होतहै।। क्यों यह दोष तौ जगतमें है। औ चर्वना को रूप तौ जगतमें नहीं है।। ईसीतें काव्यों चर्वना वसिष्ट जो स्थाई है सो रस रूप कह्यो है विभावादिक वसिष्ट स्थाईको रस नहीं कह्यौ।। प्रश्न श्रीगोविंद।। जो एरत्यादिक स्थाईभावनमें के विभावादिक प्रकास करनवारे है तौ इनको ज्ञापक कारन [redacted] मानों।। जैसे दीपक ज्ञापक कारन है पदारथोंको।। ऐसेई विभावादिक ज्ञापक कारन है रत्यादि स्थाईभावनके।। उत्तर अभिनवगुप्तपदाचार्य।। जो ज्ञापक कारन होतहै सो तो ज्ञाप्यतें दूर वर्ती होतहै औ रूप भिन्न होत है।। औ विभावादिक जे है तें स्थाईनतें दूर वरती नहीं है मिलेई हुये है।। यातें विभावादिक प्रकास तौ कर देत है। पै जो तुम कहो ए ज्ञापक कारन है सो ए ज्ञापक कारन नहीं है।। औ इनोकर के रस ज्ञाप्य है।। प्रश्न श्रीगोविंद।। जो तुम विभावादिकनको निर्केवल ज्ञापक भी नहीं मानतें हो औ निर्केवल निष्पादक उपदे भी नहीं मानत हो।। तौ यह जो विभावादिकनकी एक सामग्री है तिसको कैही प्रकार की मानौं।। ज्ञापका भी निष्पादका भी मानो।। याहीतें चर्वना वसिष्ट स्थाई जो रस है ताको ज्ञाप्प भी कहो औ कर्जन्य भी कहो। [redacted] उत्तर अ

स्थाईको भी नहीं जावनवा मानो औं

सको

रहैकी।१

रसके ३ रसको ज्ञाप्पमानों जो प्रकास होनकें

रसस्थाई कें प्रकास करैहै

उत्कासकें भीतरकें सास्यकेंहै लोंनो।। ३

जेरसकेप्रकासकनिमित्तकारनहै ति १

तौकारजकोभीनासह्वैजातहै॥जैसेअपेसावुद्धनिमित्तकैरनहैदुखादिकोको॥दुखक्याकहीये॥यहघटहैयहपटहैएघ
टपटहैं याकोनामदुखहै॥इसदुखकेप्रकासकरनवारीजोवुद्धहैसोअपेसावुद्धहै॥क्योघटकेप्रकासकरनवारीजोवुद्धहैता
कोपटवुद्धकीअपेसाहै पटकेप्रकासकरनवारीजोवुद्धहैताकोघटवुद्धकीअपेसाहै॥सोजवयहअपेसावुद्धदुखकोनिमि
त्तकारनदूरह्वैजातहैतबदुखभीदूरह्वैजातहै॥औसेईविभावादिकजेनमित्तकारनहैतिनकेदूरभयेतेफेरवाहीभातरस
कैसेरहततहै॥वहतोवाहीयेदूरह्वैजाय॥तुमनेकस्योरहतहै॥सोयहवार्ताकेसेवने॥उत्तरअभिनवगुप्तपदाचार्य॥दुखजोहै
अपेसवुद्ध सोनित्यहै याकेदूरभयेतेंदूरनहीहोत॥क्योघटपटएदोऊवनेईहुयेहै औअपेसावुद्धइनकेप्रकासकरनवारीहैसोदूरह्वै
जातहै॥दुखनहीदूरहोत॥औसेईविभावादिकनकेदूरभयेतेंरसप्रतीतकीजोसिद्धहैसोदूरनहीहोत॥वैसीयावनीरहततहै॥
प्रश्न॥श्रीगोविंद॥चंदनकेस्पर्शकरकेजोसुखउपज्योहै सोताकेस्पर्सपर्जंतहीरहततहै जबतिसचंदनकेस्पर्सकोअभावहोतहै॥
तवहीतिसकेसुखकोअभावहोतहै॥औसेईविभावादिकनकेमिलनतेंजोसहृदयकोरसउपज्योहै सोतोजोलगविभादिकरहेगे
तोलगहीरहेगो॥ विभावादिकनकेंदूरभयेतेंकैसेरहेगो॥यहवातनिश्चैनहीजानीपरत॥उत्तर॥अभिनवगुप्तपदाचार्य॥
चंदनस्पर्सकेअभावभयेतेंकछुचंदनकोसुखदूरनहीह्वैजात॥तहांक्यादूरहोतहै॥कारनकेअभावभयेतेंकारजकोअभावहोतहै
कारनजोहैचंदनकोस्पर्स॥तिसस्पर्सकरकेजोसुखरूपकारजउपज्योहै॥सोदूरह्वैजातहैस्पर्सकेदूरभये॥औचंदनकोसुखदूरनही
हो[illegible]सेईविभावादिकनकेदूरभयेतेंरसदूरनहीहोत॥जोविभावादिकनतेंसुखउपज्योहैसोदूरह्वैजातहै॥[illegible]॥रसद
र[illegible]त॥प्रश्न श्रीगोविंद॥एकवारजोचंदनकेस्पर्सतेंसुखउपज्योहै सो विभावादिकनतेंसुखउपज्योहैसोफेरदूरकैसेहोतहै

प्रश्न श्रीगोविंद॥ जो सतोगुन की अधिकता के आनंद को भोग कह्यो सो तो शृंगार सांत ही मैं होयगो रौद्रादिक मैं न होयगो
तो रौद्रादि रस कैसे होयगो॥ उत्तर॥ भट्टनायक॥ केवल सतो ही न [illegible] लीजै गुन तीन है॥ सतोगुन रजोगुन तमोगुन॥ इनमैं
एक एक गुन के अधिक होनतें और द्वै द्वै गुनो के दबनेते सुख दुख मोह प्रकास होत है॥ सतोगुन के बधेतें॥ और रजोगुन त
मोगुन के दबवेतें सुख प्रकास होत है॥ और रजोगुन के बधेतें सतोगुन तमोगुन के दबवेतें दुख प्रकास होत है॥ औ तम
मोगुन के बधेतें सतोगुन रजोगुन के दबवेतें मोह प्रकास होत है॥ या प्रकार सर्व रस होत है॥ यों पक्ष भट्टनायक जीने सां
ख्य शास्त्र को जो सिद्धांत है तिसके अनुसार विस्तार कियो है॥ प्रश्न श्रीगोविंद॥ तौ भी यह पक्ष नीको नही॥ यों प्रकार द्वै व्यापा
नकी रन की कल्पना तुमने करी है [illegible] या मैं प्रमान को अभाव है॥ क्यो तुमने भोग को ज्ञान को सरूप कह्यो॥ मुक्ति को ज्ञान सरू
पन ही कह्यो जिसने रस सरूप कै जानो है॥ ताते रस अनभव मैं कैसे ठहरे जो कि रस है॥ का हेत॥ जो पदारथ ज्ञान सरूपन
ही होत सो अनभव विषै न ही ठहरत॥ क्या हृदय की विचार मैं न ही ठहरत॥ ताते जो रस सरूप भुक्ति होन मने ज्ञान सरूपन
कही तो रस कैसे ठहरेगो॥ अब भरत जी के सूत्रपर अभिनवगुप्तपदाचार्य जी व्याख्या करत है॥ स्थाई भावन के साथ विभावा
दिकन को व्यंग व्यंजक भाव सरूप संबंध के भये तें रस की निष्पत्ति होत है क्या अभिव्यक्ति होत है॥ स्थाई भाव तो व्यंग है क्या
व्यंग होन की लायक है॥ औ विभावादिक व्यंजक है क्यो तिन स्थाईन को व्यंग करन की लायक है॥ तिनके परस्पर मिलेतें रस
की अभिव्यक्ति होत है॥ सो जितावत है॥ जगत विषै जे नायकादिक कारन है तिन कारनो करके॥ इत्यादि स्थाई भावन के अनु

अपवा२

मानकरनके जोग्य अभ्यासहै॥ तिसअभ्यासकोंहे शीघ्रस्फुरतनोमें ऐसे जेसामाजकहै॥ अर्थ कि विभावादिकनके जान
वेमेंजेवडे चतुरहै यह विसेषनहै॥ ऐसे सामाजकोंविषे सूक्ष्मरूपसौं स्थित हुये हुये जेरत्यादि स्थाईभावहै सोकाव्य
5 विषे औरु नाट्यविषेव्यंग होतहै॥ कैसे॥ काव्यमेंतोगुणअलंकारनके संयोगतें औ नाट्यमें च्यारप्रकारकेजोनृत्यके अंगहै॥
नाचवौ १ गायवौ २ बजायवौ ३ भावबतायवौ ४ इनके संयोगतें अपनेउत्कर्षकरप्रकास हुये हुये जेस्थाई है सो विभावा
दिककारनोकरके व्यंगहोतहै॥ कैसे विभावादिकहै॥ जे आपनी आपनी अलौकक अवस्थाकार मिलेहुये हैं॥ सर्व स्था
प्रकार ईनकोंव्यंगकरतहे॥ अरु श्रीगोविंद॥ जिनोविषे प्रथमहीतें रत्यादिस्थाईनहीउपजेहै॥ ऐसेजेरत्यादिस्थाईनकीवास
नातैंरहतपुरुषहै तिनोमें रसकीअभिव्यक्त होतहै कि नहीहोतहै॥ उत्तर॥ अभिनवगुप्तपादाचार्य॥ यामेंतोकछुसंदेह
नहीक्योंजिनोमेंरत्यादिस्थाईहीनहोयगोतिनमें रसकीअभिव्यक्तकेसेहोयगी॥ अब याहीतें जेपुरुष शृंगाररसतें वि
रक्त है ते भूषनादि शृंगारोकरके शृंगारीभीहै परतोभीतिनोमें शृंगाररसकीअभिव्यक्त नहीहोत॥ सांतरसहीकीहो
तहै॥ ऐसे जानीये॥ कछक और कहत॥ विभावादिकतोरसकेसहायकपाछेकहेहीहै॥ परस्वभावकीवासनाभीरसकी
सहायकहै॥ काहेतें॥ जिसस्वभावकीवासनाविना मीमांसक वैयाकरनीए शृंगारीभीहै परतिनोमेंरसकीअभिव्यक्त
नहीहोत॥ जो विभावादिकहीसहायकहैयहजानीये तौतिनोमेंभीरसकीअभिव्यक्तहैजाय॥ क्यों वेविभावादिकनकोंतो
जानतहीहै पैउनमें स्वभावकीवासनानहीहै यातेंरसभीनहीहै॥ तिसतें यह स्वभावकीवासनाभीसहायहैरसकी॥

उनमें

३ वे सी है वह प्रमान सहत प्रमाता तामें आपने औपरके विसय ज्ञानकी है ३ । क्यावध्या हुया जो स्वभाव है ४ साधारन रूप हुयो हुयो ४
३ विचारपाईयत है ३ जो स्वभाव है ३

6A विभावादिक औ स्थाई ए दोऊ साधारन ही होत है सामाजकों को ॥ सो कहत है ॥ विभावादिक उपायन को जो साधारन रूप
पाइके स्यो है तिस केवल कर के ॥ रस के उपजने के समें विषे स्थाई भावन की जो प्रमान सहत प्रमाता ताहि क्या जो हृदय में चेतन्य
ता है ता को भी अज्ञान ~~है जात~~ है ॥ तिस ~~के~~ अज्ञान ~~कर~~ के कवह प्रकास को प्राप्त हुया हुया ॥ फेर औरु के ज्ञान वे की जो पहचान तें तरह है तिस
जो स्वभाव है त हुया हुया ॥ फेर अप्रमान को प्राप्त हुया हुया जो ~~और सहत~~ नि को स्वभाव है ॥ ऐसे स्वभाव वारो जो ~~स्थाई भाव है ता को प्रमान ते रह~~ प्रमाता है सो साधारन रूप स्थाई को चर्वना करत है
सो च ~~न जो प्रथम जो है ते कर~~ ~~ता है~~ ॥ सोई यह प्रमाता जे स्व हृदय है तिन को जो भली प्रकार कथन है ताको कारन है ॥ साधारन रूप क्या
तामें विसेष संबंध को गहनन ही है ॥ कि यह रस फलानेको उपज्यो यह ज्ञान जहान ही है ऐसे रूप हुये हुये स्थाई को प्र वह
माता चर्वना करत है ॥ प्रस्न श्री गोविंद ॥ तुम ने कह्यो चर्वना करमि स्यो हुयो जो स्थाई है सो रस है ॥ सो चर्वना कर के तो स्थाई
होत है ~~जो रस है~~ स्वभावात्मक आत्मा तो न ही विसय ~~प्रम~~ है त ॥ तातें रस की भी अभिव्यक्ति न भई ॥ कौ रस के जनाय देन वारो तो आत्मा ही है ॥ विसय
जो तिसी की प्रगटता न भई तो रस की प्रगटता कैसे होयगी ॥ उत्तर अभिनवगुप्तपादाचार्य ॥ स्वयं प्रकास ज्ञान के पसु विषे अप
ने प्रकार के सहत जे पदारथ है तिनो विषे आत्मा मिल्याई हुयो है ॥ सो तिन पदारथों के प्रकास होनतें आत्मा भी प्रकास है
जात है जैसे एक घट है तिस ~~के~~ घट के आकार वारो कोन घट तिस विषे मिल्यो हुयो जो आत्मा है सो घट के प्रकास होनेतें
प्रकास है जात है ॥ ऐसे ई जे स्थाई भाव है तिन स्थाई भावन के स्वरूप वार कौन स्थाई भाव तिनो विषे मिल्यो हुयो जो आत्मा है ते
नो ~~तिन~~ स्थाई भावन प्रकास होन ही तें प्रकास है जात है ॥ औरु जो स्थाई भाव है तिस को एक चर्वना ही प्रान है या ही तें चर्वना क
रने ~~तें~~ स्थाई प्रकास होत है ॥ औ चर्वना के नष्ट भये तें ~~[illegible]~~ नष्ट है जात है ॥ औ स्थाई भावन के नष्ट भये फेर रस भी
स्थाई वे
प्रगटता सो मिले हुये र

७

आ है हालीयह रस विभावादिकनके जीवने की अवध लग अनित्य चर्वन भी है क्या जो लगताई विभावादिक जी
वत तौलग ताईं रस चर्वन करीयत है ॥ औ विभावादिकनके दूर भयेतें जद्यपि दूर भी ह्वै जात है परतौ भी पहलीयो तावां
सन मुख तो फुरतार हतां है ॥ औ पहलीयें तरां हृदय में प्रवेस होत है औ पहलीयें तरां सर्व अंगनको आलिंगन करत
है ॥ औ पहलीयें तरां औकस सर्व सुध जको दूर करतें है ॥ औ पहलीयें तरां ब्रह्मानंद के स्वाद को अर्क दावत कहत है ॥ औ ते
अलौकिक चमत्कार के करनवारो शृंगारादिक रस है ॥ प्रस्न ॥ श्रीगोविंद ॥ तुमने कह्यो स्थाई औ विभावादिक इनके संमूहको
मिल जानो सोई रसको [illegible] है यह तुमारो सिद्धांत लछन है सो जुक्त नहीं ॥ क्यों विभावादिक तो मिलत नहीं है भिन्न भि
न्न प्रतीत होत है ॥ उत्तर ॥ श्री अभिनवगुप्तपदाचार्य ॥ रस विषै विभावादिक पानक रस की न्याईं होत है ॥ जैसे पानक रस में कपूरादि
क मिले हूये दिखाई देत है ॥ भिन्न भिन्न नहीं दिखाई देत ॥ तिनको आस्वाद ही भिन्न भिन्न प्रतीत होत है ॥ ऐसे विभावा
दिक भी मिले हूये हैं रस में ॥ तिनो को आस्वाद भिन्न भिन्न प्रतीत होत है ॥ प्रस्न श्रीगोविंद ॥ विभावादिकनको औ रस को वि
चार अन्वै व्यतरेक है ॥ जिसके हूयेतें जो होय सो अन्वै ॥ जिसके अन हूयेतें जो न होय सो व्यतरेक ॥ सो जहां विभावादिक हो
त है तहां रस होत है ॥ जहां विभावादिक नहीं होत तहां रस नहीं होत ॥ यातें विभावादिकनको औ रसको अन्वै व्यतरेक है ॥
तिसतें यह रस कारज ही क्यों न होय ॥ उत्तर ॥ श्री अभिनवगुप्तपदाचार्य ॥ विभावादिकैं (नको) रसकैं नमित्त कारन है ॥ समवाय
कारन नहीं ॥ तौ भी रस कारज नहीं है ॥ जो समवाय कारन होय तौ रसको कारज कहीये ॥ प्रस्न श्रीगोविंद ॥ तुम कहत हो विभा
वादिकनके दूर भयेते भी रस दूर नहीं होत ॥ सो कैसे बनै ॥ विभावादिक तौ रसके नमित्त कारन है ॥ सो नमित्त कारनो के नास भयेतें

विभावादिकनको है

देषतिहै॥ यह प्रोषितपतिका॥ पुनः छंद॥ कहूं तीन पीआयसंकेतमे ग्यो॥ फिरीमाधवीमाधवींप्रममे ग्यो॥ कहूं स्यामपै माधवीन [illegible]
स्यामस्यैस्यामलीनिउढानी॥४५॥ वार्त्ता॥ कहूं तीजो है स्त्रीतानेसंकेतमैआयकेपीजोहैनायकसोनहीमेग्यो तासों मिलीनही तहांकषताको [illegible]
माधवीसराव औ माधवीदूतीजोवुलायकेल्याईथीतिनसोंप्रेमदूरकीयो यहविप्रलब्धा॥ कहूं स्यामाजोहैषोडसवरषकीस्त्री [illegible]
मकारीजोहैघपारातताम कैसेजातहै स्यामउढ्नीकोलीयेहुये॥ यह क्रस्नाभिसारका॥ पुनः छंद॥ कहूं स्वेतवस्त्रादिसोंकर्नकासों [illegible]
तज्यों चंद्रकाचंद्रकाज्यों॥ कहूं कामनीकंतफूलैहिंडोरे॥ कहूं पानन जो रै पियाको निहोरे॥४६ वार्त्ता॥ कहूं नायकास्वेतवस्त्रादिकेसहितमैं [illegible]
दूतीकेसहितचंद्रकाचांदनीमैं ऐसेजातहै कैसे चंद्रकाचांदनीकेसमान॥ यह सुकलाभिसारका॥ औ कहूं नायकानायकहिंडोरमैं [illegible]
कहूं नायकापियाकोहापजोरेहुयेमनावतहै॥ मूलदोहा॥ कुचदिषायपियपटकहूं ऐंचतभुजाउठाय॥ जलजआलतियपानगहि [illegible] तात
यासिरनाय॥४७॥ वार्त्ता॥ कहूं नायकाकुचोंकोदिषायकेऔ भु[illegible] कोउठायकेपियाकेपटकोएकहापसोंषैचतहै॥ औ वियकहितादूजे पानहाष
सोंजलजमोतियनकीमालाकोपकरकेऔसिरनायकेमांग[illegible]है॥ यहमालामेरे कंठमैंपायदैवो॥ यहसामान्या॥ मूलदोहा॥ विविधपदनिदंप
तकहूं मिलतमोदवहुपाय॥ त्रासत्रपातनविरहिअतिरसमैदेतवहाय॥[illegible] वार्त्ता॥ कहूं विविधअनेकप्रकारकेजेहैपदस्थानजनीसहेलीइत्यादि
केघरतिनमैदंपतिमिलतहै॥ वहुतआनंदकोपायके त्रासभयऔत्रपा[illegible] औ तनकोविरहि इनकोअत्यंतरसमैवहायदेतहै॥ रसपदमैस्लेषप्रेम
औजल[illegible]जदोहा॥ तिनमैतिनआवतदुरीचित्रफतरीपान॥ ज[illegible]गटावतहासतवपावतअलीसुजान॥४८ वार्त्ता॥ तिनचित्रनिमैचित्रफत
रीसमानजेहैतिकाहिमास्त्रीसोदुरीछपीहुईपानहाथमैनहीआवत॥ हसेतेजानीपरतहै सोजवउनकोहासप्रगटावतहै तवउनकोचतुरअली
पावतहै सोरठा॥ ज[illegible]चित्रक्रियाअ[illegible]वतषपिलषिवुधइमकहित॥ असकछुरच्योप्रभावचित्रअष्षगुनियनिवहुत॥५०॥ वार्त्ता॥ जद्यपचित्र
अष्षमैक्रियाकोअभावभीहै क्रियाइनमैनही परतौभीवुधजोहैपंडतसोदेषकेऐसेकहितहीहै॥ यहपियासोंसंभोगकरतहै यहआरसीदे
षतहै इत्यादि॥ ऐसोकछुप्रभावचित्रअष्षमैवहुतगुनीयोनेरच्योहै॥ मूलदोहा॥ यहसुचिरचनाकछुकमैवरनीमयविस्तार॥ अरुसवरसरचनारुच

8

८ रलषियतवहुतप्रकार॥५१ वार्त्ता॥ श्रृंगारकीरचनातोश्रौरभीवहुतहैवामै॥परमैविस्तारकेभयसोंयहरूचिश्रृंगारकीरचनाकछुककरनीहै श्ररुश्रौर
जेहैसरवरसतिनकीभीरचनाजहांवहुतप्रकारदेषियततहै ॥ वागवर्नन॥सालनीछंद॥मोहिहीकोश्रूपश्रारामनीको॥वोलेजामैकोकलाका
कलीको॥॥मानोरूरीजानश्रालीविचारै॥जाकेवैनामाननीमानटारै॥५२॥वार्त्ता॥श्रूपराजाकोजोहैनीकोसुंदरश्रारामवागसोहीहृदय
कोमोहततहै॥कैसोहै जामैकाकलीकोमलधुनिकोकोकलावोलतहै कोकलानही मानोरूरीसुंदरसषीहै जानचतुरश्रैसेविचारतहै
काहेते जाकेवचनमाननीनायकाकेमानकोदूरकरतहै कोकलाकेवचनउद्दीपनहै तिनतेमाननहीरहित॥श्रौसषीभीवचनोकरकेमानदूर
करतहै॥ चौपई॥कुसमधूरधूसरतविसाल॥गुंजतमंजुपुंजश्रलमाल॥पंचमभैरवपंचमसोर॥श्रौरनधुनिसुनियतचहुश्रोर॥५३वार्त्ता
कैसोवागहै॥कुसमजोहैफूलतिनोकोजोहैधूरपराग तिसकरकेधूसरतहैयायोहुयोहै श्रौपुंजसंवूह भ्रमरनिकीजोहैमालपंगतिसोज
हांमंजुमनोहरगुंजततहै यातेपंचमरागको।किंवापंचमनामासुरकोश्रौभैरवरागकोजहांपंचमसुंदरसोरहैरखोहै श्रौरधुनिकाननसों
नहीचारोतरफसुनियत॥ यहीधुनिसुनाइदितहै पंचमरागकिंवापंचमसुरकै याकोकोकिलावोलतहै भैरवरागकोभ्रमरवोलतहै॥
यहसंगीतसास्त्रमैकसोहै॥ पुनःमूल॥ पांडुरपुहपनपरश्रललसै॥इमलससंकाकविमनवसै॥विरहीर ... नजनुसरे॥ क...
सरकसतरकसभरे॥५४॥वार्त्ता॥पांडुरसपेदजोहैपुहपश्रूफूलतिनोपरभ्रमरवैठेसोभितहै तिनकोलषि...वनकेमनमैश्रैसीसंका
सतहै मानोमदनजोहैकामविसने विरहीजेहैवियोगीतिनकेहरनकोक्यामारनको षरेतीक्षन श्रौकरका...करडे श्रैसजोहैसरवाजेति
नोसोकसकरकेमलीभांतसोंतरकसभरेहै॥ पुहपतरकसतिनकेवीचमधुपसोसरहै॥सवैयाछंद॥पुनकेवराकुसमइमसोहतजनुकं...
करौतनवीन॥जोगिनहृदयविदारनकेहितप्रगटकियेरितुराजनवीन॥हुलसहुलसमाधवीलतावरलवटीनायकन...नेहै॥...
पररंभनसुषसंजुतमुकलतनहिजनुपुलकतश्रंग॥५५ वार्त्ता॥ फेरतिसवागमैकेवडाकेजोकुसमफूलसोश्रैसेसोभितुमकहते...
हैकामदेवताकेकरौतहैश्रारेहै कैसेहै नवीननयेतातकालकेवनेहुये किसानिमित्तश्रारेलिये... जोगिन... नोहैहृदयतिकारनोके...कहीये

नसुखपाव

चीरनकेहे तलियेहै कियेकिसनेहै रितुराजजोहैकें वसंत सो कामको मित्रहै। तिसनेप्रगटकियेहै॥ फेरकैसोवागहै॥ जहांमाधवीता
लतावेलसोहुलसरकेकृतजोहैग्रांवसोईभयेनायकतिनसोंलपटीहै कैसीसोभतहै तिनकेपररमनकोक्यामिलानिकोजोहैरूपताको
कलतनहैक्याविगसतनहीमानोग्रंगमैपुलकतहै पाधरीछंद॥ जिनमध्यप्रकासतमधुरगंध॥ लोलपदुरेफगनभ्रमतग्रंध॥
रिमुकलवकंपतरसाल॥ क्रीडतप्रमत्तकोकिलाजाल॥ पद वार्त्ता॥ जिनपुष्पनिविषैकिंवाग्रवनिविषैमधुमकरंदग्रौरूसुगंधसु
नप्रकासितहै तिनविषैलोलपचंचलजोहैदुरेकमधुपनिकेगनसंवूहसोग्रंधभयेभ्रमतहै तिनभ्रमरोंकरकेमुकलतविगसेहुयेजोहैरसालग्रांवतीके
पतहै फेरकैसेरसालहै जहांकोकलाजोपत्तीहैतिनकेजालसंवूहमत्तभये क्रीडतहै॥ मलपुन॥ मधुमुग्धवधूजनुलरतग्रैन॥ लखिवढतग्रंगविरही
ग्रचैन॥ इमलसततिधमंजुरीउपा॥ धन्वीमनोजकेमनहुरोप॥ पग॥ वार्त्ता॥ कोकिलानहीक्रीडत॥ मानोमधुजोहैवसंततिसकीजोहैमुग्धसुंदरकि
वामुग्धावधूस्त्रीसोलरतहै॥ तिनकोलपकेदेषकेविनहजोहैवियोगीतिनकेग्रंगमैग्रचैनवाढतहै व्याकुलताहोतहै फेरतिनकीतीधनमंजुरी
कीजोहैग्रोपउपमासोग्रैसेलसतहै॥ मानोधन्वीधनुषधारीजोहैमनोजकामदेवताकेरोपवानहै॥ कवित्त॥ तिलकग्रनूपराजेग्रधिकसुंदरसन
सोंकरुनाकलितकमलासनप्रकासहै॥ श्रीफलकुहायेपरसुषदहैसदागतरुचिरुचसमरसमधुपनिवासहै॥ मावतपरमहंसकुल
रसवारीवारतरवरनीकेद्विजग्रंवरविलासहै॥ राधाव्रजभूषनग्रनुगनृपभूषनकोवुधाधिततभूषनग्रनरामधामनासहै प॥ वार्त्ता॥ वुध
संवोधनहेवुधहेपंडत॥ श्रीराधाजीग्रौव्रजभूषनश्रीलालजीतिनोकोग्रनुगदासजोहैनृपभूषनराजपोमैभूषनग्रेष्ठराजा कौनसोश्रीफतेसिंह
किंवाश्रीराधालालजूकेदासोमैजोभूषनरूपक्यानीकोदासकौननृपराजाफतेसिंहतिसकोजोहैवागसोकैसोहै धितप्रध्वीकोभूसनहैमानो
फेरकैसोहै धामगरमीकोनासहैजहा॥ धामनहीजामै॥ सोजिनकोदासराजाहैसोराधालालजूकैसेहै कोऊसषीसषीसोंकाहितहै श्रीराधां
जीकैसीहै॥ तिलकनामतिलकोहै ईहाकपोलकोतिललीजे॥ सोग्रधिकवडोग्रनूपसुंदरराजतहै जिनकेसुंदरसनतोक्याभलेदरसनसों
क्यांदरसनगोनहै तिलस्यामहै यातेवडोसुंदरसोभितहै॥ ग्रौकरुनाकलित पाकोग्रर्थ कनामसुषको रु नामग्रौरको नानामनाहीको क

५

सुषश्रौरनाही सुरतारंभमेइनदोऊनकेसहितहै॥किंवानकारकेश्रकारकोजुदोकाढीयेकसुषके ऊकोअर्थश्रौरननामउसतिकोताके श्रौ
१ ग्रनामश्री क्रस्नकोइनसर्वकेसहितहै किंवायोंपदकीजै क ऊ न श्रा श्राकोयहअर्थभीहोतोहै श्राकहीयेयहजोराधाजीहै सोकैसीहै
सुषश्रऊस्तुतिकेसहितहै फेरकैसीहै कमलाजोहैसोभाताकोसनकहीयेमिल्योदुयोहैप्रकासजाको फेरकैसीहै श्रीफल ईहांरूपकाति
सयोक्तअलंकार श्रीफलउपमानतिनसोंसाध्यवसानालक्षनाकरिकेकुचउपमेयजानेपरतहै सोहैसुहायेसुंदरजाके श्रौपरश्रेष्टहै किंवा
तिनसोंराधाजुश्रेष्टहै किंवापरपक्षनिकोनाम सोपक्षशब्ददोयकोवाचकहै श्रयननयनकरपादपक्षइत्यादि परकहीयेदोयजोहैंश्रीफलोंसेकुच
सोसुंदरहै॥श्रौरु सुषदहैसदागत सदाजाकीगतजोहैचालसोसुषदसुषकेदैनवारीहै श्रर्थयहमनोहरहै फेरकैसीहै सुचिपवित्रहै श्रौरु
चसमनरस याकोअर्थ रुचजोहैकांतश्रोजाकीसमरसएकरसहैसदा॥श्रौमधुपजोहैभ्रमरसोजिनकेनिवासस्थानमेंहै अंगकीसुवासकेहे
तभ्रमरसंगलागेरहितहै किंवामधुपकोश्रौरुअर्थ मधुनामअंम्रतकोश्रौदूधकोभीहै ताकोजोपानकरेसोकहीयेमधुप श्रैसेकौनश्रीक्रस्न॥
अधरांम्रतकोभीपानकरतहै श्रौदूधकोभीपानकरतहै तिनकोश्रीराधाजूनिवासघरहै श्रीक्रस्नजामेवसतहै किंवाक्रस्नहीहैनिवासजि[illegible]क्या
श्रीक्रस्नजीकेचित्तमैवसतहै किंवातुककोयोंअर्थकीजै रुचसम संकहीयेश्राषोजोहै मचंद्रमापूर्नमासीकोताकेर मानहैरुचिकांताहानरु
किंवाउत्प्रेक्षालंकार॥मानोश्रेष्टचंद्रमांकीकांतहै चांदनीहै संकोसहूकहीये जैहसेयंकोसषकहितहै यंश्राकासकोकोनाम षचेरश्राकासगा
मीकोकहीये किंवासमकोसमाअर्थकेलीयेकीजे गुरुलघुलघुगुरहोतहैनिजइछाअनुसार॥श्रीराधाजीकैसेहै सुचिपवित्ररुचिहैजिनकी॥
श्रौसमाकोअर्थ मानामवुद्धकोताकेसहितहै श्रौ रसमधुपनिवासहै मधुपश्रीक्रस्नमेंजिनकेरसप्रेमकोनिवासघरहै॥अर्थयहजिनको[illegible]
क्रस्नमैहै किंवाश्रीक्रस्नकेप्रेमकोनिवासहै॥श्रीक्रस्नकोप्रेमजिनमैरहितहै॥फेरश्रीराधाजूकैसीहै॥भावतपरमहंसकुंजरसवारी
मजीवको र नामएकाक्षरकोसमैपवनको रजोहैपवनतिसने श्रीराधाजूकेविहारकरनहेतसवारीक्यावनाईजोहैकुंजसोजिनकेहं[illegible]
मश्रतिसयभावतहै॥किंवारनामभ्रमकोभीहै व्रजकीजोहैभ्रम कैसी॥जौनसीकुंजजोहैसघनवृक्षनिकेस्थानतिनोनेसवारीसो[illegible]कहीये

नकेजीवकोभावतहै॥ फेरकैसीहैश्रीराधांजी॥ वारतरवर॥ वारजोहैकेससोतरकहीयेअतिसय वरसुंदरहै॥ किंवावारवैसेहै तरहरूप [illegible]

सेनही याहीतेवरसुंदरहैं॥ औरुनीकेद्विज क्याभलेहैदिजदंतजिनके॥ अंबरवस्त्रतिनमैविलासहैजिनके॥ असैसीश्रीराधांजीहै॥ अबवाहीक [illegible]

अर्थश्रीहितरूपदहै कवित्त तिलकअनूपराजैअधिकसुदर्सनसोकरुनाकलितकमलासनप्रकासहै॥ श्रीफलसुहायेपरसुखदहैसदागतसु [illegible]

चिसमरसमधुपनिवासहै॥ भावतपरमहंसकुंजरसवारीवारतरवरनीकेदिजअंबरविलासहै॥ राधांतजभखनअनुगन पभषनकोबुधोयेत

भखनअरामघामनासहै॥ ॥श्रीहितसकैसेहै॥ अनूपजोहैसुंदरतिनकेतिलकहै इनतेसुंदरऔरनहीकोई॥ अधिककोअर्थ [illegible]कनामनिंदको

तिसतेरहितजोहोयसोकहीयेअधिक असैसोजोहैसुदर्सनचक्रतासोंराजतहै किंवातिलककोअर्थ तिखीतिनकेल कहीयेमिलाप [illegible]

जिनको अनेकब्रजदेवीनिसोंक्रीडाकरतहै॥ फेरअधिकनिंदारहितराजतहै फेरसुदर्सनचक्रकेसहितहै किंवातिलककेसानिको [illegible]

है॥ सोजिनकेअधिकसुंदरराजतहै औचक्रकेसहितहै॥ औकरुनादयातासोंकलतनुक्तहै॥ फेरकैसेहै॥ कमलासनजोहैब्रह्मातिसको। जनो

तेप्रकासहै॥ अर्थब्रह्माजिनतेउपज्योहै॥ फेरकैसेहै श्रीफलसुहाये श्रीजोहैलक्ष्मीताकेफलसोलाभसोंसुहायेहै क्षीरसागरसोंलक्ष्मीउ

पजीताकोपायकेसोभितभये॥ औपरकहीयेउत्तमकोनासेहु औअपनेभक्ततिनको सुखकोअर्थ सुकहीयेभलोवजोहैआकासजाकोपरमंगो

मकहितहै॥ ह्यांगनीजहांमुक्तिहोतहै॥ असैपरमव्योमकेदकोअर्थदानीहै सदासर्वदाजिनकीअसैसीगतक्यातरहिहै॥ फेरकैसेहै सुचि

रुचि क्यासुचिजोहै श्रृंगाररसतामैजिनकीरुचिचाहनाहै॥ समरकोअर्थ समनामसमकोभीहै रकोअर्थदैनवारो सर्वजोहैपदार्थ ध

र्मअर्थकाममोक्षतिनकोजोदेयसोसमरकहावै समरहै सर्ववस्तुकोदेतहै किंवासुचिश्रृंगारमैरुचिहै॥ औरुचिपददेहरीदीपक॥

समरकाममैजिनकीरुचिहै तरेकामकोउत्पत्तकीयो फेर समधुपनिवासहै याकोअर्थ मधुनामदुधकोताकोजोपानकरेसोकहीयेमधुप असै

कौनतुरतकेवछेरू तिनकेसहितहैनिवासस्थानजिनको किंवासकोअर्थकल्पानरूपहैंमधुपजेवछेरूहैतिनको॥ औतिनकेनिवासभीहै क्यों

वछेरू जिनकेचितमैवसतहैं याते किंवामधुनामजलकोताकोजेपानकरेंसोकहीयेमधुप असैकौनतपस्वीजोजलहीकोपानकररहतहै तिनकेसहितजो

नसुषपाव

है निवासस्थान अर्थ कि जिनस्थानोमै तपस्वीरहितहै तहांश्रीकृष्णदेवभी हैको अर्थ है क्यारहितेहै फेर श्रीकृष्णकैसेहै भावत परमहंस भावा
मक्रांतको कांतजामैरहैसो कहीये भावत हंसनाम सूर्यको जिनके तेजकरके सूर्यभगवानकांतिवानहै मेरोतेजरविमैंहै ऐसेंसु आपहरि
नेकह्योहै फेर कुंजरसवारीवान तनवरनीके द्विजअंवरविलासहै कुंजनिविषै रसवारी क्यारसप्रेमके सहित ऐसीजेहै वारक्यावालस्त्री रका
नलकारणवाहै फेरकैसीस्त्री तरवर अत्यंतसुंदरतिनोकेनीके जोहै द्विजअंबर अधरतिनमैजिनको विलासक्रीडाहै व्रजदेवीनिके अधरपान
करतहै॥ किंवा तरपद इतकोलगाईये करको वलकीजै स्त्रीके मध्यभागको नाम वलहै औलक्ष्मीको नामभीहै तरअत्यंतप्रेमवारीजोहैवालल
क्ष्मीसम किंवा तिनको जोहै मध्यभाग औ अधर तिनमै जिनको विलासहै ऐसे श्रीकृष्णहै औ श्रीकृष्णके अनुगदासकैसेहै ।।क अर्थवाहीकवित्तकोद
सनियै॥ कवित्त॥ तिलकअनकपराजै अधिकसुंदरसनसोंकरुनाकलतकमलासनप्रकासहै॥ श्रीफलसुहायेपरसुखदहै सदागतिसुचिरुचिसम.
रसमधुपनिवासहै॥ भावतपरमहंसकुंजरसवारीवारतरवरनीके द्विजअंवरविलासहै॥ राधाव्रजभूषनअनुगन्पभूषनकोवुधथितभूसनअराम
धामनासहै॥ वार्त्ता॥ भक्तकैसेहै तिलकजोहै चंदनादिकके तिनसोंअधिकराजतहै फेरसुंदरसन्मसों ईहांसुकोसोअर्थकीजे सोभक्तकेसेहै दरस्की
येषोरेससुषसोंनहीहै वडोसुषहै यहअर्थ किंवा दरनाम संषकोभीहै अधिकवडेजोहै दरसंषजिनके गंभीरशब्दहै तिनोसोहै सकल्पा
सोंहै नउसतिसोंहै॥ सर्वजिनकी उस्ततकरतहै करुनादयासोंकलितजुक्तहै कमलासनकोअर्थ कमलनामजलको श्रीकृष्णचंद्रके चरनो
कोजोहै जलचरनांवृतसोई जिनको असनभोजनहै औप्रकासप्रसिद्धहै सर्वजानतहै ।।श्रीकृष्णके भक्तहै फेरकैसेहै श्रीफलसुहायेपर श्रीनाम ॥
संपदाकोभीहै संपदाकेजोहै सुंदरफलसोजिनकोपरक्याऊपरेहै अर्थयहउनसोंपहिचाननही किंवाउनतेपरेहै क्यापरेहै सुषदहै सदागत गत
नामप्राप्तिको जिनकीप्राप्तिजोहै सोसदासुषदायकहै किंवा श्रीफलसंपदाकेजोहै फलसोजिनोने सुहायेको अर्थ सुभलीभांतसोंहायेदूरकीयेहै
कोपलकीजै उनकीपलकीजोप्राप्तिहै षटउस्वासकोनामपलहै इतनेचिरकीसंगतसर्वदासुषदायकहै पलपरसंगतकोसुषपायकेफेरचित्त
सदावाहीसुषमैलीनरहितहै सुचिरुचिसमरस सुचिपवित्र रुचिहै जिनकी समनामसमको सर्वसोंजिनकोरसहै प्रेमहै कारहै अर्थ कहीयेक

रनरूपपाव

मधुपसंतजन मधुधर्मकोनामताकोजोपानकरेसोम्कहीयेमधुप ऐसेसंतसोजिनोकेनिवासस्थानोमैहै संतनकीसंगतहैजिनको॥ किंवा
वासहै संतजिनकेहृदयमेवसतहै फेरकैसेहै भावतपरमहंसकुंजरसवारी परमहंसजोहैभगवानतिनकीजोहैरसवारीकुंज तजअमकाकाजे
नेकलीलाकरीहैसोजिनकोभावतहै वारतरवरनीके याकेचारपद वारत र वर नीके रनामाकात्तरकोसमैग्रन्थिको ईहांसाध्यवसानाल
करिकेग्रन्थिसमझोधलीजै तिसकोजोहैवरवलताकोवारतकोग्रर्थरोकतहै जिनोनेक्रोधकेवलकोजीतोहै याहीतेनीकेहै फेर द्विजहै दैजिनके
जन्मभयेहै प्रथमगर्भसो फेरसंस्कारकरके ग्रंवरविलासहै ग्रंवरनामग्रंवतकोभीहै ईहांलत्तनाकरकेग्रंवतसोग्रीक्लोसकोजसलीजै
तासोविलासकोग्रर्थविसेषलसैहै जसकोगानकरतेसोभापावतहै ग्रवतिनदासोविसेस्र दासग्रीकृष्णचंद्रकोजोराजापातेसिंहहै सोकैसोहै
राजापत्तग्रर्थ कवित्त॥ तिलकग्रनूपराजैग्रधिकसुदर्सनसौ करुनाकलितकमलासनप्रकासहै॥ ग्रीफलसुहायेपरसुसदहैसदागतसुचि
सुचिसमरसमधुपनिवासहै॥ भावतपरमहंसकुंजरसवारीवारतरवरनीकेद्विजग्रंवरविलासहै॥ रायाभ्रजभूषनग्रनुगनभूषनकोवुधधितभूषनग्र
मधामनासहै॥ वार्त्ता कैसोहैराजा तिलकनामरत्नोको ग्रनूपकहीयेसुन्दरक्यादोषनितेरहिताग्रैसेजोहैरतनतिनसोराजैहै मानिक मोती नीलमनि
मरकतहीरा॥ पांचमुख्यरतनहै पुष्पराग प्रवालइत्यादिउपरतनहै लसनीयाग्रादिमनी चौरासीजानहै इनकोविसेसनिरनयरतनपरीक्षाग्रं
थमेकीयोहै सौ ग्रधिकसुदरसनसौ सुकोग्रर्थ सोकीजे सोराजाकैसोहै जाकोदरजोहैदलसोसनजमहै क्याप्रतापवारोजाकोदलहै तासो
सर्वराजानिमेग्रधिकवडोसोभतहै॥ किंवाग्रधिकवडे सुकोग्रर्थ याके ग्रैसेजोहैदरसनक्यानेत्रतिनसोसोभितहै दरसननेत्रकोभीनामहै सोईहांद
तलीजै राजाकेनेत्रदूतहोतहै तिनसोराजतहै प्रमान॥ केसोदासदेसदेसग्ररिद रामदेवराजनिकेदेषवेकोदूतदृगदीनेहै॥ फेरराजाकैसोहै
करुनाकलित॥ करुनजोरसहै ताकरिकेग्रकलितहै॥ ग्रर्थयहकरुनरसकेर हितनही क्योंकरुनारसकोस्थाईसोकहै सोराजासदाग्रानंदरू
पहै सोकजामैनहींपाईयत यातेकरुनरसकेसहितनही किंवाकरुनाकलित पाकोयोंग्रर्थकीजै करुष रुकोग्रर्थग्रौरुनाजोहैमानुषतिनसो
कलितहै कमलासनप्रकासहै ग्रर्थ लक्ष्मीकेजोषजानेहैतिनकोनामकमलासनहै सोतिसराजाकेप्रकासहै प्रसिद्धहै सर्वराजाजानतहै इनकेदर्वकेषजानेवहुतहै ग्री
फलसुहाये ग्रीसोभाकोनामताकेफलसोलाभसोसुहायेहैसोभितभयेहै किंवासोभासोग्रौलाभसोसुहायेहै सर्वसोदंडलेतहै तवसोभावढतहै यातेसोभाग्रौफल

११ दोऊसोंक्तहायेहै॥ फेरकैसोहैराजा परसुखदहैसदागति सदागतिनामपवनकोभीहै परजोहैसत्रु तिनकोसुखदक्याॅसुखकेखंडनकरनवारेहैसदागतिवान
जिसके सुखदनामसाधकेखंडनवारेकोभीहै॥ रुचिरुचिसमरस रुचिनामरूपको रूपकीजोहैरुचिकांतिताकेसमानहैरसप्राक्रमजाको रसना
मप्राक्रमकोभीहै जैसेरूपकीकांतितेअंधकारदूरहोतहै ऐसेराजाकेप्राक्रमतेसत्रुदूरहोतहै फेरराजाकैसोहै अधरमधुकोपानकरतहै यातेमधुपहै
इहांमधुपकोअर्थरसकजानीये राजोमसिकहैयहअर्थ॥ फेरनिवासहै निनामनिश्चैकोभीहै निश्चैकोवासहैस्थानहै तामैनिश्चैरहितहै किंवारुचि
आदिपदनिकोऐसेअर्थकीजे रुचिरुचिसमर जिनकीरुचिचारुतारुचिश्रृंगाररसमैऐसेसमरकामदेवमैहै ऐसेमधुपनिवासहै मधुपरस
कजनतिनकेसहितनिवासहै निश्चैवासरहिनोहैजाको किंवासमरनामजुद्धकोभीहै समरजुद्धमैरुचिरूपसमजिसराजाकीरुचिकांतिहै समधुप क्या
मधुपदेवतातिनकेसहितहैनिवासमंदरजिसराजाके मंदरनिमैदेवतोंकेचित्रऔप्रतिमाहै किंवासकोअर्थ मंगलरूपआनंदरूपऐसेजोहैमधुपश्रीकृ
ष्णसोजाकेमंदरनिमैहै किंवाराजाहीश्रीकृष्णकोमंदरहै जाकेमनतनमेश्रीकृष्णवसतहै भावतपरमहंसकुंजरसवारी हंसनामवृंदनिको परमश्रे
ष्टजोहैहंसवृंदश्रीकृष्णकीलीलाकेसोजिनकोभावतहै वृंदनकोसुनतहै औवनावतभीहै किंवाहंसघोरेकोभीनामहै सुंदरऔचपलऔअदोषऐसे
घोरेजाकोभावतहै औकुंजरजोहैहाथीताकीसवारीजाकोभावतहै फेरराजाकैसोहै वारतरवरनीकेद्विज द्विजनामब्राह्मनको औक्षत्रीको औवै
स्यकोभीहै द्विजजोहैक्षत्रीराजा कैसेनीकेसुंदरसरूपहैजिनकेतिनोंकरकेवारजोहैदरवाजासोतरअत्यंतसुंदरहै क्षत्रीराजाजाकेवाररवैठेसोभितहै॥
किंवावरकोवलकीजै वलनामसैनाकोहै द्विजजोहैक्षत्रीराजाकैसेनीकेश्रेष्ठसुभट फेरकैसेतनवल अत्यंतहैवलसैनाजिनकीसोजिसराजाकेएकवार
समहै क्यारोमसमहै किंवाजिसराजाकोऐसेराजारोमसमहैतिनकोराजाकछुनहीगनता॥ फेरराजाकैसोहै अंवरविलासहै अंवरकोईस्त्रांधविसेषहोत
है वाकोमुसकंवरभीकहितहै जिसमैजिसराजाकोविलासहै आनंदहै विलासआनंदकोभीकहितहै अमुकावडेविलासभोगतहै यहकहिनावतहै बुध
संवोधन तातेवाहीकवित्तकोअर्थपंडतपैभीलागतहै क०॥ तिलकअनूपराजैअधिकसुंदरसदंनसौंकरुनाकलितकमलासनप्रकासहै॥ श्रीपालसुहायेप
दहैसदागतिरुचिरुचिसमरसमधुपनिवासहै भावतपरमहंसकुंजरसवारीवारतरवरनीकेद्विजअंवरविलासहै॥ राधावल्लभसनअनुगनपक्षनकोवुधधिर
रामधामनासहै॥ वार्त्ता॥ कैसोपंडतहै तिलकअनूप तिलकसोंअनूपसुंदरहै औराजैअधिकसुंदरसनसौं दरसननामषटसास्त्रको सुकहियेसोपंडतकैसोहै दरसंनसौ कहीये

स्वतिनसोंअधिकराजतहै॥ फेरककरुनादयातासोंजुतहै कमलासन याकेचारपद॥क॥ मल॥ आस॥ न॥ कनामकुतसितको मलनामपापकेजस्सपाव
हैपाप तिनकीआसाजाकोनकोअर्थनहीहै किंवापापकीजोहै कुत्सित आसासोजाकोनहीहै॥ प्रकासहै ईहांभी प्र पदजुदो क पदजुदो आस पदजुदो न पद
जुदो प्रकहीयेवडोजोहैकरुवकौनसोब्रह्मकोरूपताकेपायवेकीजाकोआसहै इथाहै॥ श्लेषमैजवलौदजोअर्थलगैतवलौ(काकनलगाईये
येपर॥ श्रीलछमीकेफलसोंसुहायेजोहैभगवानतामैपरकोअर्थ तत्पर हैलीनहै रूपदहैसदा पनामइंद्रियनकोभीहै सुभलीप्रकारपजोहैइंद्रैतिनकौ को
अर्थ संडनवारोहैसदा लछनाकरिकेइंद्रैजन्परूपकोसंडनवारोजानीये इंद्रीयनकोरोकतहै वसकरतहै यहअर्थ॥ फेरकैसोहै गतिरुचि गतिअ
र्थासोजाकीरुचिपवित्रहै रुचिसमरस समरसनामसांतरसकोतामैजाकीरुचिचाहनाहै किंवा मानोसांतरसकीरुचिकांतहै ऐसोलसतहै मा
नोमूर्तिमानसांतरसहै॥ औमधुपनिवासजोहैसंतनकेस्थानतिनमैभीजाकीरुचिहै भावतपरमहंस परमउतकृष्टजोहैहंसजीवजेसतसंगी
हैतिनकोभावतहै औकुंजरसवारीकोअर्थ कुंजरहाथीहैसवारीजाकीऐसोजोहैदेवराजइंद्रताकोभीभावतहै होमयज्ञादिकरकेइंद्र
कोप्रसन्नकरतहै किंवा इंद्रकेहंसजीवकोपरमनीकेभावतहै औ वारतरवरको अर्थ तरवरवृक्षहैवानरोमजाकेऐसीजोहैपृथ्वीतामैनी
केहै श्रेष्टहै औरुद्विजब्राह्मनजातहैजाकी किंवा नीकेश्रेष्टजोहैद्विजब्राह्मनतीनसोंजाकोवार अत्यंतवरहै सुंदरहै अंवरअंबततकेसमानजो
हैभगवानकोजसतामैजाकोविलासहै किंवाअंबतसेजोहैमधुरवैन तिनसोंविलासहै विसेषलसैहै यहअर्थ अवपृथ्वीकोभूषनजोराजा
कोवागहै सोकैसोहै वाहीकवित्तकोयछमअर्थवागपक्ष॥ कवित्त॥ तिलकअनूपराजेअधिकसुदर्सनसोंकरुनाकलितकमलासनप्रकास
है॥ श्रीफलसुहायेपरुरूपदहैसदागतरुचिरुचिसमरसमधुपनिवासहै भावतपरमहंसकुंजरसवारीवारतरवरनीकेद्विजअंबरविलास
है॥ राधांवजभूषनसजुगनपभूषनकोबुधघितभूषनअरामघामनासहै॥ वार्त्ता॥ कैसोवागहै तिलकवृक्षहै किंवाऔरहुवागहैतिनमैतिल
कसमहैक्याश्रेष्टहै औ अनूपसुंदरराजतहै अधिकवडोहै फेरसुदरसनफलहै जहां कोईवाकोस्थलकमलकहितहेतासोवागहै औकरुनावृ
क्षविसेषतासोंकलितजुतहै कमलासनकोअर्थ कमलहैजहां औआसनकोईवृक्षहैसोजहांहै औप्रकासप्रसिद्धहैसर्वठोरमै॥ किंवा कमल

१२ नततावकोभीनामहै ताकोजामैप्रकासहै सरोवरभीहैजहां फेरकैसोवागहै स्रीफलस्रहाये स्रीफलजोहैविल्वोंके[illegible] व्रक्षसोजहांस्रहायेसुंदरहै फेरकै
12 सोहै परउत्तमहै औरुसुखदहैसदागत अर्थसदागतनामपवनकोसोजहांसुखदहै सीतलमंदसुगंधतीनप्रकारकोपवनहै फेरवागइनकोनिवासघरहै कि
नको सुचिश्रृंगाररसको रुचिघाविको समरकामको सकोअर्थसुखको मधुपभौरनिको एसर्वजामैवसतहै किंवासमधुप भौरनकेसहितऐसोजो
वागसोसुचि इत्यादिकोनिवासहै किंवा सुचिरुचिसमरसमधुप याकोऔरअर्थकीजै समरकाम ईहांरूपकातिसयोक्तिअलंकार समरउपमानता
तेसाध्यवसानालक्षनाकरिकेराजाउपमेयजानीये कामदेवसोसुंदरऐसोजोहैराजाफतेसिंह कैसो सुचिरुचि श्रृंगाररसमैहैरुचिजाकी फेरकैसो
समधुपहै क्यामधुपजोहैरसकजनतिनकेसहितहै ऐसेराजाकोवहिवागनिवासस्थानहै राजातहांवसतहै भावतपरमहंस हंसपक्षीतिनको
परमभावतहै किंवाहंसजहांभावतसोभावानहै औरुजपक्षीभीहोतहै सोभीजहांहै औरसवारीकोअर्थ रसमकरंदताकेसहितजहांवारीवाडी
हैफूलनकी जुदोभीवाडीकोवर्ननकहेंगे औरवारतरवरनीके वारजोहैजलतासोंतरवरव्रक्षनीकेहै डहडहेहै फेरद्विजपक्षीअनेकजातके
हैजहां॥ कैसेपक्षीहै अंवरआकासमैजिनकोविलासहै पक्षीतहांपिंजरानमैभीहै यातेशोभितजिताये किंवावागकोअंवरमैविलासहै आकास
मैसोभितहै किंवा वारतरवरनीकेद्विजअंवरविलासहै॥ ऐसेअर्थकीजै वारनामभ्रमको वागकीजोहैवारभ्रमसोतरवरव्रक्षनिसोंआनीकेजोहै
द्विजपक्षीतिनसोंऔअंवरजोहैअंवततासोंविलासकोअर्थविसेषलसेहै सोभैहै अंवतसोसोभिवोअसंभवहै लक्षनाकरिअंवतसोसुंदरऔमधुरउ
ज्वलजोहैजलतासोंसोभैहै॥ चौपई॥ कुसमितकिंसुकपादपपांति॥ इमराजतमुकुरनिकीकांति॥ मानदुरदहरिसोनितसनी॥ समरजक्षनिहुरैजनुअनी
पस्य वार्त्ता॥ किंसुकढाककेजोहैपादपव्रक्षतिनकीभीपांतिपंगतीजहांकुसमितप्रफुल्लितहै॥ तिनोकीमुकरजेहैकलीतिनकीऐसीकांतिसोभित[illegible]जो
मानरूपीजोहैदुरदहाथीतिसकोहरकेक्यामारकेसोनितरुधिरतासेंभरीहै सोक्याहै समरकामदेवसोईभयोजक्षसिंहतिसकीमानोहु[illegible]
निहुरैहै नहधरैहै॥ चौपईयाछंद॥ दिगविजयहेतवरधूमकेतसनदियोमदनमधुमानो॥ कैमधुनरेसकेअरुनवेसकेतनेवसन[illegible]केतीय
गुल्मनीतरुनिसनअरुनानीजनुवनेवितानसुहाये॥ वोलतनकीरपंपरनिहहरनिकसचिवनमंत्रसुनाये॥ ६०॥ वार्त्ता॥ किंसुकन[illegible]

गन

12A

जोहैवसंततानेकामदेवकोदिगविजयकरनकेनमित्तधूमकेतअग्निकोवानदियोहै ॥ अपवामधुजोवसंतहैसोराजाहै ताकेअरूनलालवेस पनसखपाव
तंदूतनेहै ॥ औकहूंगुल्मनीजोहैवेलैसोतरूनसोंअरूमीहै सोमानोसुंदरवितानचंदोयेवनेहै तिनोमेकीरतोतेतिनकेगनसंदूहनहीं
मानोवसंतराजाकेजोहैसचिववजीरतिनोनेपरनसत्रुनिकेहरनकेजोमंत्रहैसोरूनायेहैं ॥ हाकलछंद ॥ ऋषदवसंतगंधवहजहां ॥ तिह
नमैवरनहुकहा ॥ ईखदविगसतमंजुलकरी ॥ तिनकीनवपरागजिहधरी ॥ ६१ ॥ हेरूवासजुतविहरतहहरे ॥ सगरोउपवनवासतकरे ॥ पुनकेतुकी
गंधसोंरल्यो ॥ याविधदिसदिसप्रसरतचल्यो ॥ ६२ वार्त्ता ॥ जिसवागमैवसंतरितुकोजोहै गंधवहपवनसोसुखदायकहै ॥ सोवरनवेमैनहीआवत ऐसो
अद्भुतहै ईखदकहीयेथोडीहैविगसीऐसीजोहैमंजुलउज्जलकरीकली तिनकीनवीनजोहैपरागरजसोजिसनेधारनकरीहै ॥ फेरसुवासके संजुतहैके
हरेमंदचलतहै तातेसंपूरनवागकोवासतसुगंधतकरतहै फेरकेतुकीकीसुगंधसोमिल्यो याप्रकारदिसादिसाकोप्रसरतोचल्यो ॥ ६२ ॥ वारमा
रकीधारकीरिसकरिहरहियेहेरा ॥ यहवयारवरमारके उपज्यावतचितफेर ॥ ६३ ॥ वार्त्ता ॥ हरशिवजीनेहेरकेदेखके औहियेमैरिसकोकरकेमारजो
हैकामताकीवारकेक्याजारवेथानवेहकीकोअर्थकरी ॥ ३ ॥ रयहजोहैश्रेष्ठवयारपवनसोफेरचित्तमैकामकोउपजावतहै पवनउद्दीपनयातेकामउपजत
है ध्वनियहकामकोजियावनवारोहै ॥ अरिल्लछंद ॥ परवनतामैमोहनभावत ॥ वहुतरुनीकेचित्तचुरावत ॥ गनकासंगअनंगवढावत ॥ पतिउपपतिव
यसिकछविपावत ॥ ६४ ॥ वार्त्ता ॥ कैसोवागहै ॥ परवनतामै ॥ परकहियेउत्तमहैवनघरतिसविवे ॥ ईहांकुंजभवनलीजैसंकेतस्थान ॥ फेरकुंजभवनके
सेहै मोहनहै क्यामोहदेहै औभावतहै भासोभाताकेसहितहै ॥ सोवागनहीमानोपतिनायकहै ॥ नायककैसोहै परवनताजोहैपराईस्त्रीतामैमोहस
नेहजाकोनहीभावतहै जासोंव्याहोहै ताहीसोंसनेहहै याहीतेपति ॥ फेरवागकैसोहै तरूजोहैव्रत्तनीकेश्रेष्ठसोजामैवहुतहै औचित्तकोचुरावतहै
सोवागनहीमानोउपपतिहै उपपतिकैसोहै वहुतजोहै तरूनीस्त्रीतिनकोचित्तकेचुरावतहै अनव्याहोजोपतिहोय सोउपपति फेरवागकैसोहै ॥
गनकाकहीयेचंवेलीताकेसंगहै औअनंगकामकोवढावतहै मानोवैसिकनायकहै वैसिककैसोहै गनकावेस्याताकेसंगकामकोवढावतहै गन
काकोपतिवैसिककहावे ॥ कवित्त ॥ ३ ॥ चारैराजहंसवहुवदनविदितलोककमलाकलितउरद्विजपदगायोहै ॥ अर्जुनअद्भुपरविमलउमा

13

केसंगअघवहुनाकपितअधिकसुहायोहै॥विकटपरनसुखपावतहैचक्रवहुधाचीसनमानऔकनकपविथायोहै॥पावनलुकेससोरमेससोमहेससो
सुरेसकेनरेससोधनीसोवागभायोहै॥४५॥वार्त्ता॥कैसोवागहै॥चाहैराजहंस॥राजहंसकोअर्थराज्योंविषैजोहैहंससूर्यसमकोनराजाकतेसिंह
सोतिसकोचाहतहै॥औवहुवदनविदितलोक॥वहुत्योंकेवदन[illegible]केकपकहिनेकरकेविदितप्रसिद्धहैलोककहीयेजसजाको॥किंवावहु
तलोकनिकेकहिनकरिकेविदितप्रसिद्धहै॥सोमानोलोकेसब्रह्मा[illegible]है॥ब्रह्माकैसोहै चाहेराजहंस॥राजहंसजोहैश्रेष्ठहंसताकोचाहतहै
हंसवाहनहैब्रह्माकोयाते॥औवहुवदनक्या वहुतहैवदनमुषजिस[illegible]॥ब्रह्माकेच[illegible]मुषहै॥औलोकजोहैजगतकिंवाचौदहिलोकतिनमेविदि
तप्रसिद्धहै॥फेरवागकैसोहै॥कमलाकलित॥कमलासोभातासोंकलि[illegible]युतहै[illegible]औअरद्विजपदगायोहै॥अरकहिपेवहुतजोहैद्विजपत्तीतिनको
पदस्थानगायोहै॥कसोहैवाग॥किंवावहुतपत्तीनिकीपदपालनाहैजहां॥किंवाय[illegible]रिज्ञाहैजहां॥पदनामरिज्ञाकोभीहै ऐसोवागगायोहै सोवा
गमानोरमेससोहै विस्नुसोहै॥विस्नुकैसेहै॥कमलाजोहैलछमीतासोंकलितकोअर्थसेवितहै॥लछमीजिनकीसेवाकरतहै॥अरद्विजपदापद
नामचरनकीनिसानीकोभीहै॥द्विजजोहैभृगुताकोजोहैपदचरनकोचिन्हसोजिनकेअरहृदयमैगायोहै वषान्योहै॥प्रमान॥छमावडनिकोउचितहै
नीचनिकोउतपात॥क्याश्रीपतिकोघटगयोजोभृगुमारीलात॥इति॥फेरकैसोवागहै॥अर्जुनअदूपर॥अर्जुननामाअद्रुवृक्षहैं कैसेपरउमहे किंवा
तिनोसोवागउत्तमहै॥औरुविमलउमाकेसंग उमानामअलसीकोहै॥विमलनिर्मलउज्वलजोहैउमाअलसीताकेसंगहै॥सोमानोमहेसशिवजीके
समहै॥शिवजीकैसेहै॥अर्जुनअद्रूपर॥अर्जुननामसपेदकोहै स्वेतजोहैअद्रिपहाडकैलासपर्वतताकेऊपरहै फेरविमलउमाकेसंग विवहीयनअ
होतहैमलपापजिसते ऐसीजोहैविमलगंगाजीऔउमापार्वतीजीताकेसंगहैसंयुक्तहै॥फेरवागकैसोहै अघवहु अघजोहैवहेडेकेवृक्षसेजहांव
हुतहै औनाकपित नाककोअर्थ कनामसुखकोअकनामदुखको नाकक्यानहीहैअकदुखकीपितस्थितजामे औअधिकसुहायोहै याते
वडोसोभितभयोहै सोमानोसुरेसइंद्रकेसमहै इंद्रकैसोहै अघवहु क्याअघजोहैनेत्रसोवहुतहैजाके औनाकजोस्वर्गतामैजाकीपितस्थि[illegible] औ
अधिकहै कनामसुखकोंधि[illegible]नामविषैको अधिकहै क्यासुखविषैहै॥ यातेसुहायोसुंदरहै फेरवागकैसोहै विकटपरन[illegible]
अ

13A

यातेनरेसराजासमहे राजाकेसोहे विकटपन्न
दरहैपरनपत्रजहां औरू सुखपावतहैचक्रवहु चक्रजोहैचकवेसोजहावहुतसुखकोपावतहे यातेनरेसराजासमहे राजाकेसोहे विकटपन्न
तहे विकटकहीयेभयानकजोहैपरसत्रुतिनकोसुकहीयेभलीभांतसोंसुखपावतहे नासकरतहे फेरराजाकेसोहे चक्रवहु चकनामसेनाकोव...
सेनाजाकी किंवाकाकुस्वरसोंअर्थ भयानकजोहैपरसत्रुतिनकोअघीभांतसोराजानहींसुखपावतसुखपावतहींहै औरूवहीअर्थ॥फेरवागकेसोहे॥
धात्रीसनमान धात्रीआउलेकेवृत्तहैजहां औसन सनीहै मानकोअर्थमानो औकनकघविधायोहे कनकधतूरा किंवा चंवेकोनामभीकन्हो
है सोजहांघविसोंधायोहे किंवावागचंवेकीघविसोंधायोहे यातेधनीसोहे धनीकेसोहे धात्रीसनमान धात्रीजोहैप्रथ्वीतामैजाकोसनमानआद
रहै औकनकजोहैस्वर्नताकीघविसोंधायोदुयोहै॥चौपई॥हरिहैसुरूअसोकदिवलोक॥धायसंगजनुवालविलोक॥सुवरनधरतसुकविथवि
देत॥रसिककोकनदचितसुखहेत॥६६ वार्त्ता॥वागकेसोहे हरिनामपपीहेको ताकोजहांसुरहे चात्रकवोलतहे फेरअसोकवृत्तविसेखसोभीज
हाहे॥ किंवासुकोअर्थसोवागकेसोहे पपीहेहैजहा ...अ...और असोकवृत्तहे सोमानोदिवसर्गहै सर्गकेसोहे हरिहै यहनामइंद्रकोहे औस
रकोनदेवतेतिनकेसमेतइंद्रहैजहां॥फेरस्वर्गकेसोहे॥असे.कवृयासोकतेरहितहे फेरवागकेसोहे धायसंग धायनामावृत्तहे कोईधावेकेवृत्तको
कहिहै ताकेसहितवागहे सोमानोवालहै क्यावालकहे वालकेसोहे ...असंग ...यनामाखिलावीकोताकेसंगहे विलोककोअर्थदोऊपत्तमेताक
हीदिखवो॥ फेरवागकेसोहे सुवरनधरति सुकहीयेनीकोहै औव ...वरनेकेवृत्त...हेतिनकोधारतहे सोवृत्तभीजहांहे किंवासुभलीजोहैवर
नसुकतिताकोधारतहै सोमानोकोईकविहै ...विकेसोहै॥सुवरन...हभलेअत्तर कोनसेरसकेअनुकूलअनुप्रासआदिकेतिनकोधरतकोअर्थ
गहनकरतहै फेरवागकेसोहे जहांकोकनामदादरकोभीहे तिनकेनदजोहैसब्दसोभीजहांहे फेरचितनामचैतन्यकोभीहे जेचैतन्यजीवहैतिन
कोसुखकोकारनहै किंधोकोईरसिकजनहै रसिककेसोहे कोकनदकोअर्थ कोकतोहैकामसास्त्रताकेजेहेनदशब्दसोजिसकेचित्तकोसुखके
कारनहे॥सुखदतहै॥ कवित्त॥मीठेवेनवरसतकरीखरीवीमेसेवेपगपकेरहैमैनपीपरनारंगीवन॥उतसवसदनवंधुजीवमुखदेखियत
वहुवेरकरिवीरनामलीनहीनघन॥सोहेरूपमंजुरीअमलसुमनाकेसालगुंजनिकीसीवनैनगहेव्रजरायसन॥मधुरसाचहेंओरसुखदप्र

14

१४ कासतहैत तनवनावसीग्रपरनाविचारमन॥६७ वार्त्ता॥ कैसोवागहै मीठे ग्रौवेनक्यावांसग्रौवरक्यावडोटे।जहांसतकोग्रर्घसैंकरोंहै॥ सतपदते
ग्रनंतजानीये सतसरहग्रशब्दग्रनंतवाचीहै॥ किंवावरकैसेहै सतकोग्रर्घग्रयहै किंवासतसंवोधनहैसतहैग्रेष्ठकैसोवागहै मीठेइत्यादिवृत्तहैजा
मै॥फेरवागकैसोहै करीघरी क्याकरीजोहै कलीसोजामैघनीवहुतहै॥ किंवाग्रेष्ठहै॥ ग्रौसेववाम क्यावामसुंदरहैसेवजामै फेरकैसोहै पपंगप
करैहैमैन॥ जामैग्रौरभीपगापजोहैवृत्तसोमैनकामदेवकोकरतहै सोग्रागेकहितहै वृत्तउद्दीपनहैइनतेकामवढतहै किंवासेवनिकेजोहैवाम
सुंदरपगापवृत्तसोकामकोवढावतहै। किंवाग्रौरतरहिग्रर्घकीजै मीठेहैं ग्रौवेनवांसहैजहां फेरकैसोहै वरसतकरीघरी क्याग्रेष्ठजो
कलीहैसोजामैवरसतहै वृत्तनितेकलीयानिकीवरषाजहांहोतहै किंवावरसुंदरमीठेहै ग्रौसुंदरवांसहै हरितवरनकेरूपेनहीहैसतहै
ग्रेष्ठ फेरकैसोहै सेव ग्रौ वामपगप शिववृत्तवटसोहैजहां॥ ग्रौरूपीपर ग्रौरू नारंगी ग्रौदनवृत्तभीकोईहै किंवानारंगीयांकेवनक्यानारं
गीयोकेवहुतवृत्तसोजहांमैनकामकोउपजावतहै॥ फेरकैसोहै॥ उतसवग्रानंदताकोसदनघरहै ग्रौवंधुजीवगुलदुपहिरीयासोभीहै इनसोंवाग
मुषदेषियत क्यासर्वजेहैवागतिनमैमुख्यग्रघग्रादिवाईदेतहै ग्रर्घयहग्रेष्ठहै ग्रौरूवेरनिकेवृत्तजहांवहुतहै किंवावहुपदइतकोलगाईये वहु
तजोहैवागतिनमैमुख्यदेषियतहै फेरजहावेरनिकेवृत्तहै ग्रौरूकनवीरकनेरकेवृत्तहै फेरकैसोहै नामलीनहीन क्यानहीहै ग्रमलीनकरकेही
न ग्रमलीवृत्तभीजहांहै तिनसोंघनकोग्रर्घसयनहै ग्रौमंजुरीजोहैसिटीतिसकरके ग्रौग्रमलनिर्मलजोहैरूमनामालतीतिसकरिकेजाकोस
पसोभितहै किंवारूपमंजुरीसदासुहणनिकोनामतिसकरिकेग्रौमालतीकरिकेसोहतिहै फेरसालवृत्तहै फेरवागकैसोहै गुंजजेहैरत्तकेतिनकी
सीवहै रत्तकेजहावहुतहोतहै तिनसोंनैननिकोगहहैपकरेहै ग्रौवृजरायसन क्यावृत्तकहीयेसंवहहरायसनहै रायसनवृत्तभीहोतहै फेरकैसोवागहै
मधुरसानामदाषकोसोजहांचहूंग्रौरचारोतरफरूषदायकोप्रकासतहै ग्रौरूतुतनिवनावक्यातुतजेवृत्तहैतिनकोभीजहांवनावहै ग्रर्घयहकनागीहैज
हां ग्रौग्रपरनानामग्रमरवेलकोहै ताकीभीसीसोभाजहांहै किंवाहेसुषदतुतनिकेवनावकीजोहैसीसोभासोचारुयोंतरफप्रकासतहै ग्रौग्रमर[illegible]
चित्तमैविचारग्रैसोवागहै॥ ग्रवइतोग्रर्घमाननीनायकाकोयामैसोनिकसतहै सषीकहितहै मीठेवेनवरसत वेपदकीग्रनैपीपद[illegible]

14A

नायकसोकैसेहै मीठेहै औनवको अर्थनवीनहै औ रसतकोअर्थरसकेसहितहै किंवारकारलकामएकहै रसतकोअर्थलसतहै सोभितहै [illegible]
वाम॥ हेवामस्त्रीतिनोनेतेरीषरीआर्थीसेवाकरीहै औरूपगपकरेहै क्यातेरेपगचरनउनोनेपकरेहै वैसेपकरेहै मेनजोहैसोमताकेसमहैके कोमल
हैके॥ किंवा मैनपीपरनारंगीवन मैनसमकोमलऐसेजोतेरेपीहैनायकतिनमैंतूपरकेक्यातपरहोयकेमिलकेनारंगीकोअर्थनहीरंगीक्यान
हीअनुरागजुक्तभई वनकेक्यासिंगारनिकोकरिके॥ तूंऐसीहै किंवातुककोयोअर्थकीजे सषीमनावतहै नायकारोससोंनाहीकरतहै तवसषी
कहितहै मीठेहैवेनवचनजिनके औवरसुंदरहै ऐसीजोहेवामस्त्रीसतक्यासेकरोतिनोनेतेरीकरीआर्थीसेवकरी सर्वमनायनही औरूपगप
करेहैमे॥ क्यामैभीतेरेचरनपकरेहै॥ नपीपरनारंगीवन तेरीजोहैनानाहीसोपीनायकसोमिलकेनहीरंगी नहीअनुरागजुक्तभई वनकेआर्थीओ
तसों अर्थयहरोसकीनाहीरही जैसेनाहीनाहीकरनोस्त्रीनिकोव्योहारहै ऐसीसनेहकीनाहीनभई यहअर्थ किंवायोंअर्थ मीठेवेनवरसत
क्यामीठेक्यचनजिनोतवनसतहैक्यामीठेक्यचनोकोजवोलतहै ऐसीजिहेवामस्त्रीतिनोनेतेरीआर्थीसेवाकरी औपगचर्नभीतेरेउनोनेपकरे पर
हैककोअर्थहैपहिइतनीवेनतीकरीतोभी मैनपीपरनारंगीवन परकहीयेउत्तमओमेनसमकोमलऐसोजोहेपीनायकतासोंतूंअनुराग
जुक्तनभई॥ वनकेश्रृंगारनिकोकरिके मानहीसोसनेहकीयो यहहैपाहै अधर [illegible]अंगुरीनायकेकहततहै किंवा हैयहआगेलगाईये मैन
समकोमलऔवरउत्तमऐसेजोतेनेदेगेपीअतिनसोंतूंअनुरागजुक्तनभई उत्सवसदन हेतियउतसवजोहैकोपसोसदकोअर्थअेघनरहीहै॥
यासोंदुष्यहोतहै औरू वंधुजीविमुषके षियत जीवनामचंद्रमाकोहै तेरोजोमुषहैसोजीवजोहैचंद्रमाताकोवंधुहै आरषीउपमाको
रिचंद्रमाकेसमजानीये ऐसोसुंदरमुषहैताको वहुवेरकरवारनामलीनहीनघन हेवीरहैवहनऐसेसुंदरमुषकोतेरोसविषैवहुवेरक्या
वहुतवारमलीननाकरि औहीननाकरि रोसविषैयामुषकीसोभाहीनहैजातहै वारवाररोसकरनोआधोनही पाकोत्यागहैघन हेकठेर सोहैरूप
मंजुरीअमलकमनावैसाल कमनानामप्रसन्नस्त्रीकोहै कमनाजेहैप्रसन्नस्त्रीजिनकोतेरेमानकीयेसोंप्रसन्नताहोतहै सोकोनतेरीसोतेवेके
सीहै रूपमंजुरीक्यारूपजोकोईपदार्थहैताकीमंजुरीकुसमहै वहुतसुंदरीहै यहअर्थ औअमलनिर्मलहै किंवारूपनामआप्तकोभीहै औसो

१। १५ दर्यकोभीहै औमंजुरीनामस्थूलमोतीकोभीहै अमलउज्जलजोहैमंजुरीवडेमोतीतिनसोंजिनकोरूपजोहैआकारसरीरसोसोहतहै क्यामो
15 तीयोंकेभूषनजिनकेपहिरेहुयेहै ऐसीजोहैसुमनाप्रसन्नस्त्री जिनकोमानदेषप्रसन्नतामईहै तिनकोतूंकैकोअर्थकनिसालक्यास्वरूप अर्थय
अहप्रीतमसोंमिलकेउनकोदुष्यदेहु कैसोदुष्यदेहु जिसदुष्यते गुजनि कीसीवनैनगहै गुंजजेहैरक्तवैतिनकेसमानवेसौतैवनैक्यावनिजाहि
किंवाउनकेमोतीगुजानिजैसेवनै औरु नगहैकोअर्थ न नामस्तुतिकोताकोगहैपकरै सर्वतेनीस्तुतिकरैसोतै किंवा तेनीस्तुतिसौतानिकोगहै
क्यागसै अर्थयहदुषीकरै तूंमानकोतज औ व्रजरायसन व्रजरायजोहैश्रीकृस्नतिनसौंसनकोअर्थमिल किंवानगहै यहआगेलगाई
ये नगहैव्रजरायसन व्रजरायजोश्रीकृस्नहैसोकैसेहै नगहैक्यारतनहै अर्थयहअमोलकहैंसुंदरहैतिनसोंतूंसनक्यामिल मधुरसाच
हूंऔरसुषदप्रकासितहै मधुनामवसंतकोसोरसाप्रथ्वीमेचारोतरफसुषदायकसोहतहै किंवामधुवसंतरितुसोंरसाप्रथ्वीचारोतरफतेसो
भतहै वृक्षादिकनिसों देषवृक्षादिकसर्वविगसतभयेहै तूंतनवनावसी क्यातूंभीतनसरीरकीसीसोभाकोवनावक्याश्रृंगारनिकोरचि औरु
अपरकरीयेऔरुवार्त्ताकोनाविचारमनमे यहीवार्त्ताकोविचार किंवा अपरनाविचारमन तेरीजोनाहैनाहीमेनायेसोंनमाननोयहनाही
सोअपरहै क्याअनुत्तमहै तूंयाकोमनमेविचार किंवाइसनाहीकोअनुत्तमविचारकेमनकोअर्थमान रोसकोत्याग॥ दोवैरधंद॥ नील
कंठनत्पतउपमाजिहउमावनीकीपरसै॥ रंभाजहांप्रभावतविलसतसचीवनीजनुदरसै॥ ६८ वार्त्ता॥ वागकैसोहै॥ जामैनीलकंठ
मोरसोनृत्पतकोअर्थनाचतहै पातेजिसवागकोउपमाउमापार्वतीकेवनकीपरसतहै प्राप्तहोतहै मानोपार्वतीजीकीवनीहै पार्व
वनीकैसीहै जामैनीलकंठजोहैश्रीशिवजीसोनाचतहै फेरवागकैसोहै रंभाजोहैकेलेसोजहांप्रभावतकोअर्थअत्यंतभावतहै ऐसीपाव
विसेवलसतहै मानोसचीजोहैइंद्रानीताकीवनीहै इंद्रानीकीवनीकैसीहै जहांप्रभावतकहीयेसोभावानरंभानामअप्सरा भांतियधैहै
सकरतहै तोमरधंद॥ सुषदेतजीवनभर॥ लषियेनजामहिसूर॥ चपलालसैचहुंकोद॥ जनुस्पामपीनपयोद॥ ६९ जामैनहीसू
हैजीवनिकोभरवहुतसुषदेतहै किंवा सुषनामनिंद्राकोभीहै ताकोदेतहै अर्थयहआरामदेतहै॥ सुषसोयवेमेनकीदु[illegible]अचि

15A

प्रेमाविकारेसु। पावन

जोहैसकलदुष्यसोनहीदेषियत फेरचपलानामसोभाकोभीहै सोजाकीचहुंकोदस्याचारोतरफलसतहै सोमानोस्यामऔपीनगाढसोव ६ घनजी
स्यामेघहै मेघकैसोहै जीवननामजलकोताकोजोहैभरसुषवस्यावडोसुषसोदेतहै किंवाजीपदजुदोकाढीये जीजोहैजीवतिनवोसुदाकाहीयैकैदु रीतेमहाव
देषसर्वप्रसन्नहोतहै औवनजलताकोदेतहै औरजेपरमसूक्षमकनीवरषतहै ताकोनामभरहै ताकोभीदेतहै फेरकैसोमेघहै जामैसुन्दुदोषकेघन
र्यसोनहीदिषाईदेत औरुचपलाजोहैवीजुनीसोजामैचास्योतरफचमकतहै ऐसोमेघहै जोस्यामपदकोजुदोकाढकेअ...नीयेमानोस्याम फेरवहुतस्री
पवागाढोमेघहे तौतीसरोअर्थश्रीनिवासपक्षभीलागतहै कैसेश्रीनिवासहै भरकहीयेवहुतजीवनिकोसुषदेतहै सुषकोअर्थसुकहीयेनीकोजोहै
षअर्काससजाकोपरमव्योमकहितहै ग्यानीजहांमुक्तहोतहै तिसकोश्रीनिवासदेतहै औजिनमैदुष्यनहीदेषियत आनंदसरूपहै औचपलाजोहैलक्ष्
मीसोजिनकेचास्योतरफलसतहै किंवालक्ष्मीसमजेहैगोपांगना सोजिनकेचास्योतरफलसतहै ऐसेश्रीनिवासहै यहभीअर्थहै॥ दोहा॥ सदासद
नवहुचोरकोभावतधनकोनिचित्त लषियतहैजहंअर्कतमऐसोउपवनमित्र॥१०॥ वार्त्ता॥ विरोधाभासअलंकार विरोधसोभासेविचारैविरोधनहीहोय
वहुचोरकोजोस्थानहोयसोधनकोजोहैधनीतिनकेचित्तकोकैसेभावे यहविरोध दूजोअविरोधअर्थ चोरनामसुगंधकोवहुतसुगंधकोघरहै औज
हांअर्कहैतहांतमनहीहोत अर्कसूर्यकोनाम सोतोअंधकारकोहरतहै अर्कतमकोकैसेयहविरोध दूजोअविरोधअर्थ अर्कनामआककोसोभीजहांहै
दोहा॥ भ्रमरनिहींभ्रमत्रिषतहरनपातफलफलपान॥ विरहीदुषआगमपवनसोकन्योंषिमहान॥११॥ वार्त्ता॥ कैसोवागहै भ्रमजहांभ्रमरनिहीकोहैऔर
कोनही॥ औत्रिषतप्यासोजहांहरनपपीहाहीहै औरनही औपातकहीयेगिरनाजहांफलफलपानपत्रइनहींकोहै औरकोनही औदुष्यजहांवियोगीही
कोहै औरकोनही औआगमजहांपवनहींकोहै औरकोनही औहानजहांसोकसौंषीमहींकीहै औरकीनही चामरछंद॥ मध्यचौंकसावकासएकसी
धरामली॥ आसपासहैप्रसूनवंतपादपावली वारिकीतरेतरेनचारुताकहीपरै॥ आयभूपनित्यनत्यकोतहांलस्योकरै॥१२॥ वार्त्ता॥ कैसोवागहैताके
मध्यचौकहै किंवामध्यकोजोचौकहैसोकैसोहै सावकासकोअर्थषुल्योहै तंगनही औएकसीवरोवरधराप्रथ्वीहै कहुंतेऊंचीनीचीनही औभली
पवित्रहै सुधाईनीहुई॥ पेरतिसचौकके आसपासच्याचारोतरफ प्रसूनवंतकहीयेफूलनिकेसहितजोहैपादपवृक्षतिनकीअवलीपंगतिहै तिसपे

१४ गतकेतरेतरेजोवारजलवरततहै तिसकीजोहैचारुतासुंदरतासोकहीनहीपरत अत्यंतरमनीयस्थानहै ऐसेचौकपरआयकेराजापतेसिंहनित्यप्रति
16 नृत्यकोदेख्योकरततहै॥ छप्पैछंद॥ पातुरपरमप्रवीनरुचिरनृत्यतनवीनतन॥ गतैविविधिलैकलतलेतअतिमोददेतमन॥ आतिसुरसुद्धरुविकृतग्राम
वतुअरछनासत॥ रागरागतियतनैसकलनिर्दोषप्रकासित॥ रसअंगनिकारिसरजातपुनभेददिखायप्रबंधके रचिरचिअनंततालनिकरतवसमान
सम्बंधके॥ ७३॥ वार्त्ता॥ परमप्रवीनचतुर औरुरुचिरसुंदर औनवीननयेहैंतननिनकेऐसीजोहैपातुरसोनृत्यतनाचतहै औविविधिअनेकप्रकारकीजे
हैगतेउडपतिरपइत्यादितिनकोलेतहै लयकलितकोअर्थलयकेसंयुक्तागतेलेतिहै गावनमैजहांतापहोयतहांहीद्रष्टहोय जहांद्रष्टतहांमनहोय
जहांमनहोयतहांभावहोय जहांभावहोयतहांलयहोतहै एलयकोयहसरूपहै औरदेवनकेयाभांतिसोंअत्यंतमोददेतहै फेरवाईसश्रुति सप्तसुरसुद्ध हा
दसविकृतसुर॥ तीनग्राम षिपंजामूरछना औराग रागनिकीतियरागनीयां॥ औरागनिकेतनैपुत्रइनसर्वकोनिर्दोषदोषनितेरहितप्रकासितहै गायनवि
द्याकेवाईसदोषहै संगीतदर्पनमैसर्वकहेहै फेररसकहीये घरहजोहै अंगप्रबंधकेतिनकरकेपांचजोहैजातभेदनीइत्यादिऔभेदतिनसर्वकोदिखाय
करके औअनंतवाहीयेवहुतजेहैताललतिनकोरचरचकरके मानसजोहैमनुष्यतिनकोआनंदप्रेमकेवसकरततहै किंवामानसमनकोप्रेमकेवसकरततहै दोहरा
करतघायसुषघायलनिभलततनमनप्रान वालनिकीतनुतानजनुपंचवानकोवान ॥७४ वार्त्ता॥ तनुकहीयेसरूपमजोहैवालनिकीतानसोमानोपंचवान
कामदेवकोवानहै कैसोहै घायलनिकोघाय औसुषदाऊकरतहै किंवाघायकरकेघायलनिकोसुषकरतहै औतनमनप्रानइनकोभलजातहै ऐसीतानहै
किंवाजिनतानिनिकोजोघायहैसोईघायलनिकोसुषकरततहै कवित्त॥ चारिदिसचारुकुमकुमावरषैनवारवाजतमृदंगनहिगाजतवषानिये॥ वालनिकीहि
ला पैदुतिवंदनगुलमैनचमकतचपलाप्रदोषघनजानिये॥ नीकीधुनिहोतनूपरनिकनिवोलैसिषीमोडरनजीगनउडतवहुमानिये॥ पावससेवागन
तवसंतपुनपावसमैनवलवसंतउरआनिये॥ ७५ वार्त्ता॥ याकवित्तमैवसंतरितुविषैतोवर्षारितुकोवर्ननहै औवर्षामैफेरवसंतकोवर्ननहै दोऊधैहै
पावसकेसमानजोराजाकोवागहैतामैवसंतविषैराजानेपावसरितुरचीहै प्रथमतापैअर्थ चारुसुंदरजोहैकुमकुमागुलावकोनीरसोचारोदिसहीव
षतहै यहतोमेघानितेवारजलवरषततहै औमृदंगैनहीवाजतहै सोमेघगाजततहैगर्जततहै औरुवंदनजोहैसिंधूरऔरुगुलालतामैवालस्त्रीजेरुचि

16A

पतहै यहक्याहै प्रदोषकेक्यासंध्यासमैवेजेहैंमेघतिनमैचपलावीजुरीचमकतहै ग्रौरूपरजेहैंमांजरातिनकीनीकीधुनिनहींहोतहै येसिषीजोरहैमोमनसोव ॰ऋकिकोरस्तु।पावन
रऋवरकनहीउडतहै येजीगनेपटवीजनेवहुतउडतहै याविधवसंतमैपावसरचीहै अवदूजोअर्थपावससमैवसंतरितुहोतहै यहनवलग्रद्भुतहै अर्थएकहीपैकैधुमाद ५धन्नी तैमहाव
भिन्नहै पावससमैवसंतवैसेहै मेघनितेवारजलनहीवरषत यहतोसुंदरचारोदिसामैकुमकुमावरषतहै ग्रौमेघगर्जतनहीहै यहीमृदंगेवाजतहै ग्रौप्रदोषकेघन
मैठौरठौरचपलानहीचमकत यहसिंधूरग्रौगुलालमैस्त्रीनिकीदुतिदिपतहै ग्रौमोरनहीवोलतहै यहउनकेनूपरनिकीनीकीधुनिहोतहै ग्रौरवहुतजी
गननहीउडतयहभोडरउडतहै ग्रैसेपावससमैवसंतदेषियतहै ईहांएकनकारकेवलतेदूजोअर्थहोतहै यातेनवलपदधरयोहै यामैद्वैहीअर्थनिकसतहै
एकअचरजको दूजोनकारकेवलतेपावससमैवसंतकोअर्थवनतहै दोहा॥ वुहपनवहुपादपतजतअमाइमदरसाय॥ ग्रानंदग्रांसूनिकोमनोधाइतहैसू
षपाय २६ वार्त्ता॥ वहुतवृक्षजहांफूलनिकोत्यागतहैतिनकीउपमाग्रैसेदिषाईदेतहै मानोराजाकीसभासोंसूषपायकेग्रानंदकेग्रांसूनिकोधाउतहैदोहा
ग्ररूनदसनदलतियनिकेलषिलषिलाजहिलेत॥ चितितलगुल्लालादलनिझरतजनुउरहिहेत॥ २७ वार्त्ता॥ ग्ररूनलालजोहैस्त्रीनिकेदसनदलग्रधर
तिनकोदेषरकेमानोलज्यावंतहोतहै याहीहेततेगुल्लालामानोग्रपनेपत्रनिकोत्र्पानेडारतहै मेरेपत्रइनकेग्रधरनिसमनहीयहीविचारकेगेरतहै
कावित्त॥ चटकग्रपारवलभुकनविराजतहैकलरवषंजनहरनमनमानीये॥ लालरंगरंजितसुगनदुमभंजतहैतीतरसुषदकिलकिलाजुतजानी
ये भावतहैसारसनयनहचकोरवरसारकानिकेरपदकलितपषानीये विविधविहंगनिसोंवागपतेसिंहरूपग्रालीहर्षहेतजगजुगपहिचानीये
२८ वार्त्ता॥ कोऊसषीसषीप्रतिकहितहै हेसषीविविधग्रनेकप्रकारकेजेहैविहंगपक्षीतिनकेसहितराजापतेसिंहकोवागहै जगतकेविषेदोऊहर्षग्रानंद
केहेतकारनहै एकतोवागदूजेपक्षी तिनैजितावतहै चटकचिडेसोंजामैग्रपारवहुतहै ग्रौवलभुकनग्रर्थवलभुकजोहैकाकसोजहांनहीहै काकनीचप
षीसोजामैप्रवेसहोनेनहीपावत मैरूविराजतहै विजोहैपषीराजतसोभतिहै कौनसे कलरवककूतरसोसोहतिहै ग्रौषंजनममोलसोहतिहै नाचत
है ग्रौहरनकुरंगहै ग्रैसोवागहै मनमैमानीयेनिश्चैकरीये जोकहोहरनपंषीनिमैक्योंकहे तौग्रैसेग्रर्थकीजे कलरवग्रौषंजनइनसोंवागहरन
मनमानीयेमनकोहरनवारोमानीयतहै पेरलालसूनयपषीहैजहां कैसेहै रंगकरिकेरंजतिरंगेहुयेहै ग्रौम्रगनपषीजहांवोलकरिकेदुषको

१२ 17

१४ भंजतदूरकरतहै किंवावागअगनिजोपंषीहैतिनकेदुषकोदूरकरतहै तीतरजोपंषीहैतिनकोसुषदायकहै औकिलकिलापंषीताकेसंजुतजानीयतहै औसा
रसपक्षीनिकोजोडाहोतहै सोजहांनेत्रनिकोभावतहैनीकेलागतहै सकहीयेऔरचकोरहैंजहां अरसुंदर औसारकानिकरपद निकरकरीयेसंव्रहव
हुतजोहै सारकापंषीतिनकीपदक्याधालनाहैजहां यारीतेतिनकरिकेकलितसेवतवागकहीयतहै किंवापदनामपावकीनिसानीकोहै वहुतजोसा
रकाहैतिनकेपदक्याचरनोकेजोचिन्हहैतिनसोंकलितजुक्तहै ऐसेपषीसोराजाकोवागदोऊआनंददायकहै जोऐसेअर्थकरीयेवागऔफतेसिंहरा
जादोऊआनंदकेकारनहैकरनवारेहै तौएकअर्थराजापक्षकीजे मानमीसोंसषीकोवेन राजाकैसोहै चटकजोहैचमत्कारसरूपकोसोजिनमैअ
पारवहुतहै औवलभुकनविराजतहै वलभुकनामदेवताकोताकेसमाननवनवीनराजतिसोभतहै किंवाकाकोकौवलभुकदेवतासेनहीविराज
तअर्थमरविराजतहै औकलरवक्याकलमनोहरकोमलजोहैरवशब्दजिनकोसाकेसोहै षंजनहरन षंजोहैमनजनमनुष्यनिकेतिनकेहरनवारोहै
तोकोतेमहामोहनहै यहवार्त्ताकोमनमैमानीये किंवाजननामपावसमैलुगाईकोहै जनजोहैस्त्रीतिनकेजोहैषंक्यामनतिनकेहरनवारोहै तूंइनसोंमनको
अर्थमान मानीये याकोअर्थ एसंवोधन एसषीकैसोराजाहै मानीहै मानीयहनायककोभेदहै एमानीनायकहै ऐसेकाहिकेअपउपजायो फेरकैसेहै
लालरंगरंजित सनेहकोलालरंगहै तासोंरंजितरंगेहुयेहै सनेहवानहै किंवालालहैं तेरेपतिहै औरंगजोहैप्रेमतासोंरंगेहुयेहै रंगनामप्रेमको
भीहै औअगनिजोहैविरहागनिताकेदुषकोदूरकरतहै उनविनातोकोविरहहोतहै मिलेसोंविरहदूरहोतहै फेरकैसेहै तीतरसुषद हेतीस्त्रीतोकोतर
क्यायुवतंतसुषकेदकोअर्पदैनवारेहै औकिलकिलाकोअर्थकिलनिऔकलाजोहैचतुराईकिंवाचौंसठकलातिनकेसहितहै फेरकैसेहै भावतहैसारससन
यनरुचकोनवर।। सारसकमलतिनकेसमानजोहैनेत्रतिनकीजोहैरुचिकांतसोभावतक्यासोभावानहै किंवाआपसोभावानहैनेत्रनिकीकांतसों कैसेसारस
नयनहै जिनकीकोरकोयेसोवरश्रेष्ठहै सुंदरहै फेरराजाकैसोहै सारकानामअप्सराको ईहांरूपकातिसयोक्तिसाध्यवसानालयनासोंअप्सरानसी
वालाजानीये तिनकेजोहैकरहापसोजिनकेपदपांयनिकोकलितक्याधोवतहै किंवाचांपतहै किंवातिनकोपदस्थानसानकानिसीतियनि[illegible]
लितजुक्तहै ऐसेराजाहैं मधुमारछंद।। वारीनिहार।। चितवढतमार।। रसवलितजान।। ललनासमान।। ७८।। वार्त्ता।। वारीजाहैवाटकात औचि

17A

नमैसुचिकरेसु। पावन

तमैमानकामदेववढतहै फेरनसजोहैमकरंदतासोंवलितघाईहुईहै सोललनास्त्रीकेसमानहै स्त्रीकोदेखेकामवढतहै रसप्रेमसोंवलितहै॥९ वार्त्ता
सोहतमहावरसोंहतउरजनजान कोमलपाननिउर्मिकाआननजाहिसमान॥७९ वार्त्ता॥ कैसीवारीहै पावनपवित्रसोहतहै अर्थयहउज्जलहै याहीतेमहाव
रअत्यंतसुंदरहै औउरकहीयेवहुतजोहैंजनमनुष्यतिनकोमोहतहैजानोयावातको फेरकैसीहै कोमलजलतासोंहै सजलहै यहअर्थ कोमलजलको
भीनामहै फेरजिसकेपानजोहैपत्रतिनमैउर्मिकाभंगनिकोनादहै भ्रमरजामैंगुंजतेहैं औजिसकेसमानवरोवरआननऔरनहीहै ऐसीसुंदरहै स्त्रीपक्षअर्थ
कैसीस्त्रीहै जिसकेपावनिचरनोमैमहावरजोहैलाखकोरंगसोसोहतहै औजाकेउरजननजोहैकुचसोजानजोहैचतुरनायकताकोमोहतहै किंवाउरजनकरके
मोहतहै औजाकेकोमलजोहैपानहाथतिनमैउर्मिकाअंगूठीहै औजाकोआननमुखसमानवरोवरहै नूनअधिकनही जैसोचाहीयेतैसोहै किंवासमा
नकोअर्थमानआदरताकेसहितमुखहै मुखसोंनायककोआदरकरतहै किंवा आननजाहिसमान॥जिसनायकाकीआनजोहैअदायवोलनकीहसनकी
चलनकीसोआनजेहैऔरस्त्रीतिनकेसमनहीहै वाकीआनअलौकिकहै॥दीपकचंद॥ तपजुतरहितनिकेत॥दिगपटपुहपसमेत॥सुचिसमदनिरतिहो
न॥जगजनलीननवीन॥८०॥ वार्त्ता॥वारीरूपस्त्रीकीअद्भुतलगतहै क्योंतपकेसहितहै सीतघामजलइत्यादिसहावतहै औनिकेतस्थानमैरहितहै यहअद्भुत॥
तपकरनो औघरमैरहिनो फेरदिगजोहैदिसासोईपटवस्त्रहै अर्थयहदिगंवरहै यहअद्भुत गृहमैरहिनोऔदिगंवररहिनो फेरपुहपफलनिकेस
हितहै यहअद्भुत दिगंवरहै पैफलनकोराषतहै फेरकैसीहै सुचिपवित्रहै न्यहअद्भुत पुहपनिसोंहै औपवित्रहै पुहपवतीस्त्रीपवित्रनहीहोत औमद
गर्वताकेसहितहै अपनेआपहीमैमगनरहितहै औरतिजोहैप्रीतितासोंहीननहीहै प्रीतजुतहै सवकेमनकोप्रसन्नकरतहै यहअद्भुत है मदवतीऔप्री
तकरतहै औजगतकेजोजनहैतिनसोंमिलीहुईहै औनवीननईहै यहअद्भुत जगतकेजनोसोंमिलेरहिनो औफेरनवीनरहिनो सिथलनहोनोहोत
अतिपतिभावतरमावतपुनविगसावतिचित्त॥ सौतिनपैअनुरागकोप्रगटावतहैनित्त॥८१ वार्त्ता॥ फेरवाटिकाकैसीहै पतिस्वामीराजाताकोअत्यंतभावतहै
यहअद्भुत जगतकेजनोसोंलीनऔपतिकोअत्यंतभावै फेरवहिवाटिकापतिकोरमावतिहै औतिनकेचित्तकोविगसावतप्रफुल्लितकरतहै अर्थयहसानंदकरतहै औअ
पनेपतिकोजोहैअनुरागसनेहसोसौतिनपैप्रगटावतहै वारीकीसुंदरतादेखयहचितचाहतहै जोऐसीयेऔरभीहोयतौभलीहै याप्रकारपतिकोसनेहसो

तनिपैप्रगटावतिहै यहअद्भुत आपभीपतिकोरमावनो औरुसौतिनपैभीपतिकेसनेहकोप्रगटावनो स्त्रीसौतकोनहीचाहत यहभाव चौपईछंद॥दरसनवरनसदाग
18 तिमीत॥करतधनकपरमानसप्रीत॥स्वकियाकिधोंपरकियादेख॥गनकाकिधोंवाटिकालेख॥८२॥वार्त्ता॥इनविसेषनोकरिकेस्वकीयानायकाहै किधोंपरकी
याहै अथवासामान्याहै किधोंवाटिकाहै॥स्वकीयाकैसीहै दरसनसरूपकीजोहैवरनस्तुतिलज्याकरिकेसीलकरिकेइत्यादि ऐसीस्तुतिकीजिसकोसदासर्वदाग
तिकहीयेप्राप्तहै सर्वज्ञाकेदेसनकीस्तुतकरततहै मीतसंबोधन किंवासदाकोअर्थसुखदायकजाकोतनकेसुखहोयऐसीजोहैजिसकेदरसनकीस्तुतिसोजिस
केमीतप्यारेकोप्राप्तिहै सर्वसोंजाकेरूपकीस्तुतिमनकेसुखहोतहै फेरकैसीहै धनकनामपतिकोभीहै परकहीयेउत्तमअदोषऐसोजोहैधनकआपनोपतितासों
मानसकहीयेमनकरिकेप्रीतकरततहै परकीयापक्ष कैसीपरकीयाहै दरसनवर क्यादरसनजोहैनेत्रसोजाकेवरसंदरहै कटाक्षनिकेसहितहै नेत्रनिकोनाम
भीदरसनहै औरसदासवकालमैजाकीगतिप्राप्तिनहीहै क्योंपरकीयाहै समैपायकेमिलतहै किंवाजाकीप्राप्तिसदाकहीयेमंगलदायकनहीहै परकीयाकेमिल
नमैसंकाभयइत्यादिरहितहै यातेमंगलदायकप्राप्तिनहीहै किंवाकाकोतासोंअर्थकीजे जाकीप्राप्तिमंगलदायकनहीहै अर्थयहमंगलदायकहै मिलेतेवि
हिदुखदूरहोतहै फेरकैसीहै परमानसकोअर्थ परायोजोहैमानसमनुष्य ताकीप्रीतसोंधनककहीयेपतिकरतहै गनकापक्ष कैसीगनकाहै दरसनवरषटसा
स्त्रकोनामदरसनहै तिनसोंजोहैवरश्रेष्टतिसकोजाकीगतिजोहैअवस्थाकिंवाचालसोसदासुखदायकनहीहै सासत्रजाकीअवस्थाकोनहीचाहत किंवादरसनजेहैषटदरसन ब्राह्मनजो
गीरसन्यासीदवेलव४जंगमपसरेवराद्ए षटदरसन योचारिवरन ब्राह्मन क्षत्री वैस सूद्र सर्वजाकीगतिअवस्थाकेमीतहै सर्वकोमोहतहै किंवादरसननामगननामैचारिकोभीहै
चारिजोहैवरनब्राह्मनआदितोजाकीअवस्थाकेमीतहैप्यारेहै सर्वजाकोचाहततहै कौनसीअवस्था सदासुखदायनीजोतरुनअवस्थाहै ताकेप्यारेहै किंवावरननामचारिकोहै
वरनकहीयेचारजोहैदरसन साक्षातदरसन चित्रदरसन स्वप्नदरसन श्रवनदरसन तिसकेचारदरसनमीतजोहैप्यारे तिनकोसकहीयेकल्पामरूपहै औदागतकहीयेजरा
वतभीहै जोप्राप्तिहोयमीतकोतोसुखरूपजोनप्राप्तिहोयतोविरहासोंजरावतहै फेरगनकाकैसीहै धनकाजोहैधनीतिनकेऊपर सप्रीत प्रीतकेसहितमानआदरकोक
श्री रतहै अर्थयहप्रीतऔआदरधनीसोंकरततहै ऊचनीचकोनियमनही वाटिकापक्षअर्थ वाटीकैसीहै सनपदकीअबैसर्वठौरहै दरक्यादलवन्नसोंता
केसनउत्तमहै नकारलकारातकहै फेरजाकोवरनरंगसोसनउत्तमहै औजाकोसदागतिजोहैपवनसोउत्तमहै वाटिकासोंमिलकेपवनसुगंधहातेपीता...भी वि

18A

नकजोहै धनवानतिनकेजोहैपरउत्तममनसोजिसवाटिकासौंप्रीतकरतहै त्रिभंगीछंद॥पुरचहुंदिससोहैसरगहमोहैहियद्रगरोहैरूपलसै॥जिनमैसचिकरेसु॥पावन
भगुनपरेमदपरसूरेभक्तिवसै॥हरिहरिहरहरघुनिराधाहरिघुनिहरासहरघुनिश्रवनपरै॥प्रगटतदिनसुषकेनिघटतदुषकेविकट वपुषकेकलुषटरै॥८३ वार्त्ता
राजाकोजोहैपुरनगरताकेचारोतरफसरगहजोहैदेवनिकेमंदरसोसोभतहै किंवादेवनिकेमंदरोंकरिकेपुरसोभितहै कैसेमंदरहै हियकोमोहतहै सुंदरहै॥
औद्रगनिमैरोहैक्याचढतहै नैननिमैवसतिहै यहअर्थ ऐसेजिनकेरूपलसतहै प्रकासितहै फेरमंदरकैसेहै जिनमैसचिपवित्र रूरेसुंदर औसुभभलेजो
हैगुनतिनसोंपूरन औमदजोहैगर्वतापरसूरेसुभट किंवामदरूपीपरसत्रुकेसुभटजीतनवारेऐसेभक्तवसतहै फेरकैसेहै हरिहरियहघुनि हरहरयहघुनिरा
धाहरियहघुनि हराहरयहघुनि जिनमंदरनिमैगयेसोंश्रवनकाननमैपरतहै अर्थयहसुनियतहै कैसीघुनिहै जाकेसुनेतेसुषकेदिनतोप्रगटतहै उदैहोतहै॥
औदुषकेदिननिघटतक्याघटतहै औवपुषसरीरकेजोहैविकटभयानककलुषपापसोदूरहोतहै॥ कवित्त॥मेटतअज्ञानकोअज्ञानकोतिमरतोममोदमति
वानिचकवानिकोवढावई॥यासमईदरसविभावरीहरतघोरतामरसमानससरसविगसावई॥भवसूयतारनिप्रकासकोप्रनासतहैलोयनदुरेफनिके
दुषनिघटावई॥भ्रमगनपेचकनिरोधकप्रवोधरविपावनपरमसंतप्रभाप्रगटावई॥८४ वार्त्ता॥संतनिकीजोहैपरमअत्यंतपावनपवित्रप्रभाविसेषसो
भासोप्रवोधकहीयेग्यानरूपीजोहैसूर्यताकोप्रगटावतहै ज्ञानरूपीसूर्यकैसोहै अज्ञानजोहै अग्यानीतिनकोजोहैअज्ञानसोईभयोतिमरअंधकारको
तोमसंदूहताकोमेटतहै औमतिवानजोहैवुद्धिमानज्ञानीसोईभयेचकवेतिनकोमोदआनंदकोवढावतहै फेरकैसोहै यासाजोहैपदारपनिकी
चाहनासोईभईदरसअमावसकीविभावरीक्यारात्रकैसीरात्रघोरभयानकताकोहरतहै औरुमानसजोहैमनसोईभयोतामरसकमलताकोसरसअधिकवि
गसावतहैप्रफुल्लतकरतहै फेरप्रवोधरविकैसोहै भवकहीयेजगतताकेजोहैसुषसोईभयेतारेतिनकेप्रकासकोप्रनासतदूरकरतहै औलोयनजो
हैनेत्रसोईभयेदुरेफभौरतिनकेदुषनिकोघटावतहै औभ्रमजोहैसंदेहसोईभयेपेचकउल्लूकतिनकोरोधकरोकनवारोहै ऐसेप्रवोधरवि
कोप्रगटावतहै भुजंगप्रयातछंद॥कहूंप्रेमपूरेधरैअघमाला रचैस्यामकेनामकीसषमाला॥कहूंकामकोत्यागऔकामनीको अचैआपऔरैअचा
वैअमीको॥८५ वार्त्ता॥कहूंसंतप्रेमसोंपूरनहुयेअघमालाजोहैरुद्राक्षकीमालातिनकोधारतहै औरुस्यामजोहैंश्रीकृष्णतिनकेनामकीजोहैसषपवि

१४ १८ नमालाताकोररैक्यारटतहै औ कहूं कामदेवको औ कामनी स्त्रीकोत्यागकरिके अमीजोरै अन्ततताकोंपीवतहै औ औरनिकोपियावतहै संतनिकोअंन्त
19 पाननहीसंभवै लज्जनाकरिकेहरिकोजसआवस्फुनतहै औरुनकोस्फुनावतहै पुनः छंद॥ कहूं कंदहै छंदसछंदचर्चा॥ कहूं वामकीनामकीहोतअर्चा
कहूं प्रेमहै लीननन्दै पैदिषावै वजावैस्फुगावैगुपालेरिमावै॥ ८६ वार्त्ता॥ कहूं कंदस्फुवदायक औ सुछंदस्वतंत्रकहूंकेअधीननहमैसेजोहै छंदवे
दतिनकीचर्चाहोततहै कहूं वामश्रीशिवजीकी औ श्रीरामजीकीअर्चापूजाहोतहै औ कहूं संतप्रेममैमिलकरिकेनृत्यकोदिषावतहै औ वाजंनवजाव
तहै औ गावतहै गोपालश्रीकृष्णतिनकोप्रसन्नकरतहै पुनः छंद॥ कहूं स्वांतकोतारकोधारजीतै॥ नमीतैअमीतैनप्रीतैअप्रीतै॥ कहूं सादरानंतसे
वाढरेहै॥ घनेआतमादास्यमानोधरेहै॥ ८७ वार्त्ता॥ कहूं तारजोहै ध्यानताकोधारकरिकेस्वांतजोमनहैताकोजीततहै वे कैसेहै नतोमित्रनहीहैका
हूके औ नाअमीतहीहै यातेतिनकीनतोकाहूसोंप्रीततहीहै औ नाअप्रीतहीहै सर्वपरसामानहै कहूं सादरक्यासहितआदरकेअनंतवहुतसेवामेढ
रेहै वहुतसेवाकरतहैभगवानकीयहअर्थ॥ सोकैसेहै॥ मानोदास्यरसनेघनेवहुतआतमासरीरधरेहै पुनः छंद॥ कहूं साकतीशक्तिकीभक्तिपूरे॥
सदाधामकेधामहैधामफूरे॥ कहूं जग्यकीवेदकाकोस्फुधारै॥ कहूं ज्ञानविज्ञाननीकेविचारै॥ ८८ वार्त्ता॥ कहूं साकतीजेहैशक्तिकेउपासक सोश
क्तिकीभक्तिकरिकेपूरनहै सदाजिनकेफूरेस्फुंदरजोहैधामसरीरसोधामजोहैतेजताकेधामघरहै कहूं संतजग्यकीवेदकाकोवनावतहै कहूं
ज्ञानकोऔविज्ञानकोविचारतहै दोहा॥ जगतमतंगकपोलजुगनर्कअनर्कस्फुत्याग॥ हरिपदपद्मनिमधुपसमकरतसकलअनुराग॥ ८९ वार्त्ता
जगतजोहैसंसारसोईभयोमतंगहस्ती औरुनर्कऔअनर्कजोहैस्वर्ग एईभयेजाकेदोयकपोलगंडस्थल तिनकोत्यागकरिके श्रीक्षासकेतोचरनहै
सोईभयेपद्मकमलतिनमैमधुपभौरनिकेसमअनुरागसनेहकरतहै॥ कवित्त॥ कुवलैनरतनधामरतनअमोलगुनरतनअनूपरतनाकरअनंतहै
भवरतनाकरमंजारअरविंदहरिहियेअरविंदमैमलिंदसेलसंतहै॥ अपलोकविपुलमलिंदनिकनकवागदीहविसेवागकेदहनतेजवंतहै॥ राजे
कोपदहनपिस्फुषकेसघनघनमोहध्यानवातअवदातसभसंतहै॥ ९०॥ वार्त्ता॥ कैसेसंतहै कुवलैजोहैभूमंडलसोईभयो आकरतनधामरतनोको
घरतामैतेोरतनहै औरुअमोलक्यामोलतेरहितअत्यंतश्रेष्ठजोहैगुनसोईभयेरतनकैसेअनूपस्फुंदर तिनकेरतनाकरसमुद्रहै कैसेहै अनंतजि

नकोअंतनहीहै किंवाअनेकसमुद्रहै फेरकैसेहै भवजोहैजगतसोईभयोरतनाकरसमुद्र ताभेअरविंदकमलहै उपजेजगतहीमैहै औरहितहैजगततेभि
न्न॥कमलभीजलमैउपजतहै औजलतेभिन्नरहितहै औरहरिजोहैश्रीकृस्नतिनकोजोहैहृदयसोईभयोअरविंदकमलताभेमलिंदभ्रमरसोसोभतहैऔ
औ विपुलकहीयेवहुतजोहैअपलोकअपजससोईभयेमलिंदभ्रमरतिनकोकनककहीयेचंपकतिनकेवागहै कनकनामचंपककोभीहै चंपकवा
गमैभ्रमरनहींवसत ऐसेईतिनमैअपजसनहीहै औदीरघवडेजोहैविसेसोईभयेवागतिनकोतेजवंतदहनअग्निहै। औकोपजोहै क्रोधसोईभयो
दहनअग्निताकोविपक्षअंवुकेसघनमेघहै औरुमोहरूपीजोहैघनमेघताकोवातपवनसमसर्वसंतहै फेरकैसेहै अवदातउज्जलहै ॥दोहरा
दयासंतसेवान्नपतिनिसदिनकरतअछेह॥वेअसीसनितदेतवे वंदतपदनिसनेह॥ २ वार्त्ता॥संतराजापरऐनदिनअछेहवहुतदयाकरतहै
औराजासंतनिकीसेवाकरतहै फेरवेसंतनित्यराजाकोअसीर्वाददेतहै ।राजातिनकेपांयनिकोसनेहक्यानेहकेसहितवंदतक्यानमस्कार
करतहै॥कवित्त॥त्रासतपरनिअपरनिकोविकासतहैआदमध्यअवसानभासतसमानहै॥काननविराजपोपुरआसपासवलयधरआन
नअनेकआननअंवुकअमानहै॥वलयवलयमुखमुखनिसमनिदीपतिहैहोतनाददीरघपतंगविनप्रानहै॥नत्रतखरोईनितनाहिभुजपा
नपगगावैकविकोटकित्तविदितजहानहै॥४॥वार्त्ता॥राजाकेनगरकोरनकवेसोहै परजोहैसत्रुतिनकोत्रासतभयमानकरतहै औअप
रक्याजोसत्रुनहीहै सोकोनअपनेमित्रतिनकोविकासतप्रफुल्लितकरतहै औ आदविषेमध्यविषेअवसानअंतविषे समान।एकहीसोभा
भासतहै तीन्योअवस्थामैसामानहीहै किंवाजाकोआदऔमध्यऔअंत।एकसमहै फेरकैसोहै काननकर्नसोनहीहै औपुरकेआसपास
वलयजोहैकुंडलतिनकोधरिकेसोभतिभयोहै यहअद्भुत काननहीकुंडलनिकोधारतहै॥औरुअनेकवहुतजाकेआननमुखहै आनकही
येऔरुअंवुकजोहैनेत्रसोभीअमानक्याअप्रमानहैअनंतहै।एक।एकमुखमैअनेकअनेकनेत्रहै फेरजाकेकुंडलकुंडलमैऔमुखमुखमैराज
कोअनेकमरोपप्रकासतहै फेरजाकेकुंडलरमैऔमुखरमैराजकोदीरघवडेशव्दहोतहै औजाकोपतंगजोहैसरीरतामैप्रानननहीहै यहअ
द्भुतप्राननहीऔशव्दहोतहै फेरकैसोनत्रकहै सदापुरकीरिछ्याघरोईक्याठाढोईकरतहै॥औपगऔपानहाथऔभुजा।जाकेनहीहै यहअ

२० द्भुत पायनविनाठोढरहिवो भुजहापानिविनारिछाकरनी औजाकी कित्तकीरतकोकोटिकरोडकविगावतहै वहुतकविजाकेजसकोगावतहै फेरकैसोहै वि
दितप्रसिद्धहैजहानजगतमै॥ कोटि॥ सर्वकालमैकिंवासर्वओरसों।।कहीसोहै॥ श्रवननही वुरजकुंड्ल द्वारमुष झरोषेनेत्र दीपकमणी माद
२० गज्ञकोहोतहीहै प्राननहीहै औपगपानभुज।।नही सर्वजानतहै वडोदुर्गमहै॥ पादाकुलछंद॥ पुरसुषवलितललितनरनारी जनुवहुम
नसिजरतितनधारी॥ पावनआश्रमवरनविराजै॥ निजनिजधर्मसहितसभसाजै॥ ५३॥ वार्त्ता॥ पुरनगरमैसुषसोंवलितछायेहुये औललितसुं
दरनरऔनारीहै कैसेहै मानोमनसिजजोहैकामऔरतिइनदुहूननेवहुतसरीरधारेहै फेरनगरकैसोहै पावनपवित्रआश्रमहै ब्रह्मचारी
गृहस्ती वानप्रस्त सन्यासी।।चारिआश्रमहै औचारिवरन ब्राह्मन क्षत्री वैस सूद्र।।जहांविराजतहै कैसेहै अपनेअपनेधर्मकेसहितसर्व
साजतहै॥ दुमलाछंद॥ हरिपदहरिपदवरअर्चवहुरघरकाजअपरहियमैआनै॥ पावनतनसूरेसभगुनपरेसाधुवनजपदसनमानै॥ वुधप
ढतपुराननसुषप्रदकाननवैठिअपाइनअतिसोभै॥ सुभज्ञानसुनावैमोदवढावैसुनसुनमनअपघनलोभै॥ ५४ वार्त्ता॥ नगरवासी
कैसेहै हरिपदजोहैहरिकेमंदरतिनविषैहरिश्रीलालकेपदपायनिकोप्रथमअर्चकरिकेक्यापजकरिकेफेरअपरऔरुजोकार्जहैघरके
तिनकोमनमैल्यावतहै फेरकैसेहै पावनपवित्रहैतनजिनके सूरेसुंदरहै औरसर्वजेगुनहैतिनकरकेपूरनहै औरुसाधनिकेजोवनजकमलस
मचरनहैतिनकोआदरकरतहै किंवातिनकोसनउत्तममानतहै फेरवुधजोपंडतहैसोपुराननिकोपढतहै कैसेपढतहै काननकोसुषप्रदसुष
दायकहै अपाईजोहैवैठकैतिनमैवैठकेअत्यंतसोभतहै औसुभकल्यानरूपजोहैज्ञानताकोसुनावतहै मोदआनंदकोवढावतहै जिन
कोज्ञानसुनरकेमनऔअपघनतनलोभायमानहोतहै॥ पद्धरीछंद॥ कविवरविद्याधरजहंलसंत॥ तरसकलकलाधरप्रभावंत॥ परस
जराजधरचारुवेष॥ नरपतिगनपतिहरसुरलेष॥ [illegible]॥ वुधमंगलगुरुगुनगनअगार॥ सुभधर्मराजमनमतिअपार॥ सेनापति
सुमनक्षत्ररूनवीन॥ सुरधुनीवामवरसोभलीन॥ ५६॥ वार्त्ता॥ कैसोनगरहै॥ जामैकाविकवीस्वरसोहतिहै औवरश्रेष्टविद्याधे
रहै॥ चौदहजोहैविद्यातिनकेधारनवारे जहांसोभितहै फेरसंपूरनजोहैकलाचौसठकलातिनकेधारनवारेतरअत्यंतप्रभासोभाकेरै

२०A

हतहैजामै किंवातरसढालकोनामहै सिषनषे तमकीतस्सकैतरुनीतुवतारहै॥ कलरूरमेंकिंवासंग्रामभैतरसढालकीजोहैकलाचतुराई
नेकघल्लसोंसत्रुकोसखवचावनो यहचतुराईताकेधारनवारेहैजहा फेरयरउत्तमपुरषकैसेहैजहा राज्योंकेजोहैराज्ञातिनकेसमजिनकेध
कहीयेसरीरोंकेचारुसुंदरवेषहै फेरनरपतिराजाजहांसोभितहै अनेकराजामिलवेकेलीयेजहांआयरहितहै औगनपतिक्यागनसंदरहतिनके
पतिजरूपपहेजहां हरघोरहैजहां सूरसूभटहै फेरनगरकैसोहै बुधपंडतहैजहा कैसेहै गुरकहीयेभारीजोहैमंगलऔगुनतिनकेजोहैगन
संदरहतिनकेअगारघरहै औराजाकेमनमैवहुतऔरूभआघीधर्मकीवुद्धहै किंवापंडतकैसेहै राजकेजेधर्महैतिनकीभलीवुद्धजिन
केमनमैवहुतहै सर्वराजकेधर्मजानतहै फेरजहांसेनापतिसेनाकेस्वामीसरदारहै किंवासेनाफौजहै औपतिप्रतिष्ठाहैजहा सर्वनग
रसोआवड्राईसहितसोहतहै औरूमनसजोहैपुष्पतिनसोंजहांतरुव्रक्षहैनवीननये फेरवामस्त्रीतहांकैसीहै सुरजेहैगायवेकेसरतइत्या
दिसाततिनकीधुनीतरंगनीहैमानो वरजोहैदूलहअपनेस्वामीतिनकीसोभासोंलीनहै किंवावरसुंदरहै ईहांसाब्दशक्तिमूलतातेवस्तुतेअ
लंकारव्यंग देवपुरीसोंऔराजाकेनगरउपमानोपमेयभावव्यंगहोतहै देवपुरीकैसीहै जहांकविसुक्रजीहै औरुश्रेष्ठजहांविद्याधरदेवताहै
विद्याधरयहदेत्यांकोएकभेदहै सोजहासोभतहै औरुजहांसकलक्याकलावंनिकेसहतकलाधरचंद्रमातरअत्यंतप्रभाकेसहतहै औरुधरउ
त्तमराजराजकुवेरसोजहासोभतहै नरअर्जुनताकेस्वामीश्रीक्रिष्णजहांहै गनपतिश्रीगनेसजीहै हरशिवजीहै सूरसूर्यभगवानहै वुद्धचंद्र
माकोपुत्रहै औमंगलहैजहा गुरुवृहस्पतिहै वैसेसमूहजोहैगुनतिनकेअगारघरहै औधर्मराजसूर्यकोपुत्रसोहैजहा सेनापतिस्वाम
कार्तिकजीहै औरूमनदेवतातिनकेतरुव्रक्ष कोनसे पारजात हरिचंदन मंदार संतान कल्पव्रक्ष एभीजहांहैनवीननये औरूसरधुनी
श्रीगंगाजीहैजहां औवामवरक्याश्रेष्ठजोहैवामस्त्रीअपसरारंभाआदिकातिनकीसोभासोंलीनहै किंवावामपदपाधेलगाईये वामसुंदरगं
गाजीहै फेरसोदेवपुरीकैसीहै भजोहैनषत्रवरश्रेष्ठकिंवा हेवरनषत्रजोहैतिनसोंलीनहै दोहरा॥ अमरनगरनरपतिनगरजे
नरपरमतिधाम॥ कहतकहावतअपरसोंस्यामनामअभिनाम॥ ९७॥ वार्त्ता॥ नरपतिराजाकोनगरकैसोहै औरुजो नगरहैतिन

१ अेअमरकोअर्थअमलहै रकारलकारसावीहै किंवा गरनामजडताकोहै नगरकोअर्थनहीहैगरजडताजामै ईहालछनाकरकेनगरकेवासीजेलो
गहैतिनमैजडतानही ऐसेजानीये किंवा अमरदेवतातिनकेनगरसमराजाकोनगरहै जेतिसनगरमैपरउत्तममतिकेधामघरहै लोग तेलोगकैसे
श्री। है सामकोजोहैअभिरामसुंदरनामसोआपकहितहै औरअपरजेहैऔरतिनतेकहावतहै आभीरछंद॥ललितजुगलदिसहाट॥चित्रतकलितकपा
ट॥सुधावलितअविदात॥छुधादलितदरसात॥९८॥वार्त्ता॥दोऊतरफललितसुंदर चित्रतक्याचित्रकारीसहितहै कपाटकिवारतिनसोकलि
तजुक्तहै किंवाचित्रतजोकपाटहैतिनकेजुक्तहै सुधाचूनातासोंवलितघाईहुईअवदातउज्जलहै छुधाभूषकोदूरकरतीहुईदेषीयतहै जिनको
देषकेभूषभाजतहै परमसुंदरहै यहअर्थ॥पादाकुलछंद॥तिनपरपरमउतंगअटाहै॥वातविवसधितसरदघटाहै॥सोभाहरगिरस्रंगनिकी
सी॥विपुलविभ्रमतविभूषतदीसी॥९९॥वार्त्ता॥तिनहाटनिपरपरमउतंगऊचीअटारीयाहै॥तेक्याहै॥मानोवातपवनकेवसहैकेसरदरितुकीयो
घटास्थितहै हरगिरकैलासतिसकेस्रंगनिसमजिनकीसोभाहै विपुलवहुतविभ्रमतसंपदातिसकरकेभूषितसोभायमानहै कैलासकेस्रंगभीसंपदाक
की रूभषितहै किंवाविभ्रमतमैस्लेषभीहै शिवजीकीधनीसोस्रंग संपदासोंअटाविभूषतहै चौवोलछंद॥देसपंजावसुदेसनिगमसरसुचिता
सुंदरताकघनो॥विगसेआपनिजलजावलिकेनपरविलषिदलनवलमनो॥१००वार्त्ता॥पंजावदेससोईसुदेससुंदरस्थानहै तामैनिगमक्या
नगरसोईसरहै तामैसुचितापवित्रताऔसुंदरतासोईककहीयेजलहै घनोवहुत आपनहाटसोईतामैजलजावलीकमलनिकीपंगतहै राजा
सोईरूपताकोदेषकेमानोतिसकेनवीनपत्रविगसेहैषिलेहै॥आभीर॥कीरतनृपतअनूप॥जनुधरविपुलसरूप॥भूषितकरनवषंड॥र
हीगगनवहुमंड॥१०१॥वार्त्ता॥विपुलवहुतसरूपधरकेआकासकोमंडरहीहै॥मालछनीछंद॥कुसलनिवहुवारीवुद्धिआलोकवारी॥गज
द्विजदुतिवारीसिल्पनीकीसवारी॥गुनगुनअसिवारीवामआरामवारी॥अनुदिनवामवारीसंकरैदानवारी॥१०२॥वार्त्ता॥वारीजिममैवो
लीहै॥वहुवारीक्याअनेकवारी॥कुसलजोहैचतुरतिनोनेजिनकोआलोककहीयेदेषकरिकेआपनीवुद्धिवारीकोअर्थवारदई उनकीरच
नापरमअद्भुतहै॥तिनकीवुद्धिमैनहीठहिरत॥यातेउनोनेअपनीवुद्धिवारदई॥अपवारचनाहीकेऊपरसौवुद्धिवारी क्योंचतुराईकीरचना

२१ए

कोदेवकेचतुरहीप्रसन्नहैकेआपनोसरवस्ववारतहै तौउनकोसर्वस्वकुछहीहै सोईवारदई अपवावारीकोअर्थरोकलईहटायलईअपनीकुछ॥
तिनकीरचनासीरचनाकरनमैअपनीकुछकोनहीवेचलावतभये यहअर्थ॥चतुरनिहीनेकुछकोवारनकीयोतोऔरकीकहागनती यहभाव
फेरवैसीहै गजहस्तीतिनकेद्विजदंतनिकीदुतिकोंततिसवारीहै क्यातकेसंयुक्तहै हस्तीकेदंतकीजिनमैरचनाहै ८ फेरवहिकांतकेसीहै सिल्प
जोहैतयानतिनोनेनीकीश्रेष्ठसवारीवनाईहै न्यूनताकहूंनहीदेखीयत॥असिक्याअैसीगुनगुनकहीयेतीनतीनजिनमेवारीहै॥ताकीहै॥फेरकै
सीहै आरामजोहैवागताकीजोहैवारीपुष्पवाडीतिनकेसमानवामसुंदरहै एभीवारीकहावतहै वेभीवारीकहीयतहै यातेउनकेसमहै अपवा
कोऊकहितहै गुनगुनक्यातंविचारविचारअैसीवारीहै वागकीवारीसमहै फेरकैसीहै वननामवनकोऔजलकोऔघरकोभीहै वनवा
रीकोनघरवारीगृहस्तीसोजिनमैअनुदिनक्यादिनदिनप्रतिसंभलीप्रकारदानकोकरतहै फेरवेगृहस्तीकैसेहै वारीहै वकारवकारए
कहै वनामनानाधर्ममैएकाक्षरकोसमैवरुणकोऔवायुकोऔमनकोभीहै वजोहैमन ताकेअरीक्यावीतनवारेहै जद्यपहैतोगृहस्तीपे
मनकेवसकरनवारेहै परमउत्तमहै यहअर्थ अपवातुवाकोऔरअर्थकीजे कैसीवारीहै जहांवनवारीश्रीप्राणचंद्रदिनदिनप्रतिकल्पान
कोकरतहै कैसेवनवारीहै दानवजोहैदैत्यतिनकेअरीसत्रुहै अर्थाविवडेवलवानऔसमर्थवानहै॥सोजहांकल्पानकरतहै॥अचलधृत॥
विगसतसरससमनसुंदरसन॥परमलगतिकरषतजनअनसन॥विमलपननपटसरवरतमनित॥विलसतमधुपद्विजपदप्रमुदि
त॥१०३॥वार्त्ता॥पहिलेछंदमेवारीवाटिकासमवननीहै चौथीतुककेदेअर्थकीयेहै एकगृहस्तीनिकेपक्ष एकश्रीप्राणचंद्रपक्ष अवइसछं
दमेस्पष्टकरकेजितावतहै वारीकैसीहै औवाटिकाकैसीहै गृहस्तीकैसेहै औश्रीप्राणचंद्रकैसेहै॥प्रथमवारीपक्ष कैसीहै जहासम
सजोहैभलेमनउत्तमलोगनिकेसोसरसअधिकविगसतहै प्रफुल्लतहोतहै विगस्तवोधर्मफलकोहैमनकोनही इहांविगसतकोअर्थआनं
दहोतहैप्रसन्नहोतहै यहलक्षनासोजानीये औसुकोअर्थसोकीजे फेरसोवारीकैसीहै दरसन क्यासनउत्तमहैदनकहीयेवारजिनके सो
यहएकवाचीहै औवारीवहुतहै पैईहांजातिविषैइकवचनहै सोअैसेकह्योहै दोहा॥जातिविषैइकवचनहैदेवहुआदरहेत॥दीजैवहुवाचवास

२२ तहांहरसवकोमतलेत॥ यातेजातिमैएकोवचनधस्यो अथवातिनकेसुंदरसनतेक्याभलेदरसनतेमनप्रफुल्लतहोतहै फेरकैसीहै परमलगति
क॥ कनामब्रह्माको आत्माको प्रकासको जलको सुषको औपवनकोभीहै कजोहैपवनसोजहांपरमअत्यंतलागतिहै अथवापरमश्रेष्ठलागति
२२ है परमपदतेसीतलमंदसुगंधत्रिविधलीजैसोलागतिहै फेरकैसीहै रसनामजलको औप्रेमको औश्रृंगारादिरसको औचमत्कारीसुस
कोभीहै जहांचमत्कारीसुषनहोयताकोनामअरस सोदुषजानीये रषतजनअरसन अर्थ रषतकोलषतकीजै रकारलकारएकहै जिन
मैजनमनुष्यअरसजोहैदुष्यतिनकोनहीलषतनहींदेषत सदातिनमैचमत्कारीसुषदेषियतहै फेरकैसीहै विमलनिर्मलहै वररनरंगति
नमै ऐसेहैपटकिवारजिनके फेरकैसीहै सुरवरतमनित॥ नित्यजिनमैवरतमनक्याअत्यंतश्रेष्ठसुरहोतहै अत्यंतश्रेष्ठकहेवेदनिकेसारली
जै वेदपाठजिनमैहोतहै अथवातिनमैसुरदेवतास्थापितकीयेहुयेहै सदादेवपूजनहोतहै औ वरतमनित अर्थ वरनामश्रेष्ठसुभटको
औदीपसिषाकोहै मनामसिरको चंद्रमाको ब्रह्माको छलको बुद्धको औलक्ष्मीकोभीहै वरतजोहैदीपसिषातिनकीमकहीयेलक्ष्मीसो
भासोजिनमैनित्यहै सर्वदाहै देवपूजनमैभी औनिसामैभी अथवावरकोवलकीजे रकारलकारएकहै सुरवलतमनित ऐसेपाठभयो सुरदे
वतातिनकीमसोभातासोंवलतघारेहुईहै अथवा वलनामभेटको दैत्यराजको स्त्रीको देवलको चर्मको सिषलवारीको औपूजाकोभीहै सु
रदेवतातिनकीजिनमैश्रेष्ठपूजाहोतहैसदा फेरकैसीहै विलसतमधुपरद्विजपदप्रमुदित अर्थ प्रमुदितप्रसन्नतासहितजोहैद्विजब्राह्मन
तिनकेजोहैपदचर्नतिनकोजोहैपरउत्तममधुक्याजलसोजहांविलसतक्याविसेषलसतहैप्रकासतहै अथवातिसजलकरिकेवानीप्रकासतहै॥
मधुनाम वसंतको चैत्रमासको मदराको पुष्परसको अंमृतको दुग्धको औजलकोभीहै ऐसेजानीये आनामवारीवागवाटिकापद्म॥ सुमन
सनामभलेमनको देवतांको वसंतको औफूलनिकोभीहै कैसीवारीहै सरसमकरंदसहितजोहैसुमनसफूलसोजामैविगसतप्रफुल्लतहोत
है फेरकैसीहै सुंदरसन सुभलेजोहैदरक्यादलपत्रतिनकेसहितहै अथवासुंदरसनपुष्पभीहोतहै जिनकोस्थलकमलकहितहै सो
भीजिनमैविगसतहै फेरकैसीहै परमलगति क्यापरमलसुगंधकीहैगतिजिनमैसुगंधसहितहै करषतजन अर्थ फेरकैसीहै जनमा

न कच्चा 22A

नुषतिकौंसुषरावतहै पुष्पनिकरि॥दलनिकरि सुगंधकरिसर्वकोसुषदेतहै फेरकैसीहै अरसन रसजलताहीसोंजोरहितहोयसोअरसकहावै औवा
रीअरसनही सजलहै औविमलउज्जलवरनहैजाको पटसुरवरतमनित सदाजाकोपटवस्त्रसुरवरतमआकासहै अथवा विमलउज्जलहै वरनप
ट अर्थ वरश्रेष्ठपटवस्त्रनहीहैजाकोकोईदिगंवरहै औ सुरव क्यासुभलेहैरवशब्दजामे पंषीनिके भौरनिके इत्यादि औरतमनित क्यारतिसंभोगके
मनितशब्दभीजामैहोतहै नाजाजिनमैविलासभोगतहै अथवा सुरजोहै सप्तसुर षरज रिषभ गंधार मध्यम पंचम धैवत निषाद एतिनमैवरतम
क्याअतिश्रेष्ठहै मोर चात्रक वकरा कूंज कोकल दादर मत्तगज एजीवइनसुरनिकोजहांवोलतहै क्रमसोंजानीये कोऊकहैवकराऔगजएजिनमैकैसे
वनै तहांकहीयेजिनमैराजेआनंदभोगतहै औउनहीकेप्रेमकरके औप्रतापकरिकेसोभायमानहै यातेसभहीजीववनतहै अथवाजिनमैगायकरागगावतहैसदा यातेस
प्रसुरजिनमैश्रेष्ठहै फेरकैसीहै विलसतमधुप रद्विजपदप्रमुदित अर्थमधुपजोहैभ्रमरसोजिनमैविलासकरतहै औनानापंषैरनामस्त्रिको औभ्रमकोभीहै॥
द्विजनामदंतनिको औतीनवननको औपंषीकोभीहै पदनामस्थानको रक्षाकोवउपाईको चर्नको गावनकेपदको औचर्नकीनिसानीकोभीहै तहाकीरजोहैभ्रम
सोद्विजजोहै पंषीतिनकेजोहैपदचर्नौकेचिन्हतिनसोंप्रमुदितहै क्याधाईहुईहै प्रमुदिताकोप्रफुल्लितभीभावामेवनजातहै औसेसमैजवलौदृजोअर्थवनेतवलौगाननलगा
यैचे कविप्रियाअरुनटीकामैषटरितुकेप्रकरनमैवर्षाकोकवित्त भीहैसुरचापचारु [illegible] जो हस्तीनिकेपद्म कैसेहै विगसतप्रफुल्लितहै सरसप्रेमसहितहै॥
सुमनभलेमनहैजिनके सुदरसनक्याभलेदरसनतिनकेसहितहै अथवा सुमनसवसंतदीन्याईसरसविगसतहै प्रफुल्लितहै सुदरसनकोअर्थ सुक्यासोगहस्ती
कैसेहै दरकहीयेथोडेससुषसंगलसोजिनकोनकोअर्पनही वहुतसुषहैयहअर्थ फेरकैसेहै परमलगति क्यामलजोहैपापतिनकेपरसत्रुहै धर्मात्माहै मै
सीजिनकीगतिअवस्थाहै अथवातरहहै अथवागतिक्यानष्टभयेहैपापरूपीसत्रुजिनके फेरकैसेहै करन घ तजन अरस न मजोहै इंद्रैतिनकोकानजोहै
दंड विषयनिमेअसत्तहोनातिसकेतजनमक्यात्यागनिमैजिनकोअरसक्याअलसआलसनकोअर्पनहीहै ताकेत्यागनमैउद्दमहै यहअर्थ अथवा व नामइंद्री
यतको रंध्रनिको नक्षत्रनिको औनभकोभीहै अआकासतातेसुन्यतालीजे सुन्यहैकरक्याहाथजिनकेअैसेकोनक्षपनतिनकेत्यागनमैजिनकोआलस

नहीहै ~~तकेत्यामनमैउदमहै~~ आपदानीहै उदारनिकेकरसरूपनहीहोत यथादोहा दानदेतजोंसोभयिदानरतनिकेहाथ॥दानसहतजोंराजहीमत्तगजनिकेमाथ॥ इति
२३ विमलवरन क्याविमलनिर्दोषहैवरनजिनके अर्थकिवरनसंकरहैनहीहै पटवस्त्रभीविमलहै सुथहै सुरदेवतातिनकेसमहै औ वरतमक्या तमअज्ञानताये
वर प्रबलहै अथवा सुरवरतमनित सुरवजोहैमलेशब्दजिनकेसोकैसेहै तमजोहैअंधकारअज्ञानको अथवाव्योहारनिकोताकोरकहीयेअग्निसमहै
दूरकरतहैयहअर्थ फेरकैसेहै विलसतक्याविलासकरतहै अनेकतरहिकेभोगभोगतहै औ मधुपनामसंतनिको भौरनिको औरसकनिकोभीहै र नामदैनवा
लेकोभीहै फेरकैसेहै मधुपरसकहै र कहीयेउदारहै औ द्विजपदहैजिनको चत्रीहैअैसेसर्वकहितहै प्रमुदित आनंदयुतहै अथवा मधुनामअंम्रतकोताको
जोपानकरेसोमधुप गृहस्तीनिकोअंम्रतपानकरवोअसंभवहै लक्षनाकरिअंम्रतदेसमजोनारायणकोजसताकोपानकरतहै अवनकनतहै ईहांप्रयोजनव
तीलक्षनलक्षनासाध्यवसानगौनीहै याविषमधुपहै यातेरअसमैविलसतक्याविसेषलसतहैसोभितहै आगेयहीअर्थ रपददेहरीदीपक अथवा मधुप
देवतातिनसमलसतहै औरवैसेई ...सपक्ष कैसेहै प्रथमछंदमै दानवारीविसेषनदीनोहै याहीते याछंदमै विगसततसरसरूमनअैसेकह्यो अर्थ॥
सुमनदेवतासोजिनकेबलकरिकेतेजकरिकेस्वरूपकरिकेअधिप्रफुल्लितहोतहै स सुदरसन क्यासुदनसनचक्रताकेसहितहै फेरकैसेहै परम क्यापरउ
तमजोहैमलक्ष्मीसोहैजिनमै हरिकेवक्षस्थालमैलक्ष्मीरहतहै यातेपरमहै औ ल नाम पवनको लक्षनको मिलापको सेयाको नमस्कारको औआ
नंदकोभीहै लआनंदतामैहैगतिजिनकी अथवाआनंदकीहैगतिजिनमै आनंदरूपहै फेरकैसेहै करषतजनअरसन अरसजोहैदुष्पतिनोतेअपने
जोहैजनभक्ततिनकोकरषतक्याखैंचतहै अथवाकाकोक्ति दुष्पनितेनहीकरषत करषतहीहै यहअर्थ फेरकैसेहै विमलवरनपद अर्थ विमलउ
ज्जलवरनकेहै पटवस्त्रजिनके अथवा वरननाम स्तुतिको विमलहैवरनस्तुतिजिनकी औपटरूपहै सर्वकोपउदाहै सर्वकीलज्जाराषतहै औ सुरव
रतमआकासकीन्याईअनंतहै व्यापकहै अथवावरनस्तुतिकोनसीपटवस्त्रनिकी जासमैगोपीयनिकेवस्त्रहरेहै तासैमैकीजिनकीस्तुतिकैसीश्रं
गारादिव्यंजकसोविमलउज्जलहै अथवा उज्जल सुचि (नामअंग्रगाररसकेहै इनहीकोपरयायविमलपदहै यातेविमलपदंभीश्रंगारकोबाचकहै

वासमैकीजिवीस्रुतिविमलकहीयेश्रृंगाररूपहै फेरकैसेहै स्रवरतमनिता रवजोहैशब्दकौनसेरतकेक्यासमेएकेमानितइत्यादिसोजिनकोसदा स्रा नहींवमलहै
23A स्रमहै जिनकेमनकोप्रियलागतहै फेरकैसेहै विसेषलसतहै ग्रौमधुपरक्यामधुदैत्यविसेषताकेपरसत्रुहै ग्रौद्विजपदहै द्विजपक्षीगरुड सोहैवदस्थानजि
नको ग्रथवामधुग्रंवततामैविलासकरतहै ईहांलक्षनाकरिकेग्रथरांवततीजै परउल्लास जोहैपक्षीगरुडसोजिनकोस्थानहै ग्रौप्रमुदितग्रानंदतिहै ग्रथवा
द्विजब्राह्मनभृगुजीतिनकोपदक्याचर्नचिन्ह ताकरिकेप्रसन्नहै भृगुजीकेपदप्रहारनातेरोसनहीकीनो उलटेग्रानंदितभये ग्रैसेसांतरूपहै ग्रथवाद्वि
जब्राह्मनसोजिनकेस्थानहै ग्रथवाब्राह्मनाकेस्थानहै मूल तोटकछंद॥ छविहैमधिजालपवित्रनिकी॥ रुरादिविचित्रचरित्रनिकी॥ सतविग्रह
धूपनिधूपितहै॥ उपमाकविराजनिरूपितहै॥ १०४॥ वार्त्ता॥ पवित्रनिर्मलजालरूरोषेतिनकीजिनमैसोभाहै ग्रौ रुनदेवता तिनकेजोहैचरित्रतिनके
जोहैविचित्रसुंदरचित्रतिनकीसोभाहैजिनमे रूननिकीलीलासर्वलिषीहुईहै फेरकैसीहै जिनकेसतक्याश्रेष्ठविग्रहसनीर सोश्रेष्ठजोहैधूपता
तासोंधूपितहै संजुतहै ग्रै जिनकीउपमाकविराजग्रैसेनिरूपतिक्यावर्नतहै मूल ग्रडिल्ल॥ परमहंसरविस्रुतिभवकारन॥ श्रीग्रनंतसजलजसद
वारन॥ मणिगणवरत्वषदेतविभूषित॥ विधहरिहरसाला निर्दूषित १०५॥ वार्त्ता॥ कैसीउपमाहै परमक्याउत्कृष्ट भक्तवंतग्रैसे हंसजीवहैजिनमै ग्रौस्रुतिवेद
निकेरविशब्दजिनमैभवकल्यानके कारनहै ग्रथवाजिनमैवेदनिकेशब्द हंसजीवनिकोपरमकल्यानकेकारनहै यातेमानोविधिब्रह्माताकीसालाहै॥
विधिसालाकैसीहै हंसपक्षीविसेष ताकेश्रेष्ठहैशब्दजहां ग्रौस्रुतिवेदतिनकेशब्दहैजहा ग्रौभवजगतकेकारनब्रह्माजीसोहैजहां ग्रथवा परम
जोहैभगवानहंसरूप हंसावतारतिनकेजोहैरविशब्द सोब्रह्माकेस्रुतिश्रवनतिनकोकल्यानकेकारनहै श्रीभागवतमैकथाहै सनकादिकोंनेब्रह्मा
सोंप्रश्नकीयो तबब्रह्माकोउत्तरनहीग्रायो तबब्रह्माकोभगवाननेहंसरूपधरकेग्रायकेउत्तरदीयो यातेभवकारनवचनहैतिनके फेरउपमाकैसीहै
सजलजजलजमोतीतिनकेसहितहै श्रीसोभाजिनकीग्रनंतहै सोभाजुतहै सदश्रेष्ठवारक्यादरजिनकेजुतहै यातेमानोहरिविस्नुताकीसालाहै वि
स्नुकीसालाकैसीहै जलजसंष श्रीलक्ष्मी ग्रनंतसेसनागजी॥ इनकेसहितहै ग्रौसदकारनक्यासदस्रायदायकहैवारनक्याहाथीको हस्तीकीग्राह
तेरक्षाकरीहैतिनोने ग्रैसेजोहैविस्नुतिनकेसहितहै फेरकैसीउपमाहै वरश्रेष्ठजोहैमणिगण मणीयोंकेसमूह तिनसों त्वषधर्मतासौ केतुध्वजातिनसों
विभूषतसोभायमानहै मानोशिवजीकीसालाहै शिवजीकीसालाकैसीहै मणिसर्पतिनकीमणि ग्रौ गणभृंगीजीगणादिक ग्रौ वरक्यावडवृषविसेष वृष

संततभजनसुखदप्रियवाला॥ सचीसदासं
२३ केतशिवजी इनसोंविभूषितहै सिंहावलोकनअर्थकीविधि॥ पादाकुलक छंद॥ समरसधरनिलसतरतिसाला॥संततभजनसुखदप्रियवाला॥ सचीसदासं
पतिसनसोहै॥ जनुहरररससालामनमोहै॥ १०धीवार्त्ता फेरउपमाकैसीहै॥ धरनिकोनकारदीर्घकोलघुहै छंदकेलीये धरनीपडेछंदभंगहोतहै या
२५ तेधरनीकोधरनिपढ्यो अथवा गुरलघुलघुगुरहोतहै निजइछाअनुसार॥ निकारलघुकोदीर्घकीजै॥ समरसधरनीहै समनामबरोबरको औसमकोभीहै स
मरसजोहै षटरसतिनकीधरनवारीहै सर्वरसजिनमैपाईयतहै अथवा समरसक्यासांतरसताकीधरनवारीहै अथवा समकहीयेबरोबररसआनंदहैजिनमै॥
सर्वविषैयाकेसोआनंदहै न्यूनकोईनही यातेसमरसधरनीहै मानोरतिकीसालालसतहै रतिसालाकैसीहै समरसधरनिलसत जामैसधरनिकहीयेसोभा
केसहतसमरकामलसतहै फेरकैसीहै संततभजनसुखदप्रिय सुखदायकजोभजनश्रीलक्ष्मणचंद्रको सोजिनकोसंततनिरंतरप्रियहै सर्वलोगनिकोप्रेमभजनमैहै
अथवासुखनाममुक्तकोताकोजोदेयसोसुखद अथवासुख जोअकास जाकोपरमव्योमकहतहै ज्ञानीजहांमुक्तहोतहै तौकौंदेयसोसुखदवाहावे सोकौनश्री
लक्ष्मणचंद्रतिनकोभजननिरंतरजिनकैप्रियहै लक्षनाकरिकेतिनमैजेलोगहैउनकोप्रियजानीये मानोवालाहै वालाकैसीहै सुखदतायकतातेभजनक्याभाज
नोअंकमैनआवनोसेज्यापैनआवनो यहजाकोनिरंतरप्रियहै यातेमुग्धाजानीये जोऐसेअर्थकीजै जिसवालाकोनिरंतरक्याअंतररतेरहतभजनकही
पेअंगीकारकरनो सोसुखदनायककोप्रियहै अभिप्राययहनायकतोवासौंनिरंतरमिल्योचाहतहै औनायकाअंतरसहतमिलतहै याहीतेनायकौ
कोप्रेमनिरंतरमिलनमैहै यातेमध्या मिलनतेकामजान्यो अंतररापनतेलाजजानीये अथवाजाकोभाजनोभीप्रियहै औनायकभीप्रियहै ईहांभीलाज
कामतेमध्याजानीये जोऐसेअर्थकीजै सुखदनायककोभजनक्याअंगीकारकरनोजिसवालाकोनिरंतरसुखदहै अंतरसौंसुखदनही यातेप्रौ
ढाजानीये जोऐसेकहीये सुखदनायककोभजनयादकरनोसोजाकोनिरंतरप्रियहै पतिहीकोदेवताजानभजनकरतहै यातेस्वकीया जोयाविध
अर्थकीजै प्रियप्यारेकोनिरंतरअंगीकारकरनो जाकोसुखदहैसुखकेदूरकरनवारोहै॥ जोसुखकोछेदनकरेताकोभीसुखदकहीये॥ अंत
रसौंमित्रकोअंगीकारकरेतोकैरै निरंतरअंगीकारकरवोनहीवनत यातेपरकीया जो योंअर्थकीजे जाकीभकहीयेप्रभाकांतिजनमनुष्यनिकोनिरंतरसुख
दहैऔप्रियहै यातेसामान्यावनताजानियतहै फेरकैसीउपमाहै सचीसदासंपतिसनसोहै अर्थ जिनमैसदासंपतिसचीकोअर्थसंचीहै जोकि
तेजातेसम

24A

याहीतेसनउत्तमसोभितहै॥ मघवाउत्तमसंपदाजिनमैसंचीदुईसोभितहै मानोहरजोहैइंद्रताकीरसप्रेमकीसालाहै इंद्रसालाकैसीहै जामै
कहीयेस्रवदायनीजोहैसचीइंद्रानीसोसंकहीयेकल्पानरूपीजोहैपतिइंद्रताकेसहितसोहतहै मघवासंभलीप्रकारपतिप्रतिष्ठातासोंसं
तिहै ईहांशब्दसाम्यताश्लेषहै भावसाम्यताश्लेषनही॥ अडिल्ल॥ दिवसरूपछायासननराजत॥ विबुधनिद्विजराजनिकरिभ्राजत॥ जा
चकमनभावतसोपावत॥ जनुसुरतरुसोदरीप्रभावत॥ १०७ वार्ता॥ फेरउपमाकैसीहै दिवसदिनमैजिनकोसरूपछायाजोहैकांतिता
केसनवधासहितराजतिहै फेरकैसीहै विबुधपंडत मघवाविसेसजोहैबुधकविनाम मघवाविनामपक्षीकोतिनमैजोहैबुधपंडतपा
नीकोनसुकइत्यादितिनोकरिके औराजनिकेसमजोहैद्विजपक्षीतिनोकरिकेभ्राजतवधासोभितहै मघवाविवधानष्टहैबुधपान
जिनमैऐसेजोहैवालकद्विजतीनवर्नकेतिनकीजोहैराजनिपंगतांतिनोकरिकेसोभतहै संततभीसंपतभीदोउहैजिनमे मघवाविबुध
वालकनिकरिकेऔद्विजतीनवर्नोकरिकेराजनिसिनदानोकरिकेसोभतहै औजिनतेजाचकजोमनमैभावतहैसोईपावतहैमानो
सुरतरुजोहैकल्पवृक्षतिनकीसोदरीहै सुरतरुकैसोहैदिवसरूपछायासननराजत॥ दिवजोहैस्वर्गतामेजाकेसरूपकीछाया
सनउत्तमराजतहै फेरकैसोहैविबुधदेवताद्विजपक्षीतिनकोराजागरुड औनिकरसंवरदेवत्योंकेभी जक्षकिन्नरगंधर्वइत्यादि
औअनेकप्रकारकेपंषीनिकेसंवूहतिनसोंसोभतहै मघवाद्विजपक्षीतिनकीराजिनिपंगतीयोंकरिकेसोहतहै औजाचककोमनभाये
पदार्थदेतहै ऐसोउदारहै॥ पादाकुलकछंद॥ सोहतसकलसुवासनिदरी॥ गुहामलैगिरकीजनुरूरी॥ जिनमैअधिकअर्घघितताकी
मानहुअलीअलीअलिकाकी॥ १०८ वार्ता॥ फेरकैसीउपमाहै संपूर्नसुवाससुगंधनिसोंपूर्नसोहतहै मानोमलयाचलपर्वतकीगुहाहै गु
हाभीसंपूर्नसुगंधनिसोंहै॥ फेरकैसीहै अर्घप्रयोजनाकीमघवाअर्घघनकीजिनमैअधिकास्थितताकीहैदेषीहै मानोअलिका
जोहैकुवेरकीपुरीताकीभलीअैसेसषीहै कुवेरकीपुरीमैभीधनअधिकहै॥ कवित्त॥ भूषनवसनसषअसनप्रभावतहैसुषहतआ
सनविवधजानजानिये॥ भाजनअनेतमनवाननरुचिरगतिवदनवनजकामसरसवषानिये॥ तिलकचिलकवंतसोभितविलासनि

२५ सोसदाईवसनवसनवस... जिये देषोमित्रचित्रग्रविषेदकहूंग्रैसेतऊनिजनिजपतिहीतेसुपतिस्तीमानिये १०४ वार्त्ता जिनकेग्रैसेग्रविषे
दकविसेषनहोतहै तिनकौग्रपनेग्रपनेस्वामीहीतेभलीपतिष्ठाग्रैभलीसोभानहीतोत उनकीपतिष्ठासोभातोग्रनेकस्वामीयोंकरकेमा
25 नीयेहै ग्रौहेमित्रइनमैयहचित्रहैक्यायहग्राश्चर्यहै ग्रैसेग्रविषेदकभीइनकेहै परतौभीइनकीसुपतिभलीप्रतिष्ठा ग्रौभलीसोक्या
सोभाग्रपनेईग्रपनेस्वामीतेहै यहग्रमुकेपनीकोहारहै यहग्रमुकेकीहै ग्रैसेग्रपनेईग्रपनेपतितेप्रतिष्ठासोभापावतहै कोनसे
विसेषनहै जिनमैप्रभावतक्यासोभावानग्रषनहै भ्रमकेषनषानेहै सरदषानेग्रादिक सषपवागाहिने ग्रौवसनवस्त्र ग्रौस्वछनिर्मल
ग्रसनभोजनहै ग्रौरेजानचतुरजिनमैविविधिग्रनेकतरहिकेग्रासनसुषकेकारनजानियतहै जिनतेसुषहोतहै यहग्रर्थ फेरकोनसे
विसेषनहै भाजनग्रनंत क्याभाजनपात्रसोग्रनेतहै जिनमै कैसेहै मनवारनरुचिरगति॥ जिनकीरुचिरसुंदरजोहैगतिक्यातरहि
सोमनकोवारनक्यारोकनवारीहै मनकोवसकरतहै परमसुंदरहै ग्रौवदनवतजकाम जिनमैवनजकोकामकार्यवदकहीये
षोटानहीहै कलहजुत्तनही सरस प्रेमसहितकहीयतहै फेरकौनसेहै तिलकचिलकवंत क्याचिलकचमकताकेसंजुक्तप्रका
सवानग्रैसेतिलकवन्तहै जिनमै ग्रौसर्वदाविलासग्रानंदग्रौभोगइनसेंसोभितहै ग्रौवसनवसुवस कहै.वसुधनताकेवसहै वसनर
हिनोजिनको धनकेवसरहितहै विनाधननहीरहित विसेषनतोग्रैसेहै पैप्रतिष्ठासोभानिजनिजपतिहीतेहै विसेषनतोगनकाकेग्रर्थ
केबोधकहै वामैग्रैसीप्रतिष्ठाग्रौसोभासंभवनहीहै ग्रौइनमैसंभवहै यातेयहचित्रहै गनकाकेपक्षविसेषन गनकाकैसीहै जाको
भषनगाहिनोवसनवस्त्रकैसेस्वछनिर्मल ग्रसनभोजन प्रभावनकोग्रर्थग्रधिकभावतहै संपूरनतेमांगमांगलेतहै ग्रौग्रनेकप्र
कारकेजोहैसंभोगकेग्रासनजोकामसास्त्रमैकहतेहै कैसेसुषकेकारन जिनतेसंभोगमैसुषउपजे ग्रैसेजोहैग्रासनतिनमैजानच
तुरजानियतहै सर्वग्रासनोकोजानतहै यहग्रर्थ फेरकैसीहै वषानिये यहपद सर्वसोलगाईये भाजनग्रनंतमन ग्रर्थ[illegible]जांकी
भाजोहैकांतिसोग्रनंतवहुतजनमनुष्यतिनकेमनमैकहियतहै [illegible]ग्रनेकजाकीकांतिकादेषतहै ग्रौ वारनरुचिरगति तारन[illegible]तोहैग्र

25A

जाकीसुंदरगतिचालसौंकहियतहै औवदनवनजक्या वदनमुषजाकोवनजकमलसोकहीयतहै औकामदेवजामैसमतेसवरसअधिककहियतहै तिल
करन्त अथवातिल अथवातिलकनाममालअघनकोताकीचिलकेकेसहितहै विलासकटाक्षतिनसोंसोभितहै औधनकेवसजाकोवहिनोसदाईहै धु
नविनाकवहू प्रीतनहीकरत (।विसेषअगनगनकाकेताकेअनेकपति ३ एईसुन्दरहाटनिकेपक्षलगे पैतिनकीवड्याईअपनेईअपनेपतिसो वरुचित्रहै॥
दोहा॥ वस्तुअनंतअनंतगुननामसरूपअनंत॥ डरपग्रंथविस्तारतेनहिवरनेमतिवंत॥ ११०॥ वार्त्ता॥ जिनमैवस्तुभीअनंतहै औतिनमैगुनभीअ
नंतहै औनामभीतिनकेअनंतहै सरूपभीअनंतहै ग्रंथकेविस्तारकेभयसोंईहां विसेषतासोंनहीवरने॥ अल्लिल छंद॥ जिनमेथितउदारकम
लाकर॥ अथितनवअपघनकमलाकर॥ होयरतिनदुषजनकमलाकर॥ हरिजसहंससमनकमलाकर॥ १११॥ पुनः॥ पदसदअमलकम
लकमलाकर॥ सेवतसरससदाकमलाकर॥ कलितअनंतकमलकमलाकर॥ अवसवकेअवधवकमलाकर॥ ११२॥ वार्ता॥ जिनहाटन
विषेउदारदानीअथवासुंदरऐसोजोहैकमलाकरधनाढ्यहोथितस्थितहैविराजमानहै कैसेहै जिनकेनवनवीनजोहैअपघनसरीर
सोकमलासोभातिसकरकेअथितसोभायमानहै फेरकैसेहै दुषजनककहियेदुषकेउपजावनवारेऐसेजोहैमलपापतिनकेआकरजोहैसंद
ह आकरनामषानकोऐसैंवूहकोभीहै तिनमैजिनकीरतिप्रीतनहीहोत॥ काहेते जिनकेसुमनजोहैभलेमनसोभगवानकेजसरूपीहंसके
अर्थकमलाकरतलावहै मानसरोवरहै यहअर्थ॥ रूपददोऊसोंलगायलीजै॥ फेरकैसेहै जिनकेपदचर्नकैसेसदश्रेष्ठ अदलक्या
कोमल औअमलनिर्मलकमलनकेसमतिनकोआकरकहीयेआयकरकेसदानित्यप्रतिसरसप्रेमसहितकमलाजोहैसुंदरस्त्रीतिन
केजोहैकरहाथसोसेवितहै किंवाहाथपगसोसेवितहै सदासंजोगीहै अंगमानमयहै पतिव्रतास्त्रीजिनोकेघरनमैहै यहभाव॥ किंवाजि
नकेपदकहीयेस्थान ... सदश्रेष्ठहै पवित्रहै अदलकोमलहै लक्षनाकरितिनमैविहारकरनवारेमानुसकोमलजानिये किंवा
अदलकोअर्थ दलपत्र ... रहितहै ईहांपत्रउपलक्षकहै तिनतेतिनादिकऔरसर्वजातियेतिनतेरहितहै सुद्धहै यहअर्थ अमलनि

२६ मलहै किंवापापतेरहितहै औकमलसदृसहै औअकनहै करदंडतातेरहितहै राजदंडचोरदंडइत्यादिजिनमैनही किंवाकनकोकालकीजै
कालकालेसतिनतेरहितहै फेरकैसेहै स्थान जिनकोसदाकमलासुंदरस्त्रीनकेकरहायसरसअधिकसेवतहै कमलामैसेव लक्ष्मी औसुंदरस्त्री
26 फेरस्थानकैसेहै अनंतजिनकोअंतनहीऐसेजोहैश्रीभगवान तिनदोकलितव्याप्तहै जिनमैठाकुरपूजाहोतहै औकमलजलवामलाकर
सरोवरइनसोंभीकालितहै जिनमैतालभीसोभितहै किंवाअनंतवरुतहै कमलजलजिनमैऐसेसरोवरतिनसोंजुताहै क्योंतहासवैके
अवजोहैरजकभवकल्पानरूपकमलाकरक्यालक्ष्मीकेधवभर्ताविस्नुसोहै याहीतेसवैसोभासंपन्नस्पानहै किंवाछंदकोऐसेअर्थ
कीजै धवकमलाकरजोहैभगवानसोतहांसवैकेअवक्यारन्नकहै कैसेहरिहै जिनकेपदजोहैचर्न सोसदकोअर्थसजोहैसयताको
दैनवारेहै अदलकोमलहै अमलपापरहितकमलजलजोहैगंगाजीकोतिसकीआकरखानहै गंगाजीजिनतेप्रगटभईहै औजि
नकोसरसप्रेमसोंसदाकमलाजोहैव्रजदेवीतिनकेकरसेवतहै श्रीराधाजकसकोव्रजमैनितविहाररहीहै किंवासदाकल्पानदाय
नीविरहिदुष्यकोहननवाली आगेवहीअर्थ फेरभगवानकैसेहै अनंतसेसतासोंजुतहै कमलजलतासोंजुताहै जलसाईहैके
लालक्ष्मीकेजिहैकरकिरनैअंगनकीकांतितिसकेसहितहै ऐसेजोहैहरिसोतहांरत्तकहै पुनःछंद॥संचतसकलसकेलपदारथ॥सुनी
म यतगुनीयतसकैलपदारथ॥अजनअगजनअवाजपदारथ॥संततवनततनरेसपदारथ॥१४३॥पुनः॥वदतवलितरसललितप
दारथ॥मननकरतपुनमरमपदारथ॥अनचनमैद्विजनाजपदारथ॥साधतसंस्तचारपदारथ॥१४४॥वार्त्ता॥फेरकैसेध
वल्लभो नाम नीहै दुर्लभपदारथहै संपूर्नजोहैपदारथतिनकोसकेलएकठेकरकेजिनमैसंचतहै औपदारथक्याअरथद्रव्यताकेपदजो
हैस्पानयज्ञानेसोजिनकेविमलनिर्दोषसुनियतहै औगुनियतहै क्याविचारीयतहै विमोकरकेऔअभकरमोकरके औजि
नकेपदस्पानकौनसेजनसालागजसालाहयसालारथसालाइत्यादि सोअजनमनुष्यनितेहीन औअगजक्यागजहाथीतिनतेहीन औ
...अनंत...
...कचिरगति ना...

26A

अवाजघोरनतेहीन औअरथक्याररथनतेहीन नकोअर्थनहीहै जनसालामैजन गजसालामैगज वाजसालामैवाज रथसा
लामैरथास्थितहै किंवापदनामनिश्चैकोभीहै यहनिश्चैहै जनादिकोंतेरहितहैसोनहीहै संजुतहै॥फेरकैसेहै॥नरेसजोहैराजाफतेसिंहसोजि
जिनकी संततकहीयेनिरंतरपदरिछाकरतहै औजिनकेअरथप्रयोजनभीकरतहै किंवाजिसप्रयोजनकरनेतेउनकीरछाहोय ऐसोउन
कीरछाकोप्रयोजनराजाकरतहै फेरकैसेहै रससोंवलितआयेहुयेऔललितसुंदरश्रृंगाररसव्यंजकऐसेजोहैपदऔअर्थतिनकोवद
तकहितहै रससरूपहैयहभाव॥जोकहोविशयाशक्तहै सोनही क्योंपरमपदकोजोअर्थहै ताकोफेरमननकरतहै विचारतहै किंवाप
रमकोअर्थ परश्रेष्ठमालक्ष्मीहैजिनविषै हरिकेवक्षस्थलमैलक्ष्मीरहितहै ऐसेपरमजोभगवानतिनकेजसकेजोहैपदगायवेके
मन छंदतिनतेअरथकहीयेहरटनिकोजिनकोंनहीकरतउनमैलीनरहितहै फेरद्विजराजजोहैश्रेष्ठब्राह्मनतिनकेजोहैपदचर्नतिनकेअ
र्चनपूजनमैहैअर्थप्रयोजनजिनको किंवाद्विजराजचंद्रमाताकोपदस्थानशिवजीतिनकेपूजनमैप्रयोजनहै किंवाद्विजपक्षीतिन
कोराजागरुडसोहैपदस्थानजिनकोऐसेकौनश्रीनारायणतिनकेपूजनमैजिनकोप्रयोजनहै किंवातुकको ऐसेअर्थकीजै द्विजराज
ब्र[illegible]तिनकेचर्नोंको॥किंवाद्विजराजपदशिव औ अरथका अविस्नु औ तिनकोरथगरुड इनसवकोअरचवारकेक्यापूजकरके
नमैकहीयेनमस्कारकरतहै फेरकैसेहै संस्कृतकहीयेजगतमैचारपदारथजोहै धर्म अर्थ काम मोक्ष॥इनकोसाधतहै॥दोहरा॥
धनकमदनवरधविसदनरतनाकरगंभीर॥राजसकलानिधसमनतरदानवीरवलवीर॥१९५॥वार्त्ता॥धनकधनीकैसेहै म
दन मदगर्वसोजिनकोनहीहै याहीतेवरश्रेष्ठहै अविजिनकी औसदनघरतिनमैरतनोकेआकरसंवूहहै जवाहरवहुतहै औगं
भीरहै सर्वकोअभिप्रायआपसनलेतहै आपनोनहीकहित फेरकैसेहै राजसभलोहैजसजिनको कलाचतुराई किंवाचौस
ठकलातिनकीनिधहै औसमनभलेहैमनतिनके॥फेरकैसेहै॥दानवीररनसविषैजिनकोवलप्राक्रमतरमतसयहै औयाहीते

२७

27 वीरस्सूभटहै किंवादानवीरमैवलराजाकीन्याईवीनहै॥ किंवादोहेकोग्रैसेग्ररथकीजै धनककैसेहै मदनकामकीन्याईश्रेष्ठछविकेसदनहै॥र
तनाकरसमुद्रकीन्याईगंभीरहै॥ फेरकैसेहै जिनकोसुजसकलानिधचंद्रमाकीन्याईहै॥ दानवीरविषैस्सूमनतरुकलपवृक्षकीन्याईहै वल
प्राक्रममैवीरस्सूभटहै दोहेकोग्ररथश्रीक्षालपत्तमीहै वलवीरकोग्ररथ वलदेवजीतिनकेवीरभ्रातश्रीकासतेकैसेहै धनकक्याधन
जोहैस्त्रीवृजकीतिनकोककहीयेस्सुघरूपहै ग्रौमदनकामकीन्याईश्रेष्ठछविकेघरहै समुद्रसमगंभीरहै॥ किंवाककारलघुताकोगुर
वीहैमूरथकेलीये गुरलघुलघुगुरहोतहै निजइछाग्रनुसार॥ ग्रैसेकह्योहै॥ कमदकोकामदकीजैग्ररथमै किंवाकामदकोकमदपद्यो
छंदकेलीये धनजेहैस्त्रीतिनकोकामदकामनाकेदेनवारेहे किंवाककारदेहलीदीपकन्याय स्त्रीनकोभीकस्सुघरूपहै ग्रौमजोहैलक्ष
मीताकोस्सुघरूपहै किंवामनामचंद्रमाकोभीहै ताकोस्सुघरूपहै क्योंचंद्रवंसीहै ग्रौदकोग्ररथदाताहै सर्वकोदेतहै नवरथछवि रका
रकोलकारकीजै नवलनवीनहैछवि जिनकी फेरकैसेहै सदश्रेष्ठहै नरतनहै मानुषकोजिनकोसरीरहै वासवप्रसहै किंवानरग्रर्जु
नताकीतनकहीयेतरफहै ग्रर्जुनकेपक्षीहै महाभारथमैजाकीसहायताकरीहै यहभाव फेरग्रवरहै कारडंदतातेरहितहै जिनमैकाहूको
दंडनही ग्रौगंभीरहैहरी किंवागंजोहैगाथाकथाजिनकेचरित्रनकीसोकैसीहै भीजोहैडरजनममरनकोताकेदग्धकरन[illegible]यग्निरूप
है जिनकीगाथाकेसुनेजन्ममरनकेभयसोंछूटतहै किंवा धनकमदनवरछवि याकेतोवेईग्ररथ सदनरतनाकरगंभीर न[illegible]जोहैसमुद्रति
नकेसरनघरहै क्योंजिनकेरोमरोममैकोटकोटव्रह्मांडवसतहै यातेसमुद्रनकेसदनहै याहीतेगंभीरहै जिनकोग्रंतनही किंवागंभीरसमु
द्रजिनकोसदनहै छीरसागरमैनिवासराषतहै फेरकैसेहै सुजसकीग्रौकलाचतुराईकीनिधिहै॥ ग्रौस्सूमनतरुजोहैप्रफुलतवृक्षजिकुंजनि
केतहादानजोहैजगाततासेलेनमैवीरहै वृजदेवीनतेनिकुंजनमैवलकरकेजगातलेतहै ग्रैसेवलवीरहै॥ पादाकुलकछंद॥ याहीकोनामच
रनाकुलकभीहै॥ राजतराजपपानिवरसोभा॥ कोग्रसजाहिलषनमनलोभा॥ भमनिवहुसुवासितकीनी॥ रजकनतिनकईमकरिहीन[illegible]है

27A

वार्त्ता॥ राजपथ बजार तिनकी वर सुंदर सोभा सोभित है कैसी है ऐसो कौन है जाको मन देषके लोभाय मान नहीं भयो॥ सर्व को भयो है यह ...॥
जहां निवद्रुममहै फरसकी पृथ्वी है औ सुवासित सुगंधित रची है कैसी है रजधूर के कनके॥ औ जिन कर्दम की चइन करिके हीनी है औ
भीरछंद॥ विपुल रहित नित भीर॥ नाघत रवन समीर॥ झटझट कत सभ ठौर॥ मृगदृग सकत न दौर॥११७॥ वार्त्ता॥ विपुल बहुत जामैं सदा भी
र रहित है कैसी जहां रव क्यासी घ्र समीर पवन भी नहीं लघत॥ औ जहां लोचननि के जो है नेत्र रूपी मृग सो सर्व ठौर मैं झटक्या देषके पदार
थनिको झटकपरत है॥ तहां दौर न हीं सकत॥ नगर की सोभा जे जन को परसत है अत्यंत सौंदर्यता व्यंग॥ दोहा॥ प्रवसत निसरत वहु पदनि षकत
होत मन लोल॥ भ्रमत भ्रमत इत उत रहित क्विहीं वीच अमोल॥११८॥ वार्त्ता॥ लोल चंचल जो है मन सो वहुत जो है पदस्थान तिनमैं प्रवसत प्र
वेस करदा हुया औ निसरत निकस्दा हुया थकत है जात है याही ते मन इधर अरु उधर भ्रमदा भ्रमदा वीच हीं वीच रहित है सर्व मैं प्रवेस
कर के निकस्यो नहीं जात अमोल विना मोल हीं तहां रहित है॥ कछु अपनो मोल भी नहीं पावत॥ स्थान वडे सुंदर है मन को वस करले
त है यह व्यंग॥ कवित्त॥ वांचत पुरान कहूं दान कहूं ध्यान परै कहूं दान ज्ञान भक्ति पंथ विचरत है॥ सुभट संघट्ट कहूं धन्वी घन घट्ट छ
त्रि पटै निकट जुटि पाय कल रत है॥ जंगरंग मन्त्र निअनेग चंग नागनि के कतहूं विदूषकादि कौतक करत है॥ कहूं नट वाजी कहूं वाजी
रचै वाजी व्रज ठौर ठौर गुन की सीमा नसहरत है ११९॥ वार्त्ता॥ वजार की कैसी सोभा है जहां ठौर ठौर विषे गुनकी जो है सी सो भा सोभा
न सम मन को कहरत है चुरावत है याही ते मन निकसन नहीं सकत कहूं पुरानन की कथा होत है कहूं सनान करत है कहूं लोक ध्यान मैं प
रहै त तपर है क्या ध्यान धारत है यह अर्थ कहूं दान के पंथ मैं कहूं ग्यान के पंथ मैं कहूं भक्ति के पंथ मै विचरत है विहार करत है औ
कहूं सुभट सूरनि के संघट्ट संकहत है कहूं धन्वी जो है धनुषधारी तिनके मेघनि की घटा के समान ठट्ट है ठाट है वनावहै कहूं पायकल
कडी वेल निवारे निपट अत्यंत हीं समीप जुड के लरत है कहूं मन्त्र पहिलवान तिनके जंग है कहूं अनंग काम के जंग है औ कहूं चंग जो है पतं

२८ गतिनकेरंगअपारेहै औकहूंरागनिकेरंगअपारेहै औकहूं विदूषकनकलीयेकौतकतमासेकरतहै आदिपदसोंनटीइत्यादिकेकौतक
28 जानिये।।कहूंनटनिकीवाजीहै औकहूंवाजीघोरेतिनकेवृजसंवरह किंवावृजमानगमैवाजीकोरचितहै ऐसेठौरठौरमैगुननहींकी
सोभाहै।।गुनमैस्लेष।।पनच डोर औविद्यागुनआदिज्ञानजीजीये।।नगरअधिकसानंदहै यहसंपूर्णपदनितेध्वनिहोततहै जोचौथी
तुककोऐसेअर्थकीजे वृज ठौरठौरगुनकीसीमानसरस्रतहै वृजकीठौरठौरकौनसीश्रीवृंदावनमथानागोकलइत्यादिइनमैऐ
सा[illegible]कीसोभाहै।।तौसर्वअर्थयाहीपदमैलगततहै अर्थवही।। पुनः कवित्त।।वंसवलविक्रमअचारकाविरामग्रामहरितहरित
लोकसीलगुनरूपहै।।भूषनवसनवेसआसनअसनवस्तुवासनसुवासवासडासनअनूपहै।।नानाजानवाहनविहंगपसुभाम
धामभोगजोगजपतपहोमजगपजूपहै।।कैसेसकेनिसरप्रवेसकैसकलमांगमनअनुरूपनमरदअनुरूपहै।।१२०।।वार्त्ता।।फेरकैसो
नगरहै।।हरितहरितकहीयेदिसादिसाकेजोहैहंसजीवतिनकेजहांवंसकुलहै औवलहै औविक्रमप्राक्रमहै औअचारकर्महै औग्रा
मसंवरहहै सीलसुभावहै औगुनहै औरूपहैजामै।।भूषनगहिने वसनवस्त्र वेसपहिरावे।।औवैठवेकेआसन।।असनभोजन वस्तु
धन वासपात्र सुवाससुगंध वासस्थान डासनविछावने ।।सर्वअनूपहैजहां औअनेकप्रकारकीयांजानअसवारीयां औवाहन विहं
गपक्षी औपसुवृषभादि औवामक्यासुंदरभामाहैजहां भोगहै जोगहै जपहैतपहै होमहोतहै जग्यनिकेजूपहैजहां इनसर्वमैमनप्र
वेसकरकेफेरकैसेनिसरसकै क्योमनतोअणुरूपहै अतिसूक्षमहै अतिसूक्षममैवलनहीहोत इसतेउपरंतमर्दकोअनुरूपतु
ल्यनहीहै वहुतनमैप्रवेसकरिकेनिसरजानकोप्राक्रमम रदमैभीहोतहै सोमनमर्दभीनहीं नियुंसकहै यहकैसेनिकससकै यातेउ
नहींमैउरझ्योरहितहै यहभाव।।मनकोलक्षनतर्कसंग्रहकीभाषातत्प्रकासग्रंथमैऐसे लिख्योहै तहांकोदोहा।।करनसुख

११८

२८A

युपलब्धकोसाधनमनकाविरूप॥ सोप्रत्यात्मनियततेनांतनित्यअनुरूप॥ वार्त्ता॥ रूपअादिकी जोहैउपलब्धिप्राप्तितिसकोजोसाधनकारजहै क्या
उपजावनवारोइंद्रैहै ताकोमनकहीये सोआत्माआत्माप्रतिहै इसनियततेक्याइसनियमतेनंतहै नाहीहैअतजिसको अजोहै सोनित्यहै औअनुरूप
है असोलक्षनहै औव्याकर्नरीतसोंमननिपुंसकहै यहभाव॥ औरामग्रामअवधतापैभीयहीअर्थलागतहै॥ दोहरा॥ जितजितगमनतनगरन
रतिततितचित्तलुभाय॥ दृगनगहितवहुपदनिसीनवनपरतपयपाय॥ १२१॥ वार्त्ता॥ कैसोरमणीयनगरहै जहांजहांनरगमनतहैजातहै
तहांतहांचित्तलुभायमानहोतहै औवहुतपदस्थाननिकीजोहैसीसोभासोदृगनिकोगहितहै यातेपयमारगमैंनवसीघ्रहरनलहीपरत अ
र्थयहजिसस्थानकीसोभादेखीयतहै वाहीकोत्यागनहींहैसकत अतिसौंदर्यताव्यंग॥ आभीरछंद॥ वीथीविमलअनंत॥ वामावामलसं
त॥ कौंतकविविधिमंभार॥ विपकतअघनिहार॥ १२२॥ वार्त्ता॥ वीथीगलीविमलनिर्मलअनंतअनेकहै कैसीहै वामकुटिलअवामसरल
लसतहै जिनमैअनेकतरहिकेजोहैकौंतकतिनकोदेखकेअघनेत्रविपकतहै चलननहींसकतहै॥ पुनः काकपक्षधरवाल॥ क्रीडतजितिततजा
ल॥ स्यामलगौरसनीन॥ घरघुसरतवीन॥ १२२॥ वार्त्ता॥ कैसीगलीहै जिनमैकाकपक्षनिकेधरनवालेजोहैवालकतिनकेजाल) समुभिनंद
पुरुप्रतिअवास॥ प्रतिनिसविलास॥ संजुतहुलास॥ पायतप्रकास॥ १२२॥ वार्त्ता॥ पुरुविषैअवासगृहगृहप्रति औनिसानिसामैहुलासकेसं
युतअनेकतरहिकेजोहैविलाससोप्रकासकोपावतहै मरहट्टाछंद॥ रविसरवरसोभैमुनिमनलोभैकाननकीनेपान॥ रसमैसहायेनवर
सधायेरागनिरागनिगान॥ रतियतिधितपतिकोमोदमहतकोजनुआगमअविलोक॥ चहुदिसमनभायेहोतवधायेमंजुलमंगलओक
१२३॥ वार्त्ता॥ कैसेविलासहैपुरुमै सरनामपांचको रविजोहैशब्दपांच तंती तंती ताली चंमी फुंकी॥ (जोहैपंचशब्दकैसेवरअेष
मिलहूयेसाजहांसोभितहै जिनकोकाननसोंपानकीयेतेक्याश्रवनकीयेतेमुनिनिकेमनलोभायमानहोतहै ईहांलक्षार्थहै फेर
जहांसरजोहैसप्तस्वरजादिकतिनकरकेऔसमैकनके [illegible]रसहायेसुंदर रसहीन औकालविरोधनहीं फेरकैसेनवरसअृंगारादि अर्थ

२९ वानवीनअद्भुतजोहैरसचमतकारीरूपतासोंछायेहुयेऐसेजोहैरागतिनकोऔरागनीजेहैतिनकोजोहैगानगायवोसोभीसो
२९ भितहै तिनकीकैसीसोभाहै मानोरतिपतिकामसोईहैछितपतिराजाताकोआगमअविलोकके क्यादेषके रंकामदेवराजाकोकैसो
आगमहै मनावड़ेमोदआनंदकोहै जातेसर्वकोआनंदभयोहै ताकोदेषकेचारोतरफमनभायेवधायेहोतहै कैसेहैवधायेहै मं
जुलमनोहरजोहैमंगलतिनकेऔकघरहै आनंदसंपदाइत्यादिकीअधिकाईआदिध्वनि तोटक रूमदीपतिदीपनिकीदरसै
वहुधांजिनकोउपमापरसै॥ सतरूपसुधीनरनारनिके॥ जनुलछतअछअगारनिके॥१२३॥वार्त्ता॥गेहगेहप्रतिदीपनिकैं
कीरूमजोहैदीपतसोभासोजिनमैदिषाईदेतहै जिनदीपनिकोवहुधांअनेकप्रकारकीउपमापरसतहै दीपकनहीमानो
सुधीवुद्धवानजोहै नरऔस्त्रीतिनकोसतश्रेष्ठजोहैरूपताको अगारघरनिकेजोहैअषनेत्रसोलछतक्यादेषतहै पुनः॥ हरसंत्र
सनिकोजनुवंसनये॥तिसरोसमतातमलीललये॥ तनुमायनिकायनकायनिमै॥नमधूमलघायनताहिवमै॥ १२४॥वार्त्ता॥
हरसूर्यतिनकीअंसजेहैकिरणैतिनकोमानोवंसहै कैसो नयोनवीनअद्भुत जोरात्रमैछिपितहै॥तिसनेरोसक्रोधसोंनिसामैवडो
जोहैतमअंधकारताकोपानकरलीनो॥ औतिनकेकायजोहैसरीरसोतनुक्यारूपतमहै तिनमैअंधकारकारकोजोहैनिकायसं
वूहसोसमातनही याहीतेनमकहीयेरूपरधूमजोदेषीयतहै सोधूमनहीहै मानोतिसअंधकारकोवमतहै क्याउगलतहै षटपद
छंद॥करयोगवनप्रतिभवनविपुलमंगलसरूपधर॥हरयोअवनसनअवनतिमरदुषभरयोमोदतर॥मदनप्रकासनिरूरवसी
नगरीनषतनिकी॥ दीपमालिकाप्रवसकियोजनजनमनघनकी॥फुरितसनेहलोयनललितसगुनकियोमतिवसंत॥ मग
राजराजरितुराजपुररूतरूअसोककुसमितलसत॥१२५॥वार्त्ता॥दीपकनहीमानोमंगलनेअपनेविपुलवहुतेसरूपधरकेभ
वनभवनविषेप्रवेसकियोहै अवनप्रथ्वीकोजोतिमरअंधकारकरकेदुषभयोसोकानसोंरूनवेदूरकीयो औतरअत्यंतमो [illegible]

दजामैपूरनकीयो अषवामदनकामकेप्रकासकरनवारीमूरतिहै औषधीहै किधौंनषतजोहैतारेतिनकीनगरीवसीहै अषव...
विषैदीपमालकादिवारीतानेप्रवेसकरिकेजनजनकेमनकोअनउत्सवकीयोहै फेरकैसेदीपहै सनेहतेलतासोंपूरितहै पूरेहूयेहै॥
लोयनजोहैलोवैसिषातिनसोंललितसुंदरहै गुनवटीइनकेसहितहै किधौंसतअष्टमतिवंतहै मतिवंतकैसेहै सनेहप्रेमसोंपू
रेहूयेहै लोयनलावन्यतातिसकरिकेललितसुंदरहै अषवालोयननेत्रसुंदरहैजिनकेलज्यायुक्तहै अषवानेत्रनिकोसुंदर
है सबकोनीकेलागतहै औरगुनविद्यागुनइनकेसहितहै अषवाअगराजजोहैराजाफतेसिंहतिनकोजोहैराजसोईभयोरितु
राजवसंतरितु तामैपुरजोहैनगरसोईभयोअसोककोवृक्षसोकुसमितक्याप्रफुल्लितभयोसोभितहै दोहा॥त्रासरासनासनकीयो
वासनिवासनिवास॥नरपतिहरनकरहेरीयतजनुप्रतापसंकास॥१२६॥वार्त्ता॥हरपदतेराजाफतेसिंहलीजीये तिनकेप्रतापको
जोहैसंकासप्रकाससोमानोनिवासनिवासविषैहेरीयतहै देषीयतहै कैसोप्रतापहै त्रासभयताकोजोहैरासससमूहतिसकेदूरकर
नवारोहै (अगलापाठपुरप्रतिअवासयाछंदतेप्रथमऔजितजितगमनतनगरनरयारोहेकेमागेलिषनो)॥ आभीरछंद॥ वीथीविमलअनं
त॥वामावामलसंत॥कौतकविविधिमंमार॥विथकतअषनिहार॥१२७॥वार्त्ता॥वीथीगलीविमलनिर्मलअनंतअनेकहै कैसी
हैवामकुटिलअवामसरललसतहै जिनमैअनेकतरहिकेजोहैकौतकतिनकोदेषकेअषनेत्रविथकतहैचलनहीसकतहै पुनः॥
काकपक्षधरलाल॥क्रीडतजिततितजाल॥स्यामलगोरसरीर॥घनघसरन्तवीर॥१२८॥वार्त्ता॥वैसीगलीहैजिनमैकाकप
क्षनिकेधरनवालेजोहैवालकतिनकेजोहैजालसमूहसोजहांतहांक्रीडतहै॥षेलतहै॥अवनोसमीपजोछोटेछोटेवालहोतहै
तिनकोनामकाकपक्षहै फेरकैसेवालकहै स्यामऔगौरजिनकेअंगहै औघूरकरकेधूसरतहै गरदायेहूयेहै पुनः पीतासितपट
छीन॥सोभितकुलहिनवीन॥कुंडललोलअमोल॥झलकतगोलकपोल॥१२९॥वार्त्ता॥पीतपीरेऔअसितस्यामछीनपतरे

३० जिनके पटवस्त्र है कुलहि टोपीयां नवीन सोभित है लोल चंचल अरु अमोल मोलते रहित ऐसे जो है कुंडल सो जिनके गोल कपोलनि मै
झलकत है ऐसी लावन्यता है जैकरी छंद॥ सब के उर ना हरन हिलसै॥ सुभ रिसा जंत्र निमन वसै॥ जुग जुग रसना सुन मन हरै॥ तिकनि एक
रव कज्जव धरै॥ १३०॥ वार्त्ता॥ फेर कैसे बालक है सर्व के उर मै नाहर सिंह केन असो भित है सुभ कल्यान रूप जो है रिसा जंत्र तिनके सा घविरा
जमान है है है रसना के जो है सुन शब्द सो मन को हरत है वा वज्जवा ताकनिको एक रव कदो रके प करत है तव है है रसना के शब्द होत है रस
ना छुद्र घंटका अरु जिहा॥ हीरक छंद॥ कामनि तन दामनि छवि कामनि सन लसहीं॥ गावति मन भावति वन आवत गन गघहीं॥ ईछन
सरतीछन हर सीघ पर लेखीये॥ अंजन वत षंजन सत रंजन पति देखीये॥ १३१॥ वार्त्ता॥ फेर तिन वीथकानि विषै कामनी हो स्त्री कैसी
दामनी विज्जु रीतिनके समान है तन जिनके॥ अरु छवन जो है उत्सवता के जो है कामकाये तिनके सहित लसहीं देखीयत है अथवा लसहीं
लषांही अनंत यह अर्थ॥ मन भावति गावती है॥ अथवा गावति है अरु भावत क्या प्रकास मान है मन जिनके आनंदित है यह अर्थ अरु व
न करके क्या श्रंगारनि की रचना करके तिनके गन समूह जिन गली निमै आवत है अरु गघहीं जात है उतते आवत है इतते जात है अ
थवा आवत है अरु रूमंदरनिते आपने मंदरनिको॥ जात है आपने मंदरनिते अरु रमंदरनिको॥ कैसी स्त्री है जिनके ईछन नेत्र सर वाण
तिनके समान तीछन है हर मृग अथवा भ्रमर अथवा कमल तिनमै सी कहीये सोभा को जो है छन गर्व हमारे जेही सो भा अरु रूकीन
ही यह जो छवि संवंधी गर्व है तिसके परक्या सत्तु जानीयत है इनको देषके उनको गर्व दूर है जात है फेर कैसे है अंजन का जरता के
सहित है मानो सत अष्ट चतुराई समेत षंजन समोले है अरु पति जो है सामी तिनके रंजन प्रसन्न करन वारे देखीयत है दोहा॥ पद मंजी
रधुनि पदम ढिग अलि कुल कुणत विहान॥ वा मकर ध्वज ध्वज नित रवाजत विजै निसान॥ १३२॥ वार्त्ता॥ पद चर्न तिनमै नूपरनि की
जो है धुनि सो कैसी है मानो पदम कमल तिनके समीप अलि भौरनि के जो है कुलसंवरह तिनके विहान प्रात समै के कुणत शब्द है म...

३१ जोहै कसिपुसेज्या तिनपैकामास्त्रीऔकंतकहूंक्रीडाकरतहै औकहूंकामकोजोहैकुंभीहस्तीताकेजोहैकुंभस्थलतिनकेसमानक
ठोरजोहैकुच तिनपैकहूंकंचुकीकोकसतहै संभोगकोउद्यतहोतहै औकहूंकनकचंपककीजोहैकलिकाकलीताकोजोहैकलानि
31| धचंद्रमासोकंजजेहैकमलतिनकोजोहैकुंकमकेसरतिसतेकमनीयसुंदरह्वैकेसोभितहै ईहांचंपकलीसीसुंदरऔसतवरनी
औसुवासवतीनायकालीजै कलानिधसोआनंददायकऔउज्जलमुखलीजै औकंजनिकेअमलऔकोमलप्रीतमकेकरलीजै
अर्थयह कहूंप्रीतमप्यारीकेमुखकोकेसरलगावतहै अभिप्राययह कलीपदतेजानीयेनायकामुग्धाहै तिनकेकपोलनिमैजो
रदखतहै सोगुनजनोतेकुंकमलायदुरावतहै ईहांचमत्कारप्राधान्यहै यातेशृंगारमैअद्भुतहै रूपकातिसयोक्तिकरकेऔसा
ध्यवसानालक्षनाकरकेअंगजानेपरतहै औकहूंकुंचतवांकेजोहैकचवारतिनकीकांतसोभाकोकिसोरीकरतहै केसनिकेशृं
गारभोगफलसीसफलइत्यादितिनकीरचनाकरतहै औकरतदेहरीदीपककोमलजोहैकलेवरसरीरताकीसीसोभाको
करतहै शृंगारकरतहै कैसेसरीरहैजिनकेआगेकंचनस्वर्नकीसोभाअसतक्याअशेषहै क्योंस्वर्नकठोरहै यातेसमतान
हीपावत ऐसेकौंतकहै सर्वभोगनिकोभोगतहै यहभाव॥सोरठा॥भूषनसकलसुवाससुमन तलपडासनवसन॥दंपतसुभग
निवासगानपानदीपादिजुत॥१३६॥वार्त्ता॥आलंबनउद्दीपनोतेबिननीकेनहीहोत यातेकह्यो दंपतजोहैस्त्रीपुरुषकैसेसुभगसुंदर
औसंपूर्नभूषन औसुगंधेसुमनपुहुप तल्पसेज्या डासनविछावने वसनवस्त्र निवासगृहसुंदर गान गायबो पानतांबूल
दीपक इनतेआदिलैकेऔरूभीउद्दीपनपदार्थतिनकेजुतहैजहां॥ पद्धरी॥पुरसुंदरनृपमंदरउतंग॥बहुरंगनिरंजत
नवलअंग॥छितभूषनवहुभूषनमंझार॥वखपखनतपद्रूपनअपार॥१३७॥वार्त्ता॥ऐसेनगरमैराजाकेउतंगऊंचेमंदरगृ
हसोसुंदरहै कैसेहै अनेकरंगनिकरकेरंजतरंगेहुयेहै औनवलनवीनहैअंगजिनके अथवाहैअंगभित्ति॥फेरकैसेहै॥

30A

तहै यहमर्थ मकरध्वजजोहैकामदेवताकीजोहै ध्वजातिनकेतरे विजयपतेके निसाननगारेवाजतहै॥ कामनेजगतविजैकीयो अवध्वजानिकेत
रेनिसानधरेहै॥ कुंडलीयाछंद॥ भावतविधुकरुनागरीअतिसिरूधनधुनिसंग॥ विगसतपुरउपवनगलनिकूजतमधुरविहंग॥
कूजतमधुरविहंगभीनगअवाजसोकदव॥ संपदसलिलागमनिसरतिरतनाकरकीनव॥ संपदसलिलागुमनित्रिषतिवहुआनं
दपावत॥ वासनिवासतमनोमलैगिरदरीप्रभावत॥ १३३॥ वार्त्ता॥ विधुअतिकलचंद्रतिनकीकरुणादयातेवीथीजोहैगेरी शिरूवा
लकधनस्त्रीतिनकीधुनिकेसहितअत्यंतभावतहै क्याहै पुरनगरकपूरथलासोईभयोउपवनवागताकीजोहैगलीतिनमैमधुरमी
ठेविहंगपक्षीनिकेकूजतशब्दहै तिनमैपक्षीवोलतहै यहअर्थ कैसेविहंगहै॥ गदरोगरूपीजोहैवाजअोसोकरूपीजोहैदवअ
ग्नितावोभीडरजिनकोनहीहै श्रीकल्सकीकृपातेरोगसोकजामैनही अैसोनगरहै॥ अथवानगरसोईभयोरतनाकरसमुद्रतिस
कीवीथीमानोसरितानदीहै॥ कैसीहै॥ संपतरूपीजोहैसलजलताकेआवनेकीहै याहीतेनवनवीनहै संपतरूपीसलिलकेआग
मनेतेत्रिषतजोहैप्यासेअोआसावंत सोवहुतेआनंदकोपावतेहै अोवासनरूगंधैतिनसोंवाससतरूगंधतहै गरीनही मानोनगरमलि
याचलहै तिसकीप्रभावतसोभावानदरीकंदराहै॥ मधुभार॥ भोगनिसंजोग॥ रोगनिवियोग॥ नरतियअत्रास॥ विलसतविलास॥
१३४॥ वार्त्ता॥ नरतियदंपत अत्रासभयतेरहितजहाविलासविलसतहै अोरसूगम॥ कवित्त॥ कुंदनिकसिपकहूं क्रीडतहैकामाकंत
कामकुंभकुंभकुचकंचुकीकसततहै॥ कनककीकलिकाकोकलानिधकंजनिकुकमतेकहूंकमनीयहेलसतहै॥ कुंचतकचनि
कोतिकरतकिसोरीकहूंकोमलकलेवरसीकंचानअसततहै॥ कुसमकमानकीकामैकेकलंवनिहे,कोविदकपूरथलेकौत न
कवसतहै॥ १३५॥ वार्त्ता॥ हेकोविदचतुर कुसमकमानजोहैकामतिसकीकमानकेजोहैकलंववानति नकेरचेहूयेजोहैकौतक
सोकपूरथलेनगरस्थितहै अथवाकोविदचतुरजोहैकामधनुषविद्यामैतिसकेवाणोकेकौतकअैसेहै कुंदपुस्पविसेष तिनकी

३२ द्रकाकरतकित्तउचार॥घरनतलसंपदकमलम्रलनपतिजलदनिरार॥जनुमयूरमंडूकचात्रतचक्रसोरम्रपार॥१४१॥वार्त्ता॥म्रंतरमध्यको
द्वारपरमम्रधिककिंवाम्रष्ट्सोभितहै चौकठेजिनकेचित्रनिसोंभलीप्रकारचित्रतहै ललितसुंदरजोहैकिवारतिनसोंकलितसंजुतहै लषनदेष
32 नितेजिसकोसरूपचषनेत्रनिमैरोहततहैचढतहै म्रैसीनिर्मलतोरनसाटूवोकीजहापंक्तिहै म्रन्रतननवीनजोहैसुमनपुस्प म्रान्रतम्रंवतिनकेद
लपत्रनि[illegible]कीवंधीहुईवंदनवारहैजहा॥यातेमंगलमयद्वारजानीये सूत म्रौ मागद वंदीजन चारनइनकीजिसद्वारकेम्रगादीभीरहै चंदन
सम्चंद्रमासीचंद्रककपरसीचारुसुंदरजोकीरतहैराजाकीतिसकोउच्चारनकरतहै तिनकीकैसीसोभाहै घरनतलम्रतलमैसंपतारूपीजोहैकमल
जलतासोंम्रलिकरन्रम्रैसोजोहैराजाफतेसिंहसोईभयोजलदमेघताकोदेषके मयूरमोर मंडूकदादर चात्रकपपीहे चक्रचकवे एभानोम्रपारव
हुतेसोरकोकरतहै म्रैसोम्रानंदहैजहा॥कवित्त॥जलजनिकाईकोप्रवढावेपलपलमामपुष्करविलासमहावीरनगमानपर॥काविरामवा
हनीप्रकासितसमरम्रमसंपावतनागघरकंपावतघोरतर॥कलानिधिसुचिरुचिवारनसुषदहंसमरररसमगनरहितसदागतवर॥फतेमग
नायकधरनिईसचूडामणिसोभितघरनिधाराधरकीधरनिधर॥१४२॥वार्त्ता॥राजाकोम्रैमेघकोस्लेष॥फतेमगनाइकजोहैफतेसिंहराजा कैसोधर
निईसकोनरजेतिनकेमुकटकीमणि सर्वराजेपांविषेश्रेष्टतर सोधरनिप्रथ्वीविषेधाराधरजोहैमेघताकीधरनिधविकोधारनकरिकेसोभितहै राजाकै
सोहै जलजमोतीतिनकोमुकटादिभूषनोविषैजडायकरिकेतिनकीनिकाईसोभाकोपलपलमैवढावतहै भूषनोमै लगेतेमोतीम्रतिसोभापावत
है॥यथारामायणे॥मनिमानकमुकताछविजैसी॥म्रहिगिरगजसिरसोहिनतैसी॥न्रपकरीटतरूनीतनपाई॥लहहिसकलसोभाम्रधि
काई॥इति॥किंवामोतीयनकेभूषनोसोंजिनकीसोभावढतहै यातेमोतीजिनकीसोभावढावतहै पुष्करकमलतिनमैजिनकोविलासहै कम
लनिमैक्रीडाकरतहै फरराजाकैसोहै महावीरनगमानपर॥नगपर्वतकेसमानजोहैमानगर्वसत्रुनिकोतिसकेऊपरमहावीरवज्रके
समहैराजा किंवानगपर्वतसमहैप्रमानजिनकोम्रैसेजेहै परसत्रुतिनकोवज्रसमहै म्रथवाराजाकैसोहै महावीरवडोसुभटहै म्रौ

31A

षितप्रथ्वीकेभूषनहै प्रथ्वीजिनतेसोभायमानभईहै औजिनमैभूषनरूपाभूमकेचनपरसनदषानेआदिकवहुतहै कैसेहै दषप्र
षक्षाजे छमासकोरूचि ताकोजोहै अपारतमैंपताकेदूषनदूरकरननवारेहै पुनः ऊंचोदरराजदृढपौरुद्वार॥सोभितसुग्रच्छवहुप्रती
हार॥मदमत्तदंतिरथवाजवीर॥प्रतिप्रातप्रदोषप्रदिप्तभीर॥१३८॥वार्त्ता ऊंचोउतंग दरराजवडो दृढपुष्ट औसोपौरुद्वारहैराजाको ता
केअग्रमैस्थित ठाढेवहुतप्रतहारचोपदारसोभततहै॥औमदकरिकेउनमत्तजोहैदंतिहाथी औरथवाजघोर वीरसुभट इन
कीजोहैभीरसोजहांप्रातमैभी औप्रदोषरात्रकोभी सदाप्रदिप्तहै अत्यंतप्रकासततहै मालती॥वजैतिहपैघरियानअवैन॥कहेदि
नरैनप्रमानसुचैन॥वटैसुनदंपतचैनअचैन॥हिंयेतवमोदरचैनरचैन॥१३९॥वार्त्ता॥तिसपौरुद्वारपैघरयारवाजतहै कै
सोहै आपतोअवैनक्या वचनोतेरहिततहै औसर्वकोदिनरैनकोप्रमानसुचैनहीकहिदेतहै॥सुनकरिकेदंपतनिकोचैनभीवा
ढतहै औअचैनक्या व्याकुलताभीवाढतहै दिनकेप्रमानकहिनतेचैनवाढवाढतहै रात्रकोआगमजानउतकंठाहोतहैमिलन
की रात्रकेप्रमानकहिनतेव्याकुलताहोतहै दिनकोआगमजानकेवियोगकेदुष्वसहिनकेभयसों याहीतेदिनप्रमानकहि
नमैतोहिंयेमैमोदरचितहै रात्रप्रमानकहिनमैनहीराचतहै यहभाव दोहा॥विकटकठनसांकरनिसनगिरकरिदरनलि
लाट॥तुराषाटनरपराट प्रियजनुसतकोटकपाट॥१४०॥वार्त्ता पौरुद्वारकेकपाटकैसेहै॥विकटभयानकहै औकठोरहै॥
सांकरसंगुलतिनकेजुतोहै फेरकैसेहै गिरषपर्वततिनकेसमजैहै करिहस्तीतिनकेजोहैलिलाटमस्तकतिनकेदलनिकोक्षम
समर्थहै औनरपराजेतिनकोराटराजाश्रीपतेसिंहसोईहैतुराषाटइंद्र ताकोप्रियहै यातेमानोकपाटकिवारसतकोटवज्र
है॥विष्णुपद॥ सोभितपरमअंतरद्वार॥चौकठेचित्रनिमुचित्रतकलितललितकिवार॥लक्षनिचषनिसुरूपरोहितअम
लतोरनिमार॥सुमननुतनिनुतदलकीलसतवंदनवार॥सुतमांगदवंदिचारनविपुलभीरअगार॥चारुचंदनचंद्रचं

३३ घरजोहैमोरसोजामैसंसुखकोपावतहै किंवामेघकैसोहै संपाविज्जुरीताकेसहितहै औजाकीघोरगर्जनातेनागधरमोरसोतरअत्यं
तकंकहीयेसुखताकोपावतहै फेरकैसोहै कलानिधचंद्रमासुचिसूर्यइनकीजोहैरुचिकांतिताकोवारनकहीयेरोकनवारोहै औ
33 हंसपक्षीविसेषतिनकेसुखमोदकहीयेखंडनकरनवारोहै औभरवहुतहैरसजलजामै औजामैमगमागैनहीनहीरहितहै किंवा
जाकेभरजलसोंमारगनहीरहितहै सदागतपवनकोहैवरवलजामै किंवासदश्रेष्ठमारगजाकेआगतआवनेसोंनहीरहितहै कि
वाजाकेभरजलसोंमारगनहीरहितहै)हैवर किंवाऐसोजाकोवरजोरहै गीतछंद॥अरजअतिनसतअंगनसोभितवासितनिवहु
वसोधासी॥मदुमसनंदविभूषितचितवनचलचषनिचिलकजनुपासी॥१४३॥वार्त्ता॥सतश्रेष्ठअंगनकैसोहै अरजक्यारजव
र्जितहै अतिन त्रिनादिकसोंवर्जितहै औजहांवसुधाभूमकीजोहैसीसोभासोवासतसुगंधितहै औनिवहुफरसजुतसोहतहै
औमदुकोमलमसनंदसोंविभूषतसोभायमानहै कैसीमसनंदहै चलचंचलजोहैचषनेत्रतिनकीचितवनदृष्टकोमानोजाकीमलवापासी
है नेत्रनकोफसायलेतहै दृष्टतहांसोंचलनहीसकतपरमसनंदरहै यहअर्थ पुनः तापरविविधवरनकोविलसतनभनववितानछविपू
रत॥ दृढतरगुनसंसर्गहितसुचितअमितमोदप्रदसूरत॥१४४॥वार्त्ता॥तिसमसनंदकेऊपरविविधअनेकवरनकोजोहैवितानचंदोवासो
नभआकासमैविसेषलसतहै कैसोवितानहै नवनवीनछविसोंपूरतहैभरयोहुयोहै तरअतसयदृढजोहैगुननि कोसंसर्गसतसंगसोअमि
तआनंदकेदेनवारोहै इसभावकोजिसतैंवितानकीसूरतसुचितहैजितावतहै किमोकोदृढगुननिकोसंसर्गहै [illegible]तसर्वकोआनंददेतहै
गुनमेंअलेष गुनडोरा गुनगुन पुनः झलकदुहुनकीदुतिकीसूतकीदुहुवीचपरस्परझमलकत॥मिलतवरनवरनातरफअवतवहुवरन
निरषचषललचकत॥१४५॥वार्त्ता॥मसनंदऔवितानइनदुहुनकीदुतिकीझलकदुहुनदोकेवीचपरस्परझलकतहै मसनंदकोवितानमै
वितानकीमसनंदमै कैसीछविहै जवरंगरंगमिलतहै तवऔरूअनेकरंगप्रभवतहैउपजतहै जिनकोदेषकेनेत्रललचातहैलपटातहै दोहरा

32A

नगपर्वतसमनिश्चलहै औमानक्याऊचोचित्तहैजाको॥ औपरकहीयेउत्तमहै श्रीराधाप्रकासजीकोसेवकहै फेरराजाकैसोहै कविहै श्रीप्रकास
चंदकेजसकेकवित्तवनायेहै रामकहीयेतीनजोहैवाहनीसैना हैदल पैदल गैदल इनकोसोभादेतहै रथानिकीसैनाअवप्रसिद्धनहीयाते
नहीगनी फेरअमप्रथ्वीमै समरकामहै मानो किंवारामश्रीरामचंद्रजीकिंवावलदेवजीतिनकेकविहै वाहनीसैनाऔसमरजुद्धकी
दैंअमदोऊनकोप्रकासतहै किंवारामकविकाहितहै जिनकीसैनाजुद्धकीअमकोप्रकासितहै नागरहसीतिनकेधरपकरनिवालेवस
करनवारेकौनमहावतसोजिनसोंसंक्पासुखपावतहै किंवानागश्रेष्टजनातिन्हकेधरसरीरसोजिसराजासोंसंकल्पानपावतहै औरजेघोरक
हीयेभयानकहैदुष्टजनतिनकोराजाकेपावतहै भयदेतहै फेरकैसोहै कलाचतुराईअथवाचौसठकलाकिंवाकोककलातिनकीनिधहै औ
रुचिश्रृंगाररसतामैजिनकीरुचिहै रसकजनहै वारनहस्तीहंसघोडेतिनकोसुखदायकहै सुखदशब्ददेहरीदीपक किंवासुचिपवित्रहै
औवारनहाथीतिनमैरुचिहैजिनकी आगेवही औअरवहुतजोहैरसप्रेमकिंवाचमत्कारीसुखतामैमगनरहितहै सदाजिनकीऐसी
गतअवस्थाकिंवातरहिहै वरसेवोधन किंवासदाजिसराजाकीगतिप्राप्तिवरश्रेष्टहै दारिद्यादिदुख्यकोजिनकोमिलापदूरकरतहै
किंवासदाकहीयेमंगलदायकहैप्राप्तिजिनकी किंवाअररसमैमगनहै औसदाजिनकीवरसुंदरगतिअवस्थारहितहै मेघपक्ष
अर्थ॥दैसोमेघहै जलजकमलतिनकीसुंदरताकोघलपलमैवढावतदूरकरतहै पुष्करआकासमैहैविलासजिसको फेर
मेघकैसोहै नगनिश्चलजोहैमानस्त्रीनिकोतापरमहावीरवडोसुभटहै किंवानगवृक्षताजाकेवडेसुरमेमानकेवैरीहै वृक्षउ
द्दीपनहै एईमानकोदूरकरतहै किंवामाननीसोंसखीकहितहै हेवीरजिसमेघकोअंवरमैवडोविलासहै औतेराजोनगनिश्च
लमानहैताकोपरसत्रुहैयह किंवाजिसमेघविषैनिश्चलमानकोवैरीमहावीरकोकिलहै वर्षारितुमैकोकिलकीवानीसुनैका
हूकोमाननहीरहित फेरकैसोहै वाहनीनदीऔसमरकाम औअमप्रथ्वी सर्वकोप्रकासतहै किंवाअममैकामकोप्रकासितहै औनाग

तिविंवतहै सोचित्राकाकेपदपद द्वैद्वै गुनगुन तीनती वरनवरनचारचारदिखाईदेतहै दुवैयाछंद॥जुगमजुगमधुर
लनिसुक्लेवतजुगजुगहारस्तमनके॥विचविचविलसतनीलमनिनिकेहरनहारजेमनके॥मनोमनोभवनपञ्चमिला
षतञ्मतिभवविजैकरनको॥कीयोचमत्कृतगुननिचापचयचलचितलहहरनको॥१५०॥वार्त्ता॥द्वैद्वैजोहैधुरलषटीति
नपैए[illegible]निकेद्वैद्वैहारश्रविलंवतहैलटकतहै ओतिनकेवीचवीचजेमनकेहरनवालेनीलमनिनिकेहारहैसोअवलंवत
है॥ओविसेषलसतहै तिनकीकैसीउपमाहै मानोमनोभवजोहैकामसोईराजाहै सोजगतकोअत्यंतविजैकरनकोअ
भलाषतहैचाहततहै तिसनेअपनेचापधनुषनिकोजोहैचयसंवूहसोगुनजोहैचिल्लेतिनसोंचमत कारीकीयेहै चंच
लचित्ततेईभयेलच्छनितानेतिनकेहरनेवासतेवेधनेवासतेधनुषनिमैचिल्लेचढायेहै॥चौपई॥जालरुचिरमधिचि
त्रहिरनके॥खंजनमृगदृगवालघिरनके॥सुषदसदागतवारफिरनके॥सरनकलाधरतरनिकिरनके॥१५१॥वार्त्ता॥कैसेसदनहै
जिनमैरुचिरसुंदरजोहैजालझरोषेतिनकेमध्यहिरनरत्ननिकेचित्रहै फेरकैसेहै खंजनअरुमृगइनकेसमानजोहैदृगतिनके
घिरनेकेजालहै दृगरुकतहैजिनकीसुंदरतामै सुषदातासुषदायकजोसदागतपवनताकोफिरनकेवारदरवाजेहै अथवा
कलाधरचंद्रमातरनसूरजतिनकीकिरनोकेसरनमारगहै॥मालतीछंद॥कियोरवतेतमतोमपराय॥धरयोइनपंचजिस
मनिआय॥लष्योमधिलालनिजालप्रकास॥कीयोपुनभागदरीनिनिवास॥१५२॥वार्त्ता॥फेरकैसेहै॥अविसुर्यतेतमको
जोहैतोमसंवूहसोपरायभागकरके अरुइनपंचानिमायीनहैकरकेसद्मजोघरतिनोमैआयधर्योहै फेरतिनोकेमध्यलाल
निकेजालसंवूहकोप्रकासदेष्या यातेफेरतहांतेभागकेदरीननमैपर्वतनिकीकंदरानिमैनिवासकीयो तोटकछंद॥रतिसो
जसवैप्रतिगेहधनी॥सवितानवितल्पनिकांतिवनी॥सुषिडासनचीनअमोलनिके॥उपधानसुगोलकपोलनिके॥१५२ वार्त्ता

33A

झालरविमलमुकैसकीझिलमिलातचहुंकोद॥ मानोसरसौदामनीदमकतललितपयोद॥ १४५॥ वार्त्ता॥ विमलनिर्मलमुके
सकीझालरजिसवितानकोचारोतरफझिलमिलातहै मानोललितसुंदरपयोदमेघमैसोदामनीवीजुरीदमकतहै गीतछंद
तातरकुसमसरासनआसनआसीनपाकसासनहर॥ हैकरन्रपतविलासनविलसतलसतविविधविबुधनिकर॥ १४६॥ वार्त्ता॥
तिसवितानकेतरेकुसमसरासनकामदेवऔपाकसासनइंद्रइनकेसमानजोहैन्रपतराजासोआसनपरविराजमानहैकेविलास
निकोविलसतहै औसतअष्टजोहैविविधअनेकतरहकेविबुधपंडततिनकेलसतसोभितहै विबुधमैंश्लेषपंडतऔदेवता॥ मा
लतीछंद॥ वियोगनरोगअभोगनक्रोध॥ नआधनव्याधनवादविरोध॥ सदान्रपलेतसभैविधिसोध॥ लसैवहुमोदनिसोअविरोध
१४७॥ वार्त्ता॥ अविरोधमहिलकैसोहै॥ वियोग॥ रोग॥ अभोग॥ क्रोध॥ (सर्वजरानही॥ पेरआधमनकीपीडा॥ व्याधतनकीपीडा औ
वादअरुविरोधइनतेहीनहै क्योंसवप्रकारकनकेसदाजाकीसोधखवरराजालेतहै यातेवहुतमोदआनंदतिनसोंमहलसोभतहै
पवंगमछंद॥ वरनिकेतमखकेतरचेसुखहेतहै॥ अधमधऊरधविमलविपुलछविदेतहै॥ चित्रनिचित्रतिचारुचोरचितलेतहै॥ हास
विलासहुलासप्रकाससमेतहै॥ १४८॥ वार्त्ता॥ कैसोअविरोधहै वरश्रेष्ठहै निकेतघरजामै मानोमखकेतजो हैकामदेवतानेरचेहै॥
परमसुंदरहै सुखकेहेतकारनहै जिनसोंसुखहोतहै अधनीचे औमध्य औउच्च वहुतनिर्मलछविकोदेतहै चारुसुंदरचित्र
निसोंचित्रतिहै चितकोचुरावतहै हासऔविलासऔहुलासप्रसन्नता औप्रकासइनकेसंजुक्तहै पुनःछंद॥ रसनावाननिवनकवद
नअसमर्थहै॥ विचिविचिजटतमुकरदुतिअमलअकत्थहै॥ प्रतिविंवततिनमध्यचित्रअवरेवीये॥ पदपदगुनगुनवरनवरनम
वदेखीये॥ १४९॥ वार्त्ता॥ वानजोहै घातैतिनकोजोहैवनकवनावतिसकेवदनकहनकोरसनाअसमर्थहै रसनातेवरन्योनहीजा
त॥ तिनकेवीचवीचमैजडेहुयेजोहैमुकरसीसतिनकीदुतिअमलनिर्मलहै औअकत्थहै कहीनहींजात तिनदर्पनोमेचित्रप्र

३५ स्नीचनिकी॥ औरैनमोमताकीसवारीवनाईहुईरचीहुईहैआसपासरूमनसिफलनिकीवारीजहा पन्ननिकेजटतपानदानध
रेहै औ अलताअमहावरकेकौललालनिकेजटेहुयेधरेहै औहरमनिजोहैगजमोतीतिनकेहारनिकोजहामनकेहरनवारोप्रकासहै
35 गजकाजरतासोभरीहुईनीलमनिकीसुंदरकजरोटीधरीहै।।नमदकस्तूरी घनसारकपूर कुंकमकेसरइनतेआदिदैकरऔ
रवहुतसुगंधनिकेपदार्थनिकीजहांसुवासफैलरहीहै औसोजसामग्रीमदपानकीऔगायवेकीइनतेसुंदरनीकोलसतहै व
जराजऔनिसचंदतिनकीछवितेमगराजकोनिवासनीकोसोभितहै दोहा॥ औरौरतिकीसोजवहुकहानभयविस्तार॥चतुर
चारुपरिचारकाधरतसुजारसुधार॥१५८॥वार्त्ता॥इनतेआदिलैकेऔरभीरतिकीसामग्रीवहुतहै विस्तारकेभयसोनहीकहीचा
रुसुंदरजोहैचतुरपरिचारकादासीसोजिसकोवनायवनायकेधरतहै हरीछंद॥भटपारसीली॥नौवेछवीली॥मातंगगौनी
नैनानिनोनी॥१५९॥वार्त्ता॥भटपादासीकैसीहै रसीलीरसभरीहै औछवीलीछविवारीजिनकीनवीनवयकहीयेवहिक्रमहै
फेरमातंगहस्तीतिनकेसमानजिनकोगमनहै याहीतेनैननिकोनोनीसुंदरलागतहै कवित्त॥धूपधूमतिमरप्रकासितवदनचं
दहसनजुन्हाईकचखंभकुंदकीकली॥पादांगदपायनसुगातकोसवासहेतआयेवूलककजनिकेकुणातकिधोंअली॥कविरामदी
पतिदिपतिदेहदीपनिकीराजैकुचकोकनिमैसोताजलजावली॥गरहीरहितमैनचापकेलगेहनिमैछ्वाछविछाईकेदिन
व्यंगयह मानोकामदेवचौंकीदेतहै कैसेकेलघरहै जिनमैदिनहूविषैछपाराजकीछविसुंदरछाईरहितहै सोजितावतहै
धूपकोजोहैधूमधुवांसोईतिमरअंधकारहै औवदनमुखसोईचंद्रमाप्रकासतहै मुसकानसोईचांदनीहै औकचवारसुगं
जोहैखंभआकासतामैकुंदकीजोकलीहैगूंथीहुईसोईमकहीयेतारेप्रकासितहै॥औपायनिमैजोपादांगदनूपरसुगातहै नर

३४A ध्या

कैसेसदनहै जहांरतिसंभोगकीजोहैसंपूर्नतोजसमग्री सोघरघरप्रतिघनीवहुतहै विराजैचंदोयेतिनकेसहिततल्पजोसेज सो
तिनकीकांतिजोसोभासोवनीहै चंदोयेजिनपैतनेहै यह अर्थ॥जिनपरअमोलचीरदस्त्रोंकेसुचिपवित्रआसनविछावनेहै ग्रौ
सुष्टजोहैगोलकपोलतिनोकेजिनपैउपधानतकीयेहै तोटकछंद॥वहुफूलनिकीवरमालनई॥मकरंदपरागसुगंधमई॥
तिनमैसुभकंदुकफूलनिके॥छविदेतभलेदुहुकूलनिके॥१५४वार्त्ता॥वहुतफूलनिकीजहांवरश्रेष्ठअरुनईनवीनमालाहै मक
रंदपुस्पकेरसअरुपरागपुस्पकीरजग्रोसुगंधइनसोमईमिलीहुईहै॥तिनमैफूलनिकेसुभकंदुकजैनहै सोदुहुतरफोकेम
लीप्रकारछविदेतहै॥दोहा॥चषनिचाहिचाहतचिढतिउलहतसरसमनोज॥मजोसुमनिहारनिलसततल्पतकनिवत्तोज॥
१५५॥वार्त्ता॥तिनोकेचाहतदेषतहीचषनेत्रनिमैचाहनाचढतहैक्याहोतहै अरुसरसअधिकमनोजकामदेवउलहतउपजतहै
सोक्याहै॥मानोतल्पसेज्याकूपीजोहैतरुनिस्त्रीताकेपुस्पहारनिकेविषैवत्तोजकुचलसतहै॥ ॥स्वेतपीतगोलरैचिकै
तनीमुकेसकी॥सीगहेकरावलीदिनेसग्रोनिसेसकी॥लत्तलत्तदत्तग्रत्तस्वत्तचौंधजातहै॥जारजालकेकिधौंकुरंगत्रासघातहै १५६
वार्त्ता॥जहांचिकैजोहैकिनातांतासैस्वेतसपेदअरुपीतपीलीयांजोहैगोलरांसोतनीयांहै सोदिनेसजोहैसूर्यग्रोनिसेसजोहैचंद्रमा
तिनकीजोकरावलीहैकिरणोंकीपंगतीकीसीसोभाताकोगहेक्यापकरतहै ग्रर्थकियावतहै तिनकोलत्तलत्तक्यादेषदेषकेदत्तच
तुरोंकेजोहैग्रत्तनेत्रस्वत्तनिर्मलसोचौंधघातहै ग्रथवाजारक्याजालजानकरकेकुरंगजोहैमृगसोभयघातहै कवित्त॥मृदुतासू
घटघटगिलमगलीचनकीमैनकीसवारीसुमनसवारीग्रासपास॥पन्ननकेपानदानलालनग्रलताकेजहरमनिहारनकोम
नहैंरनहैप्रकास॥धरीगजमरीमरकतकजरौटीचारानमदघनसारकुंकमादिकीसोवास॥सोजमदपानगानकीतेडुतिवानल
सैसुपावजराजकीतिमृगराजकोनिवास॥१५७॥वार्त्ता॥पश्चरनतिनकोसुखदायककहैमृदुताकोमलतागिलमनिकीग्रोग

३६ कवर्षारितुसमहै अथवासुषदायकधर्मितिनकेपोषनकोवर्षारितुकेसमहै पुनः॥विसदसुजसचंदनचर्चितसी॥सुरकुमारसुत
सुषदअदितसी॥पतिव्रतभारधरनध्रुवधितसी॥दुराचारअघअमनसरितसी॥१६५॥वार्त्ता॥विसदउज्वलजोहैसुंदरजससोई
36 चंदनतासोंचर्चितसीहै सुरदेवतातिनकेवालकनिकेसमजोहैसुतपुत्रतिनकोसुषदायकअदितिसीहै देवमाताहै पतिव्रतकोजो
भारताकेधारनकोध्रुवनिश्चलअधितप्रथ्वीसमहै औदुराचारजोहैषोटेकर्मसोईभयेअघपापतिनकोअमनसरितश्रीगंगाजीसमहै
इंद्रविजैछंद॥याकोनामअलनिभीहै॥भरतवंतरूपाविनपासुभपुन्यरसालहकीकलिकासी॥संपतिश्रीपतिसेवपरायनराजत
मोदपयोधरमासी॥सीलसुधाईसुधाकीधुनीसुचिसंकरसीसतमीसकलासी॥श्रीमृगराजमहीपतिकीमहिषीसुनिया
रअगारप्रभासी॥१६६॥वार्त्ता॥भरतवंतसरीरकोधारेहुयेरूपाहै अथवा भरतवंतरूपालज्पाहै अथवासुभकल्पानरूपीऔ
पुन्यरूपीजोहैरसालहुदत्तताकीकलिकाकलीसीहै अथवापुन्यसुंदरजोकल्पानरूपीवृत्त अथवासुभआछोपुन्यरूपीवृ
त्त याकोवहीअर्थ॥संपतिकोअर्थकल्पानरूपजोयतिहै कथावेदरीतकरकेजोस्वामीहै सोईहैजाकेश्रीपतिविस्नुतिनकीसेवामेप
रायनहैलीनहै याहीतेमोदआनंदरूपीजोहैपयोधसमुद्रतामैरमालक्ष्मीसीराजतहै सीलऔसुधाईसुधतासोईसुधाअं
वततातकीधुनीनदीहै औसंकरशिवजीतिनकेसीसपेतमीसचंद्रमाकीजोकलाताकेसमसुचिउज्वलनिर्मलपवित्रहै वा
मैकलंकनहीतैसीहै अथवासुनियारसुंदरजोहैअगारघरताकीसोभासीहै ऐसीसोहततहै॥दोहा॥विनैकुलीनप्रवीन
सषिकरतसीसपदनाय॥मालनिलालनिकरसरसनषसुषमाअधिकाय॥१६७॥वार्त्ता॥जासमैकुलीनऔप्रवीनसषीचनेंविषै
सिरनिवायकेवेनतीकरतहै तासमैतिनकेमालजोहैमस्तकतिनविषैजोहैलालरतनतिनोकरकेपगनिकेनषनिकीसुषमासर
सअधिकहोतहै अडिल्ल॥चित्रतिरुचिरसालम्कासोभित॥लषअसुरारनिकेमनलोभत॥पटसालाहिमहरतगरूरति॥दिवी

है सोकिघोंकोसनिमैनिवासकरवेकेकारनकंजकमलतिनकेनिकटआयेहुयेअलीभ्रमरकुगातहै गुंजतहै औदेहदीपनिकीजहादीपात
सोभादिपतहै औकुचजोहैस्तनसोईकोकचकवेतिनकेवीचसोतानदीनिकेसमानजलजावलीजोहैमोतीयनकीमालासोराजतहैसोभत
है चकवेविछुरेहुयेनदीकेकूलवैठेहै ऐसेरात्रकीछविदिनहूंभयेरहितहै यातेकामकोधनुअचढ्योईरहितहै यहअर्थ॥पादाकुल
नवलचित्रसारीछविसानी॥जामधिलसतनृपतिपटरानी॥ललितअलिनकरकंजनिलाली॥सुखमानसपररजमराली१६१
वार्त्ता॥नवलनवीनओछविकेसंजुक्तऐसीजोहैचित्रसारीचित्रामकीसालातामैनृपराजाकीपटरानीसोभतहै कैसीहै ललितसुंदरजो
हैअलिसखीतिनकेकरहाथसोईभयेकंजकमलतिनकरकेलालीलडाईहुईहै अनेकसखीसेवाकरतहै मानोसुखरूपीजोहैमानसरोवर
तामैपरकहीयेतत्परलीनहुईराजमरालीक्याराजहंसनीहै॥पुनः॥पुनतासुधीनिपुनतासाला॥सुभगुनगनमनिमंजुमैंलमाला नी
तववचनसुमनसुलतिकासी॥तुलसीकुलअहदीपसिखासी॥१६२॥वार्त्ता॥फेरकैसीहै तिसकीजोहैसुधीश्रेष्ठवुद्धकैसीहैनिपुनताचतु
राईकीसालाहै सुभभलेजोहैगुनतिनकेजोहैगनसंवूहतेईमणीयाहैतिनकीमालाहै औनीतकेजोहैवचनतेईभयेसुमनसतिनकीलति
कावेलिसीहै तुलसीजोहैअपनोवंससोईभयोगृहतामैदीपशिखाकेसमहै प्रकासकरनवारीहै पुनः॥परमअयनगुनलद्दनद
री॥गुरस[illegible]जीवसजीवनमूरी॥चितविचारजनुरचीविधाता॥प्रजाजियनपालनहितमाता॥१६३॥वार्त्ता॥अयनदोयगुनतीनयातेवर्त्ती
सजोहैलछ[illegible]नपरमश्रेष्ठतिनोकरवेकेफरनहै औगुनजनोकेजीवकीसजीवनीवूटीहै मानोविधाताब्रह्मानेचित्तमैविचारकेप्रजाकेजो
हैजीवतिनकेपालनकेनमित्तमातारचीहै पुनः॥उनईरहेअमासुघटासी॥कोपरीतसंभवतघटासी॥साध्वीअमलधर्मसमुदाई॥
सालसुखदवरवारितुगाई॥१६४॥वार्त्ता॥जाकेचित्तविषेअमाजोहैसांतिसोघटासीउनईरहितहैसुकीरहितहै तामैकोपकीरीतघटा
वीजुरीसीउपजतहै छिनमात्रहैकेमिटजातहै साध्वीजोहैपतिव्रतास्त्रीतिनकेजोहैनिर्मलधर्मसोईभयेसालधान्य तिनकोसुखदाय

37 जामंगनराजजोहैश्रीफतेसिंहजी संपूरणस्वारथकोअरुपरमारथको श्रीव्रजराजश्रीलालचंदकोहृदैविषैधरकेसाधतहै औरअ
त्रयहलोकपरत्रपरलोकदोऊनकोसाधतहै बुधसंबोधन॥ पद्धरी॥ छुद्राअंगूरखारकबदाम॥ नवसेवगरीकरकादिवाम॥ सम
सुधास्वादराषेसुधार॥ सुभमेवनिकीसालामंमार॥१७३॥ वार्त्ता॥ मेवाकीसालाकैसीहै॥ छुद्रादाष॥ औअंगूर॥ षारकछुहारे॥
औबदाम औनवीनसेव गरीबोपे॥ औरुभीकरकअनारइत्यादिअनेकतरहकेमेवाजामैबनायकेराषेहै कैसे जिनकेस्वादसुधा
अंबतकेसमहै दोहा॥ जिनकरिहरिहरहराहरसुरमहिसुरसबतोष॥ नरलाषनिकेपुनकरतअभिलाषनिपरपोष॥१७४॥ वा
र्त्ता॥ जिनमेवनिकरकेहरिविष्णुहरशिव हराभवानी हरइंद्र सुरदेवता महिसुरब्राह्मन इनकोतोषनिकरिके फेरअनेकलोकनि
केजोहैअभिलाषतिनकोपोषनकरतहै दोहा माननीनिकेमानवसनिपटनिठुरमनआहि॥ अनुनयकरिनयरतिपरतमानसा
लकामाहि॥१७५॥ वार्त्ता॥ मानसालिकाकैसीहै जामैमाननीजेहैमानवतीतिनकेमानकेबसजोहै निपटअतिसयकठोरमनसो
अनुनयमनावनकरिकेअरुनयनम्रहैकरिकेरतिप्रीतमैपरतहैलीनहोतहै दोहा॥ सोभितअगनततनगनिसतनगसालअ
भिराम॥ करननरतनउपरतनअक्षतवरनपरमछविधाम॥१७६॥ वार्त्ता॥ अगनतअनेकरतनोकेसहततनगसालारतनसालाअ
भिरामसुंदरसोभितहै करनपांचविधकेरतनहै हीरामानकमुक्तामरकतमणिनीलमणि॥ ए पांचमुख्यरतनहै औअक्षतकही
येचारउपरतनहै गुलीया पुष्कराग गोमेद वैडूर्य ए उपरतनहै कैसेहै परमश्रेष्ठहैवरनरंगजिनके हीरे गोमेद मोती ए स्वे
तवर्नकेहै मानक अरुगुलीया ए लालवर्नकेहै नीलमणि अरुवैडूर्य ए कुछएक आकरंगहै कोईमरकतमणिकोनीलवर्न औवैडूर्यको
कर्बुरोवर्नकहतहै मरकतमणि हरतवर्नकीहै पुष्करागपीतवर्नकेहै ऐसे छविकेधाम धारघविसोपूरनरतनहैजामै॥ ललतपट॥
विविधदेसकेसफलजातजुगनरतियलैबप्रमानमोलके॥ दूषनरेषावलयविवर्जितवजैवज्रपदचित्तलोलके॥१७७॥ वार्त्ता॥ हीरेके

36A

जिनकोदेषकेदेवतोंकेमनलोभायमानहोतहै परमश्रेष्टहै
धनमोलवसनपरपूरत॥१६८॥वार्त्ता॥चित्रनिकेसंजुत्तासुंदरसालासोहततहै जिनकोदेषकेदेवतोंकेमनलोभायमानहोतहै परमश्रेष्टहै
घनमोलवस्त्रहैतिनकरकेपूरनहै पुनः॥जलसाला
हिमजोहै हिमंतऋततिसकीगऊरकोपटसालादूरकरततहै विविधअनेकतरहकेजोअमोलवस्त्रहैतिनकरकेपूरनहै पुनः॥जलसाला
ग्रीषमतपषंडत॥चात्रकचित्तविपुलसुषमंडत॥सुचसीतलसुरसरिकेपैकर॥कलसनवलअलिललतलसैवर॥१६९॥वार्त्ता॥
ग्रीषमरितुकेतपकोजलसालादूरकरततहै चित्तरूपीचात्रककोघनोसुषदेततहै सुचिपवित्रअरुसीतलऐसाजोहैसुरसरीश्रीगंगा
जीकोपैजलताकरकेनवलनवीनअरुललतसुंदरऐसेजोहैकलसकुंभसोअलिपूरनश्रेष्टलसततहै॥ललतपद॥गंधएनघनसार
कुमकुमाकुंकमघतरअगंजादिकाजुत॥मनमलिंदआनंदवढावतभावतसरसगंधसालाद्युति॥१७०॥वार्त्ता॥सारशब्दकीअवे
गंधादिशब्दसों॥गंधसारचंदन॥एनसारकस्तूरी॥घनसारकपूर॥कुमकुमागुलाव॥कुंकमकेशर॥अतर॥अरुअगंजातेआदि
लेकरकेअरुभीअनेकजेसुगंधकीवस्तुहैतिनकेसंजुत्ताहै मनरूपीजोहैमलिंदभ्रमरताकोआनंदवढावततहै याहीतेगंधसाला
कीद्युतिसरसभावततहैनीकीलागततहै किंवाअधिकसोभावंततहै॥नाराचिकाछंद॥दारिद्र्यध्वांतघायनी॥श्रीभागभालदाय
नी॥राकेसगोअगर्वकी॥है॥सालाअदोषदर्वकी॥१७१॥वार्त्ता॥धनसालाकैसीहै दरिद्राकोजोहैसंकूहसोईजोध्वांतअंध
कारताकोदूरकरनवारीहै अरुभालमैभागकीजोहैश्रीसोभातिसकेदैनवारीहै॥जाकोराजाधनदेततहै ताकेभालमैभागकीसोभाजा
गततहै फेरकैसीहै राकेसचंद्रमातिसकीगोजोहैकिरनसोजिसनेअगर्वक्यागर्वतेरहितकीकोअर्थकरीहै कलाएकहीअंधकारको
हरततहै सालादारिद्ररूपीअनेकअंधकारनकोनसावततहै फेरकलाभालकोसोभादेततहै शिवजूकेमस्तकपैविराजततहै यातेजिनको
नामचंद्रचूढहै अरुसालाभागकोप्रकासततहै यातेचंद्रमाकीकलाअगर्वितभईहै ऐसीनिर्दोषदर्वकीसालाहै॥सोरठा॥जाकरन
पअगराजस्वारथपरमारथसकल॥उरधरश्रीव्रजराजसाधतअत्रपरत्रवुध॥१७२॥वार्त्ता॥जिसधनसालाकेधनकरिकेरा

३८ टो॥ जोवहुतप्रकासकोकरेसोउत्तम ऐसेहीरेचंचलजोचित्ततकेस्थानहै जिनकोदेखकेचित्तऔरठौरनहीजायसकत सोअख
नोमैजटतराजाकीरतनसालामैलसतहै॥ संजुती॥ गिरिगंधमादनआदिके॥ गुनवंतहैप्रहिलादके॥ अतवर्नजातअदूखहै॥ पर
मानकाद्रमयूखहै॥१८॥ वार्त्ता॥ मानककैसेहै गंधमादनआदिपर्वतनिकेहै आदिपदतेमलयाचलऔसुवेलगिरलीजै औगिरआदि
34 उपलक्षनहै इनतेसंगलादीपऔचीणदेशऔउत्तरदिसाकोसमुद्रलीजै इत्यादिस्थानोकेहै करिप्रहिलादकआनंदकेजोहैगुन
तिनकेधारतहै गुंजाकेतनसेचीकने अरुगोल औभारी औप्रकासकारीऐसेहै अतिचारजोहैवर्नरंगतिनकरकेजिनकीचारजा
तहै जिनमैस्वेतझलकतेद्विजजात॥ जिनमैपीतसोक्षत्री जोपीकोसोवैस्य जामैजरदझलकसोसूद्र फलपूर्वीतजानीये औअ
दूखक्यादूखनोतेरहितहै मंदकिरन रंगमलिन रेखासंजुत दाको चिपटो खरखरा इत्यादिदोषनितेरहितहै पर क्याउत्तमहै
व्रात्पमनही लोहसोभेदनिकीयेभिदतनही घसेसोंजलस्वेतहोतहै ऐसेपरीक्षावारहै फेरकैसेहै अद्रसूर्यतिनकीमयूख
किरणसमहै अद्रमयूखउपलक्षन तासोंदाडिमकंजअसोकपलासगुलाला इनकेफूलनिसे चंदन सिंधूर महावर सिंगर
फ खदर अंगार सारसनेत्र इनकेसदृसहै॥ चुलयाला॥ वसुआकरवसुवरनके चरनवरनकेमानमोलजुत॥ अल्पमदूषनदू
षतनगुननिविभूषतमिलमुकतादुति॥१९॥ वार्त्ता॥ मुकताकैसेहै वसुआठजोहैआकरखानतिनकेहै॥ पन्नग॥ सीप॥ संख॥ ग
ज॥ वांस॥ मेघ॥ मीन॥ सूकर॥ एआठखानहैजिनकी आठहीवरनरंगहै स्वेतमैनीलझलकलसेसोपन्नगऔसंखकेजानीये॥
जिनकीस्वेततामैलालझलककुछकलसैतेगजकुंभनिकेजानीये॥ जिनमैहरतझलकलसैतेवांसकेकहीये॥ जिनमैपीतझल
कलसैतेसूकरकेजानीये॥ जेकेवलस्वेतहीलसैंतेसीपनिकेमेघनिकेमघनिकेकहीये॥ कोईऐसेभीकहितहै स्वेतरक्तसीप
निके मेघकीआभा जिनमैलसैतेमेघनिके॥ जोचित्रवर्नहोयतेमीनकेजानीये॥ औचरनकहीयेचारवरनकेहै स्वेतविप्र॥ ला

37A

सेहै॥सोरठ मगध कलिंद कौसल सौराष्ट्र संगल इत्यादिअनेकदेसनिकेहै औरूहेमाचलके चित्रकूटकेकौनमैभीहोतहै
औवैरागरदेसके सोपारदेसकेभीहै फेरकैसेहै जुगचारजातीजिनकीसफलहै फलदायकहै उज्जलहीराद्विजजातिविद्या
धनदायकहै अरुनतासहितहीराछत्रीहै शत्रुनिकोनासकरतहै पीततासोंहीरावैसहै धनधान्यदायकहै विवहारऔवि
वादमैसोभादेतहै स्यामतासहतसूद्रहै चतुराईकोवीर्जस्तंभकोनीतइत्यादिकोदेतहै ।।फलदायकचारतिनकीजातीहै फेरकैसे
है नरपुरुषहै तियस्त्रीहै क्लीवनिपुंसकहै जोहीराऊंचोहोयषटकौनहोय भारीऔसचिक्कनहोय जलमैभिजायसोंभीजे
नही अग्निमै जलायेसोजलेनही घणसोभेदनिकीयेभिदेनही अतिकठनहोय उज्जलप्रकासहोय सोहीरापुरुषहै ऐसे
हीरेकोराजाआपधारतहै क्योंयहस्त्रीनिकोविवर्जितहै यातेअंतहपुरमैनहीदेत औरजोहीरात्रिकोणहोयपतलाहोय रेषाऔ
विंदुनिकेजुक्तहोय सोस्त्री ऐसेहीरेआपनहीधारत अंतहपुरमैदेतहै जोकेवलपतलेहै सोनिपुंसकहै ऐसेनतोराजाआप
धारतहै औरूनाअंतहपुरमैदेतहै तिरंनकोयोजाधारतहै फेरप्रमान औमोलकहै वुवंजारुपैयेरत्तीइतनेतेलेकेहजाररुपैयेर
त्तीइतनेमोलपर्यंतहै फेरकैसेहै रेषाकेअरुवलयविंदुकेजोदोषहै तिनतेविवर्जितहै जामैमैलीरेषाहोयसोहीरानासकरत
वारोहै वांकीरेषाभयदायकहै काकपक्षरेषादुषदायकहै कौनेसोंमलिनऔविंदुसहितजोहोयसोरोगदायक मैलीविंदुअ
ग्निभयकरतहै षंडतविंदु धनसोभाहरतहै आवर्त्तविंदुभारीभयदायक पर्वताकारविंदुरोगकोदेतहै अरुनविंदुजेगेहं
प्रतीतहोतहै स्यामविंदुसर्वधनहंतीहोय नीलीविंदुव्याकुलतादेतहै स्वेतविंदुमृत्युदायकहै पीतविंदुकुलनासनीहोतहै इत्या
दिरेषाऔविंदुकेदोषजिनमैनही फेरवज्रहीरेकैसेहै वर्जश्रेष्ठहै वज्रकहेसोंजान्योपरीक्षाकीयेहुयेहै षोटेनही॥षार
औषधईमैपायकेहीरेनोएकपहरषरलकरे फेरसहितविचमेलकेएकपहरदले फेरघसे जोनसोहीराघसजायसोषो

तेमनकोमोहततहे ग्रैसीमरकतमणिहै॥नीलमणिकैसीहै॥याहीविधमरकतमणिकीन्याईतीनप्रकारकीनीलमणिहै॥
सिंघलदेसकीउत्तम॥मध्यदेसकीमध्यम निपालदेसकीग्रधम॥कोईकलिंगदेसकीकोमध्यमकहितहै॥ग्रौवरनोके
सहततहै जामैस्वेतगलकसोद्विजवरन॥लालगलकवानीक्षत्रीवरन॥पीतगलकवारीवैस्यवरन॥स्यामगलकवा
रीसूद्रवरन॥फेरकैसीहै॥दुखदायकजोषटदोषसोजिनमैनही॥मुद्रकदोषदरिद्रदेततहै॥१॥पटलकलेसकर
तहै॥२॥ छायादोषग्रतिदुखकीषानहै ३॥ककैरदोषविदेसदेततहै॥४॥त्रासदोषसत्रुकोभयकरतहै॥५॥चित्रकदो
षकुष्टकोप्रकासितहै ६॥षटदोषजिनमैनही॥दोषसंजुक्तनहीग्रहनकरीये ग्ररु छायाजिनमैसूकरग्रादिके
प्रमानहै सूकरसमहै ग्रादिपदसें कोकिलासी मोरग्रीवासी ग्रलसीपुष्पसीइत्यादिजानीये॥ग्रौसूद्रवरनीहै
क्रात्पमनहीजिनकीनीलवरणकीकिरणेछुटे ग्रतिसोभावानहोय भारीहोय सचिक्कनहोय ग्रौरुजोदुग्धमैपाछे
सोंदुग्धकोनीलोकरेसोसूक्ष्ममणि॥ग्रैसीमणिराजाकीरतनसालामैसोभितहै॥कवित्त॥रतनाकरजनितग्ररुनप्रका
समानमानकग्रनुपम्रैरूपरूपकेप्रवाल॥चिक्कनविमलगुरूपीपुष्करागमीत धारतसेंकासग्रंगभासमानसोविसाल॥
दमकतहीरनिसेवरनगोमेदनिकेवैडूरजराजताविडालचषभ्रमम्बाल॥दीरघकठोरस्वघसदमचतुर्विधकेसीकेन
पजीकेउपनगनिकेनीकेजाल॥१०१॥वार्त्ता॥प्रवालमूंगेकैसेहै॥रतनाकरसमुद्रतासें जनितउतपत्तभयेहै किंवा
नितपदग्रागेलगाईये रतनाकरजकहासमुद्रसोंउपजेहै ०कप्रवालनामालतासमुद्रमैहोततहै हरतवरनकीहोत
है॥जववाकोसूर्जकोसपरसहोततहै तवलालरंगकीहैजातहै पाषानतुल्पहोततहै ग्रैसेइनकीउत्पत्तलंकेसब्रादके
प्रकासमैकहीहै फेरकैसेहै नितसदाग्ररुनलालग्रौप्रकाससहितहै॥ग्रनुपमग्रादरजोहैमानकतिनकेरूपकेग्रनुरु

38A

लषत्री॥पीतवैस्य॥स्यामगलकवारोसूद्र॥फेरकैसे मानप्रमानऔमोलइनकेजुगतहै रत्तीप्रमानकोमोलवीसतेवुवेजा
रुपैयेतीकुरहै॥औगंथनिमेलिष्योहै चौहटरत्तीकाजोमोतीहोयताकोकरोटरुपैयामोलहोतहै॥फे[illegible]ती कृत्रिम
ही परीक्षाकरिलीयेहै षार षट्राई लौन गऊमूत्र इनकोमिलायकेवीचमोतीगेरदीजै फेरपात्रकोचुल्हेउपरधरके
।।कपहिरकीआंचदीजै फेरनिकासकेधानाकीभुसीवीचमलै कृत्रिमफूटजातहै सहजप्रकासपावतहै जैसेसहजहै फेरदो
षनिकरकेदूषतनहीहै दोषकौनसे कांतहीन चपटा कठन छोटो मलीन षंडत हलको षरधरो इत्यादिदोषनहीयाही
तेमोतीयनकीसोभागुननिसोंमिलकरिकेविसेषतसोभायमानहै गुनकौनसे भारी निर्मल सचिकन ऊचो गोल उज्जल
अषंडत इत्यादिगुनोकेजुक्तहै जैसेमुक्ताहै जामे चौपईया॥ मरकतपरमउत्तमतुरंगमगधकीअधमासंघलसोहै॥सहम
वर्नवेनवनपनीदिकसरदोषनमुनिमनमोहै॥याहीविधिसंघलमध्यनिपालजसवरननीलमनीहै॥षटदुषदनदूष
नसूकरादिसीछायासहजमनीहै॥१८०॥वार्त्ता॥मरकतमनीकैसीहै॥तुरंगनामादेसकीमनिपरउत्तमहै सुषनिकेऔ
धनकेदेनवारीहै॥औमगधदेसकीमध्यमसिंघलदेसकीअधमहोतहैसोभीजहांसोभितहै फेरकैसीहै सहमहै सूरजकेसन
मुषधरेप्रकासकरनवारीहै औरूसचिक्कनहै फेरवेनजोहै वांसतिसकेजोहैसुंदरपत्रतिनकेसमानहै वरनरंगजिन
कोक्याहरतवरनकीहै आदिपदसों सिरसकेकुसम औदूवऔमोरपच्छइनकेसमानभीजिनकोरंगहै फेरयेसातया
केदोषहै रूषीतनमैअनेकरोगउपजावतहै १॥षंडितवियोगकोदेतहै २॥षरधरीसूगांठगठीलीएदुषदायनी
है४॥औजाकेतनमैभारीहोतहैसोसेवकनिकोदूरकरतहै ५॥औसिषाकेचिन्हवारीधननासकरतहै ६॥औस्याम
मलकवारीमृत्युदेतहै ७॥याकोग्रहननहूनाकरे॥यहवडोदोषहै॥।जोमुनिक्यासातदोषहैइनतेरहिततहै॥याही

४० आकारहै तेमणीहंसगर्भीहै वुद्धकेदेनवारीहै औजिनोमेसरूपदियाईदेतहै औपीतरंगहैजिनकेसोसूर्यमणी विजेको
50 देतहै औजिनकेस्वेतवर्नहै औविंदुमालाकेजुक्ताहै सोसेसमणीहै सर्वविषकेदूरकरनवारीहै औरुजेनीलवर्नकीम
णीहै मध्यजिनकेमोरपत्तनिकोआकारदेखीयतहै तेमधुरमणीहै अपारदर्वकोदेतहै जेमणीतोतेकीचुंचसमहै औस्वेत
वेंदीकेजुक्ताहै चीकनीहै तेमनकीइछापूरनकरतहै औरुजेनीलकमलसमहै लालरेखाकेमध्यवालालविंदुकेजुक्ताहै
सोवहुतदर्वदेतहै इत्यादिअनेकतरहकीमणीहै पुनः छंद॥ नयमूसनमगपतिकरिसूरतनिसूरतनकरिमगपतिन
पसोहत॥ अनुदिनआदितादिसकलग्रहसूषतनोतदुषप्रकरविघोहत॥१८३॥वार्त्ता॥ नपराजातिनमेभूषनकेसम
परमसोभायमानजोहैमगपति श्रीमहाराजाफतेसिंहजीतिनोकरिकेसुंदररतनसोभतहै औसुंदररतनोकरिकेराजा
सोभतहै सोभूषनऔरतनपरसपरसोभादायकहोतहै याहीतेआदित्यसूरजतेआदिलेकरिकेजोनवोग्रहहै सोराजा
कोसूषतनोतहै विस्तारतहै औदुषकेप्रकरसंवूहको विघोहतदूरकरतहै क्योंनवरतनोकेनवोग्रहदेवताहै माणिकको
सूर्य॥ मुक्ताकोचंद्रमा॥ प्रवालकोमंगल॥ मरकतकोवुद्ध॥ पुष्करागकोवृहस्पत॥ हीरेकोसुक्र॥ नीलमणिकोशनिश्च
र॥ गोमेदकोराहु॥ वैडूर्यकोकेतु॥ ए सर्वरतनराजाकेपासहै यातेराजाकीरक्षासर्वग्रहकरतहै यहभाव॥ चरनाकुल॥
विविधायुधतीक्षनअनियारे॥ सानपानधरजानसुधारे॥ परदलदलनिजदलसरसावै॥ सस्त्रसालिकामधिविपावै॥१८४
वार्त्ता॥ विविधअनेकतरहकेजोहैआयुधसस्त्रकैसेतीक्षनऔअनीयारेअणीयावारे ज्ञानजोहैचतुरतिनोनेसानकरकेऔ
पानआवकरकेसुधारेवनायेहै फेरकैसेहै परसत्रुनिकेजोहैदलतिनोकोदलकरकेक्यानासकरकेअपनेदलकोविजे
कीप्रभासोंअधिककरतहै ऐसेसस्त्रजोहैसोसस्त्रसालिकामेधरेहुयेपविपावतहै॥ दोहा॥ मंत्रसालिकाहोतसुभमंत्र

39A

पक्वातुल्यप्रवालहैजामै मीतसंवोधन हैमीतपुष्पनागकैसेहै चीकने निर्मलभारी पीतवरनके जेअपनेअंगमैभासमा
नसूर्जकेसमानसंकासकोधरतहै ग्रैसेहै॥गोमेदकैसेहै जिनकेरंगहीरनिकेसमानदमकतहै॥वैडूर्जकैसेहै विडालने
त्रकेभूमपालराजाराजतहै ग्रारघीउपमाकरिविडालचषकेसमानजानीये फेरवैडूर्यकैसेहै दीरघवडेहै कठोरहै नि
र्मलहै ग्रैसेचारवियकेजोहैउपनगक्याउपरतनतिनकेजालसंदूह सीसोभाकेसदमधरहै ग्रोश्रीकतेसिंहराजाकेचित्त
केघरहै जिनकोजीवउनमैवसतहै मनभावतहै यहभाव ग्रोनीकेश्रेष्टहै ग्रदोषहै ग्रैसेनवप्रकारकेरतनहै ग्रोइनहीम
निनिकीजातमै।कग्रोरूमनिहैजिसकोमुहराकहतहै सोभीजिससालामैग्रनेकहै सोजितावतहै ललतपदछंद॥का
मरूपगिरपरमसिषरतेचलत परमधिजेमनिग्रावत॥विविधरूवरनवलयरेषनिजुतरूपदनामतिनकरिपदमा
वत॥१८२॥वार्ता॥कामरूपदेसविषे।कजोहैपर्वततताकेपरमश्रेष्टसिषरते परमपदतेदेविनिकेस्थानरूचनकीये
कैसोसिषरहैपरमहै जापरइंदराग्रोकमष्यादेवीवसतहै ग्रैसेसिषरतेजलकोप्रवाहचलतहै ताकेमध्यमनिग्रावतहै मु
रायहीकोनामहै सोजिनमणीयोंकीउतपतीतहांकीहैतिनकरिकेराजाकीनगसालासोभतहै फेरवेमणीकैसीहै विविध
ग्रनेकतरहकेजिनकेरूकहीयेभलेग्रानंददायकवरनरंगहै लालरंगनिकीमणीधनधान्यकीवृद्धिकरतहै सहितके
रंगकीमणीग्रासनादिकोदेतहै ग्रोजिनोकेमुखोमैतीनतीनरेखासुंदरहै सोमनकीइछापूरनकरतहै ग्रैजिनकोस्वेतरंगहै
ग्रोतरपंचरेखाहै सोनीलकंठमणीहै रिद्धसिद्धकोदेतहै ग्रोजिनकोकंचनसोवर्नहै ग्रोपंचरेखाजुतहै ग्रोगुंजाकेतनसम
जिनकीग्राभाहै तिनकोगुडरनामहै पजनकीयेसोसूषदेतहै ग्रोजेमणीजलकीवुंदकेस्पर्सतेहीनासीलसतहै ग्रोमध्य
जिनकेमंडलदेषीयतहै सोराजमणिकहावतहै सर्वदर्वदेतहै ग्रोजिनोकेकंठमैमेघसमरेखाहै मध्यजिनकेहंसनिके

वरननिकरीये फेर एक एक सालाअमितपदारथनिकेसहितदेषीयतहै ।।चतुष्पदीछंद।।नंदनसहिकारीधर्मप्रहारी
प्रमुदावनमनहारी।।मंदरनिपिछारीछविसुषकारीमिलतअमिलतनेहारी।।तरुघनघनभारीसुमनसवारीसुमनसतरुअनुहारी
मिलदिसनिमंझारीजलनिविथारीअलिप्पारीनिरहारी।।१८५।।वार्ता।। राजाकोप्रमुदावनकैसोहै।।नंदनजोहैइंद्रकोवागताकोसरूचा
रीसषाहै।।अर्थयहकिनंदनवागकेसमहै फेरकैसोहै धर्मजोहैतपतिसकोप्रहारीदूरकरनवारोहै औमनहारीकहामनकेह
रनवारोहै।।अतिसुंदरहै।।फेरकैसोहै जिसवनकीसुषकारीसुषकेकरनवारीजोहैछविअपवासुषकारीजोहैवनतिसकीसोभाराजा
केमंदरनिकीपिछारीमिलतअरुअमिलतदेषीहै मंदरनितेभिन्नभीहै अरुमंदरनिकेमध्यभीहै फेरकैसोहै जामेतरुवृक्षघ
नसघनहै सुमनसजोहैपुस्पतिनकेसहितजिनकीडारीसाषाघनसघनहै फेरवृक्षकैसेहै सुमनसदेवतातिनकेतरुवृक्ष
मंदार पारजात हरिचंदन कल्पवृक्ष इत्यादिइनकेसमहै अैसेवृक्षनिसोंमिलकराकेलताजोहैवेलातिनोनेअलिभ्रमरनिकीप्या
रीजोहैनिरहारीसुगंधसोसवदिसानिमैविथारीहैविस्तृतकरीहै अैसोप्रमुदावनहै जोवागराजाकेअंतहपुरकीनायका
होवे सोप्रमुदावनी।।रूपमालाछंद।।चौकचारकिदारचारिनिवाटिकाअतचारु।।भप्रसूननिकेरचेन्नपमोदहेतसिंगार।।मत्त
भृंगनिजुक्तराजतसुभ्रजालकजाल।।चीरहीरनिमैकिनीलमकीजरीजनुमाल।।१८६।।वार्ता।। फेरवनकैसोहै।।जामैचार
चौंकहै औचारहीकिदारकहीयेक्यारेहै तिनमैवाटिकाअतिसुंदरहै अर्थयहकुसमितहै कैसीहै मानोराजाकेमोद
आनंदकेहेतभजोहैप्रथ्वीतिसनेप्रसूनफलनिकेसिंगाररचेहै फेरवाटिकाकैसीहै शुभ्रउज्जलजोहैजालकफलनिकेगु
छेतिनकेजोहैजालसंवूह सोमतवारेजोहैभ्रमरतिनोकेसंजुक्तसोभतहै कैसे मानोहीरनिकोचीरवाकेतिनमैनीलमजो
हैनीलमणीतिनकीमालापंगतीजरीहै ।।पद्धरीछंद।। वरव्योमकूपदृकहरततीर।।पैसवृक्षमधुरसीतलगंभीर।।पष्य

मंत्रसाला विषै रूम अष्ट मंत्रनिके अनंत विचार होत है

विचार अनंत॥ गुरु मंत्री मतिवंत जहं मंत्र किय्रू रतवंत॥ १८५॥ वार्त्ता॥ मंत्रसाला विषै रूम अष्ट मंत्रनिके अनंत विचार होत है विचार अनंत। अदक्रोधविरोध इत्यादि

40A रूम मंत्र कौन से जिनतें वैरनिकी विपदा होय औ अपने प्रभु को प्रभुता होय औरु जो राजा रूनेताको मदक्रोधविरोध इत्यादि

दूर होय॥ औ अपने स्वारथ की सिद्धिता जामैं न होय औ काहू सों काहू को भेद पाय दैनो मैत्री दूर करन दैनी काहू सों अभेद करनो

काहू सों दया राषनी काहू सों जुद्ध राषनो काहू को पकर लेनो काहू जोरावर सों मिलाप कर लैनो जहां जहां जैसो चहीये

तहां तहां तैसो विचार राषनो सर्ववार्त्ता को अभिप्राय यह अपने राजा को निश्चिंत राषनो ऐसे रूम मंत्रनिके विचार करने पे

रजि समंत्रसाला मैं गुरु वृहस्पत के समान बुद्धवंत अथवा गुरु वडे बुद्धवंत जहां मंत्री वजीर सोभत है कैसे वजीर राजनी

तके जाननवारे राजा के भक्ति औ पवित्र पापबुद्धि जिनमैं नही सर्ववार्त्ता के जाननवारे कुलवान षमावान जसवान सी

लवान रूमट मंत्रनिमै प्रवीन ऐसे मंत्री है जिनकी बुद्धि कैसी है पंच अंग जोतस के तिथ वार नक्षत्र जोग करन अथवा पं

च अंग सहाय साधन उपाय कोल देस इनके जुक्त औ षट्गुन संधि विग्रह जान आसन द्वैधीभाव आश्रय इनके जुक्त औ

चौदा विद्या के जुक्त औ तीन काल के ज्ञान जुक्त औ जामैं काहू की गमन होय सो वार्त्ता जान लैनी ऐसी बुद्धि के जुक्त मंत्री है किधौं स

रीर धारे हुये मंत्र ही विराजत है॥ दोहा॥ सघ असनसाला जहां देव कुदेव रूआर॥ कवि कोविद को कहि सकै असननि के प

रकार॥ १८६॥ वार्त्ता॥ असन भोजननि की साला कैसी है सघ पवित्र है जहां देवतानि से पवित्र कुदेव ब्राह्मन रूआर रसोई के

करनवारे है तामैं भोजननि के जो परकार है तिनको कौन सो कवि औ कोविद पंडत है जो वरन सके॥ दोहा॥ कहं लग वरनो

औरहू रूम सालिका अनंत॥ एक एक अवलोकीयत अमित पदारथ वंत॥ १८७॥ वार्त्ता॥ औरु भी कवियनि की साला पंडतनि

निकी साला कपोतादिक पंषिनि की साला सिंगार साला गजसाला हयसाला रथसाला इत्यादि अनंत अनेक है ते कहां लग

४२ कअभीच॥ वहुवेनमुक्तिपन्ननिमेंमार॥ जनुझलकतललकतचषनिहार॥१५४॥ वार्त्ता॥ फेरकैसीसोभाहै सर्वंहीदलपत्रसर्वपत्र
निमैकिलकतदमकतहै परस्पर औतिनपत्रनिकेवीचवीचकोरकजेंहैकलीअभीचसुंदरसोदमकतहै॥ तिनकीकैसीसोभाहै मा
५२ नोवेनवांसकेजोहैमोतीसोपन्ननकेवीचझलकतहै॥ जिन्हैदेषकेनेत्रललचातहै देषनकीअभिलाषाकरतहै कलीमोती पत्र
पन्ने औकलीभीनिर्मलहै तिनमैपत्रनिकीहरियाईझलकतहै यातेवांसकेमुक्ताहै क्योंतिनमैभीहरीझलकहोतहै पुनः॥ सि
तनीलसुमननहिअरुनपीत॥ जनुपन्ननिजटातुकुहातनीत॥ गोमेदवज्रनीलमसभाग॥ मानकप्रवालपुनपुष्पराग॥१५५
वार्त्ता॥ सितस्वेतवर्नके नीलवर्नके अरुनलालवर्नके पीतवर्नकेपुस्पजेपत्रनिमैझलकतहै तेकैसेहै पुस्पनहीहैपत्रनिमै
मानो गोमेद वज्रहीरे नीलमणी मानक प्रवालमुंगे पुष्पराग इत्यादिरतनपन्ननिकेवीचजटेहुयेसोभतहै स्वेतपुस्पगो
मेदअरुहीरनिसम नीलपुष्पनीलमणी लालपुस्पमानकअरुमुंगे पीतपुस्पपुष्पराग पत्रपन्ने मानोवागरतननिकी
कोहै पुनः मधुव्रतपरभृतसुकसारिकादि॥ निजनिजसरूपलषलषअल्हाद॥ पावतप्रगटावतप्रेमभूर॥ कलगुंजतकूंजत
हैअदूर॥१५६॥ वार्त्ता॥ मधुव्रतभ्रमर परभृतकोकिला सुकतोते औसारिकामैना इनतेआदिलैकेजितनेपक्षीहै सोतिन
पत्रनिमैअपनेअपनेसरूपकोप्रतिविंवदेषदेषकेआल्हादजोहैआनंदताकोपावतहै॥ औभ्रमरवहुतप्रेमकोप्रगटावतहै
कलमनोहरगुंजतहै औकूंजतहै अदूरनिकटह्वैकरिके पक्षीजानतहै।औरुपक्षीहै अपनेप्रतिविंवनिकोवोलतदेषआ
पवोलतहै ऐसोविलासहैजहां॥ कवित्त॥ सेतमैलसतनीलवरनअरुनपीतनीलमैअरुनपीतसेतजोहीयतहै॥ अरुन
मेपीतसेतनीलकीजगतजोतिसेतनीलपीतमैअरुनसोहीयतहै॥ वरनहींवरनहरतमैहरतआपवरनवरनहींमैम
नमोहीयतहै॥ वातलगैसवैदमकतसुभहींमैतवहगनिकीहगकोदरूपदाहीयतहै॥१५७॥ वार्त्ता॥ वागकैसोनिर्मलहै

41A

तिसवागकीजोहैएककहरतदिसाताकेतीरएकव्योमकूपहै याको
गमनतररहटघरीनआय॥परपैचादरपैषिप्रजाय॥१५०॥वार्त्ता॥तिसवागकीजोहैएककहरतदिसाताकेतीरएकव्योमकूपहै याको सोजलरहटजोहैरहट
सकूपहै कैसोहै जामैपैजोहैजलसोस्वच्छनिर्मलहै औमधुरमीठोहै औसीतलहै औगंभीरहै थोरानहीं सोजलरहटजोहैरहट
ताकीघरीनिमैआयकरकेफेरअपनेमार्गमैगमनतहैजातहै ताकेजैवेकोमार्गवन्योहै तामैहैकरजातहै फेरवहजल पैचादरजो
हैजलचादरताकेऊपरपरकरकेक्यागिरकरकेषिप्रसीघ्रजातहै॥पुनः॥लघुनहिरतिहैअघनिसदाप॥नितयानतटारलतर
नितापा॥समकालहरतछविआलवाल॥अंकुरतअंकुरनिकीविसाल॥१५१॥वार्त्ता॥फेरवहीजोहैसदापअघअजलघुकही
येछोटीजोहैनहिरैतिनविषैहैकरिकेअघजोहैवृक्षनिकेमूलतिनकोपालतहै तरनिसूर्यकेतापकोदूरकरतहै सूर्यको
तापवृक्षनिपैहोननहींदेत याहीतेआलवालजोहैवृक्षनिकेतरेपानीरहिवेकेस्थानतिनमैअंकुरितकहीयेउठदेजोहैअंकुरतिन
कीहरतसोभासर्वकालमैवहुतरहितहै॥पुनः॥सरितकूलतकायरकरादित्य॥सपरतप्रतिविंवनिव्याजनित्य॥यातेअतिसीतललहि
लहात॥छविनवलअमललैजगमगात॥१५२॥वार्त्ता॥फेरतिसजलवीचवृक्षनिकेवेलनिकेप्रतिविंवपरेहै तिनकीकैसीसोभाहै त
रुवृक्षअरुलतिकालतासोआदित्यसूर्यकीषरतीक्षनजोहैकरकिरणैतिनकोसहारकरकेक्यागरमीसहारकरकेप्रतिविंवनिकेवहाने
जलविषैनित्यसपरतहैक्यास्नानकरतहै प्रतिविंवनिकोतोएकव्याजहै औकरतैहैमज्जन॥याहीतेअत्यंतसीतलऔलहिलहातहै नव
लनईअमलनिर्मलऐसीछविकोपायकेजगमगातहै पुनः हरआतपपायतनोतजोति॥नभमैघटानिकीघटाहोति॥करअंतरहूनि
रषीनजात॥चषचाहिचाकचकचौंधयात॥१५३॥वार्त्ता॥हरसूर्यअरुपवाचंद्रमातिनकेआतपतेजकोपायकरकेतिनकीजोततनोतक्या
विस्तृतहोतहै औवृक्षनिकेदलनिविषैतेजेघटानिकसतहै तिनकीआकारवीचविषैघटाहैजातहै नेत्रनिविषैअंतराकारिकेभीवहषकिल
षीनहींजात तिसकेचाकचकप्रकासकोदेषकेचषनेत्रचौंधयायजातहै पुनः विलकातसवहीदलदलनिवीच॥तिनवीचवीचकोर

प्रधानसुसाहवघनेवहुतचलतहै औअनुगतक्यापाछेअनुचरदाससोभासोंसनेहुयेजाततहै औकंचनस्वर्नकेनिर्मतस्वेडुयेहैसुंदर
दंडजिनकेतिनकोलेकरकेअैसेजोहैप्रतिहारचोपदारसोअगाढीचलततहै॥हाकलकाछंद॥सुषदकरननरविदिसनिश्चये॥सुन
समअवनप्रमुदितभये॥इहिविधिप्रतिदिनसहतसभा॥निरषतनववनविसदप्रभा॥२०३॥वार्त्ता॥जासमैभूपतिआयेतासमैसुष
दायकजोहैरविशब्दकरनपंचविधिकेसोचारोतरफछायगये॥वाजेवजनलगे सर्वाजीवजिनकोसुनकेप्रमुदितप्रसन्नभये इ
सप्रकारसभाकेसहतराजदिनप्रतिक्यानित्यनवीनवनकीजोविसदउज्जलप्रभासोभाहैताकोनिरषतदेषतहै॥दोहा॥पुरवनप
आगमनतेचतुरविमलमदुकंद॥विविधवसनकरचितहरननरचिराषतमसनंद॥२०४॥वार्त्ता॥राजाकेआवनतेप्रथमहीं
विमलनिर्मलमदुकोमलकंदसुषदायक औविविधअनेकतरहकेजोवस्त्रहैतिनकरकेचित्तकेहरनवारीपरमसुंदरअै
सीमसनंदवागविषैचतुररचिराषतहै॥पद्धरीछंद॥हरनिर्मतभद्रासननवीन॥राषतसुधारतापरप्रवीन॥तापरअसी
नन्पहोतसूर॥जनुलसतउदैगिरसिषरसूर॥२०५॥वार्त्ता॥फेरतिसमसनंदपर हरनिर्मतस्वर्नकोरच्योहुयो नवीनजो
हैभद्रासनराजाकोसिंहासनसोसुधारवनायकेराषतहैधरतहै तिसआसनपैसूरसुभटजोराजाहै सोआसीनहोतहैविराज
तहै॥तवकैसोसोहततहै मानोउदयाचलपर्वतकेसिषरपरसूरसूर्यलसतहै॥कवित्त॥दारदतिमरजातकुमतविलातरातऔरुनि
केगुननप्रकासितनषतदाम॥वरसातचहुंधाप्रतापकीमयूषैभरसुषसरसातमित्रचक्रनिकेधामधाम॥हेरीयतछुद्रषटपारष
लपेचकनसाजैकविकंजअक्तअलिनिकेराजैग्राम॥कुटलकमोदनिकेरोदतअमोदहोतचोरनिचकोरनिकेसोमेनीतपंथवा
म॥२०६॥वार्त्ता॥पाछेराजाकोसूर्यसमकहिआयेहैताकोनिर्वाहकरतहै॥सूर्यकेउदैमयेअंधकारजाततहै राजाकेआसनपैविरा
जैदारदरूपीतिमरअंधकारजाततहै फेरसूर्यकेउदैतेरातजाततहै इहांकुमतिजोहैवुरीवुद्धसोईभईरातसोविलातदूरहोततहै रा

42A

स्वेतरंगविषैतोनीललालपीत।रंगलसतहै औनीलवरनमैलालपीतसेत।वरनजोहीयतदेषीयतहै औलालवरनमैपीतसेतनीलइ
नकीजोतजागतहै औपीतवरनविषैसेतनीलअरुन।रंगसोहतहै औवरनकहीयेचारहीजोवरनरंगस्वेतनीललालपीत।हरत
रंगमैमनमोहतहै औहरतरंगकीसोभाइनचारहीवरनमैझलकतहै ऐसीवरननकीचित्रताहैजहां औजवपवनकेलगेतेचंच
लताहोतहैतवसर्वहींवरनसर्ववरनोविषैदमकतहै वासमैनेत्रनिप्रतीतनहीहोतकिकौनसेसमैकोनसोरंगझलकजातहै तरल
ताकरकेदृष्टनहीपरत याहीतेदृगनेत्रनिकीदृगकोदृष्टकोदर्पजोहैगर्वसोदूरहोतहै ऐसोप्रमुदावनहै॥मधुमानछंद॥जि
हमध्यदेस॥सोभितसुदेस॥वसुकौनवान॥असहौदजान॥१९८॥वार्त्ता॥जिसवागकेमध्यदेसविषैसुदेससुंदरसोभितहै॥
वसुआठजिसकेकौनहै हेजानचतुरऐसो।कहौदहै॥तिलकाछंद॥याहीकोडिल्लकहितहै॥प्रतिकोननये॥जलजंत्रठये॥
इकमध्यलसै॥जगअक्षग्रसै॥१९९॥वार्त्ता॥तिसहौदकेकौनकौनकेऊपरनवीनजलजंत्रफुहारेवनायेहै एककुहाराजाकेम
ध्यसोभितहै कैसोहै जगतकेनेत्रनिकोग्रसतहै वसकरतहै अतिसुंदरहै॥दोहा॥चतुरचित्रकारकनिलिकतचितहारकमतिवंत॥
मीनादिकपैचरनिकेचित्रविचित्रअनंत॥२००॥वार्त्ता॥हेमतिवंतजिसहौदविषैमीनादिकजोहैपैचरजलकेजीवतिनकेविचित्र
सुंदरअनंतअनेकतरहकेचित्रहै कैसेहै चतुरजोहै चित्रकारकचितेरेतिनकेकीयेहुयेऔचितहारककहाचित्तकेहरनेवारेहैसु
दरहै॥ अडिल्ल॥रावरतेभूपतिजवआवत॥परतपावढेवस्त्रप्रभावत॥तिनपरधरतपदमपदसुंदर॥सिंहठवनगवनतगुनमं
दर॥२०१॥वार्त्ता॥जवराजामंदरतेइतकोआवतहै तवमारगमैप्रभावतसोभावानवस्त्रपावढेपरतहै चरनोकेतरेवछावतहै तिनव
स्त्रनिपैचरनकमलनिकोधरतेहुयेसिंहकीठवनसमगमनतहै फरकैसोराजाहै गुनानिकेनिकोमंदरहै॥चौपई॥संगअमातप्रधा
नघने॥अनुगतअनुचरसोभसने॥कंचननिर्मितदंडभले॥लैप्रतिहारअगारचले॥२०२॥वार्त्ता॥संगजिसराजाकेअमातिवजीर

४४ आतसके अचंपातीचनहोतहै ईहांसगुनकेलीयेमानोजलके अचंपाछुटतहै अथवाजोअचंपानही तोवनलक्ष्मीकेआंगनमैजल
जजोहैमोतीतिनकेविरवाहैछुटेहै कैसेमनकोमोहतहै अथवा वसकारकवसीकरनमंत्रहै अथवाहारकक्याजेचित्तकोहरलेह
५५ अैसेजंत्रसोहतहै जोकहोजंत्रभीनही तोक्याहै मानोमनोहरसुंदरहोदकेकूलकूलकिनारेकिनारेवरुनदेवताकेहाथकेह
थफूलहै कैसेहै फूलदुष्यकेहरनवारे औफूलप्रसन्नताकेमूलओवरअष्टअैसेहथफूलहै॥भुजंगप्रयातछंद॥चलीहितसं
धानकेअल्कनंदा॥किमंदाकिनीओरआनंदकंदा॥असारैलसैव्योमलौसथनीकी॥जिन्हैकीसुधाधरूतकीअरूपीकी॥२०९॥वार्त्ता॥फेर
फुहारेनहीहै किधोआनंदकंदाआनंदकीमूलजोहैमंदाकिनीस्वर्गकीश्रीगंगाजी ताकीतरफसंधानमिलापकेलियेअल्कनंदा
पतालकीश्रीगंगाजीचलीहै॥तिसकीस्वत्तनिर्मलजोहैअसारैधारैसोव्योमआकासमैलसतहै मंकैसीआसारैहै जिन्होनेसुधा
धरूतचंद्रमाकीजोहैअंसुकिरणैसोफीकीकरीहै॥मोतीदाम॥निकंदनध्वांतअरिंदनरिंद॥निहारखिल्योअरविंदनिवंद॥च
ल्योतिनतेमकरंदअमंद॥सुचित्तमलिंदनिआनंदकंद॥२१०॥वार्त्ता॥अथवाध्वांतअंधकारकेसमानजोहैअरिंदवैरीतिनको
निकंदननासकरनवारोजोहैनरिंदराजाश्रीफतेसिंह ताकोनिहारदेखकेमानोफुहारेनही अरविंदकमलतिनकोवंदस
वृहखिल्योहैफल्योहै तिनतेजलजोउछस्योहैसोईकमलनितेअमंदउज्वलमकरंदचल्योहै कैसोमकरंदहै सुंदरजोहैचि
मलिंद ततेईभयेभ्रमरतिनकोआनंदकंदहै॥भ्रमरावलीछंद॥कविरामअरामघनेअभिरामफली॥जनुरित्तनिकीनमलत्तचली
अवली॥करकेपरमावसचित्तकियोअपनो॥फिरआवनकोयहजाननिदानमनो॥२११॥वार्त्ता॥जलकेसीकरआकासको
जायफेरआवतहै तिनकीकैसीसोभाहै कविरामकहितहै आरामवागकेघनेवहुतअभिरामसुंदरअैसेजोहैफलीवृक्ष
अथवावहुतसुंदरजोवृक्षहै जेसर्वकालमैहरितओकुसमितयेफलितरहितहै तिनकेदेखनकोमानोनक्षत्रआयेहुते

43A

जासित्रादैकरवुरीवुद्धकोदूरकरततहै फेरसूर्यकेप्रकासमैतारेछपजातहै ईहांग्रौरराजानिकेजोगुनहैसोईभयेनषततारेतिनकीदामपं
गतीराजाकेगुनोग्रागेप्रकासितनहीं फेरसूर्यचढेकिरणौफैलततहै चकवेसूषीहोततहै ईहांप्रतापहीकीजोहेमयूषैकिरणै सोचारोग्रोर
वरसततहै फैलततहै मित्रजोहैसषातेईभयेचक्रचकवेतिनकेधामधाममैक्याघरघरमैग्रघवातनतनमैसूषसरसातग्रधिकहोततहै फेर
सूर्यचढेसों उलूकलुकततहै कमलषिलततहै भ्रमरसानंदहोततहै ईहांग्रुद्रनीच वटपाररस्तामारनवारे षलदुष्ट तेईभयेपेचकाउलू
कसोकहूंनहीदेषीयत कविसोईकंजकमलसोसजततहैविगसततहै ग्रत्तनेत्रतेईभयेग्रलभ्रमरतिनकेग्रामसंकहराजतहैप्रसन्नहोततहै
फेरसूर्यचढेकमोदसकुचततहै चकोरदुषीहोततहै मारगसोहततहै ईहांकुटलिजोहैवक्रतेईभयेकमोदतिनकेरोदनरोवनोहोततहै चोर
हीभयेचकोरतिनकेग्रमोददुष्यहोततहै ग्रौनीतहीकेजोहैपंथमारगसोवामसंदरसोहततहै॥सावयवरूपक॥ ग्रडिल्ल॥लषतवरनि
सूषकैदुषपोचनि॥ इतसासनसूचकदैलोचन॥ जेजलजंत्रमुचैतपमोचन॥ग्रघतविरोचनपावसरोचन॥२०७॥वार्त्ता॥फेरतहांराजा
वरजोहैश्रेष्ठतिनकोसूषदैकरिकेग्रौपोचजोहैनीचतिनकोदुषदैकरिकेक्यादंडदैकरिकेप्रथमग्रैसेकारजकरिकेपाछेसासनग्राग्यासूचक
जोहैग्रपनेनेत्रजिनसोंग्राग्याकरीहै तिनकोइतक्याजलजंत्रनिकीग्रोरदेषकरकेदेषततहै काहादेषतहै जेतपकेमोचनदूरकरनवारेज
लजंत्रफुहारेमुचेहै क्याछुटेहैतिनकोदेषततहै फेरक्यादेषततहै विरोचनसूर्यकेग्रघतहुंदेईपावसकीरोचनछविकोदेषततहै फुहारनि
केछुटेसूर्यकेहुंदेईपावसरितुह्वैगई॥यहग्रर्थ॥ कुंडलीया॥ वरनवंतसूषहेतनृपवढ्योप्रमोदनिहार॥ जनुवनमचेपाछुटेवनश्रीग्रज
रमंगार॥वनश्रीग्रजरमंगारजलजविरवामनमोहै॥कैवसकारकमंत्रजंत्रहारकजनुसोहै॥ कैवसकारकमंत्रवरूनकेमनोमनोहर
कूलकूलहयफलसूलहरफलमूलवर॥२०८॥वार्त्ता॥फुहारेकैसेछुटेहै मानोनृपजोहैराजा कैसोवरनवंतक्यासूतिवंतग्रौसूष
कोहेतकामनग्रैसेराजाकोनिहारक्यादेषकेवनकीजोलक्ष्मीहैताकेग्रानंदवढ्योहै ताकेग्रजरग्रांगनमैवनजलकेमचेपाछुटतहै

वलीहै अमलनिर्मलहै फेरहौदकैसोहै मीनादिकक्याभीननितेआदिलैकरिकेअौरुभीजोहैवारचरजलकेजीवमक्ष
कच्छनक्रावक्रतिमिंगलग्राहइत्यादिजीवजामैअपारवहुतसोभाकोदैरहेहै कौनअैसोभूपराजाहै जिसकेमनपसंदरूप
कोदेखकेनहीलोभायमानभयो अर्थातकिसर्वहीलोभायमानहोतहै॥जोराजाघविदेखतहैसोईमोरतहोतहै अथवाभूप
संवोधन हेराजनजोदेखतहैसोईलोभितहै पुनः॥मानाविसानकरिमिलतनाहितीको॥आनंददकंदद्रगकंजनिमंजुहीको
जो राजेमनोमुकरवामआरामश्रीको॥कैधोविसद्रुमुनिमानसमाननीको॥२१७॥वार्त्ता॥फेरहौदकैसोहै मानजोहैप्रि
याअपराधजन्यस्त्रीनकोरोसताकोअवसानअंतकरकेक्यादूरकरकेनाहपतिसोंतियकोमिलायदेतहै॥पतिकोभीअौर
तियकोभी दोऊनकोमानदूरकरिकेमिलावतहै नायककोभीमानवरन्योहै॥क्योंयहश्रृंगारकोउद्दीपनविभावहै याकेल
खेमानजातहै यातेक्योयहमानकोदूरकरतहै सोहौदनही मानोपीठमर्दसखाहै सोभीमानवतीकेमानकोदूरकरतहै
याहीतेनेत्रकमलनिकोआनंदकंदहै अौमंजुकोमलजोहैहीक्याहृदयदंपतकेतिनकोभीआनंदकंदहै क्योहृदयभीकमल
है॥एकतोहौदसजलहै नेत्रहृदयकमलहै दूजेमानकोहरतहै तवनेत्रअौहृदयविगसतहै यातेआनंदकंदकह्यो [illegible]
कैसोहै मानोवामसुंदरनिमित्तआरामवनकीजोहैश्रीलक्ष्मीताकोमुकरसीसाराजतहै अथवाजोमुकरनहीहै तौवि
द्रुक्याविसेषउज्वलसांतरससंजुक्तजोहैमुनितिनकोमानसमनहै नीकोअैसोहै यावातकोमानहु॥रूपमालाछंद॥सोभ
वानदिवानगेहमहानज्ञानसुजान॥लक्षलक्षअघातअक्षनजाहिजीहवखान॥जत्रतत्रविचित्रदेवचरित्रचित्रप्रकास
रंगरंगनिरागरंगतरंगरातप्रभात॥२१८॥वार्त्ता॥फेरदिवानगेहकचहरीकोघरकैसोहै॥सोभवानसोभासंजुक्तहै अौम
हानवडोहै॥हेसुजानचतुरजानत॥अथवावडोसोभावानहै फेरकैसोहै जाकोलक्षलक्षकेकहादेखदेखकेअक्षजोहैनेत्रसोअघाततए

सोतिनरित्तनिकीजोहै अवलीपंगतीसोलक्षतहीयेदेषकरिकेमानोघाकासकोचलीहै अरुवृक्षनिकीजोहै परमासोभातिसने
तिनकोचित्तवसकरकेअपनोकरलीयोहै॥ अपनेआधीनकरलीयोहै हेजानचतुरतिनकेहटआवनकोमानोयहीनिदानकार
नहै चित्तवागकीसोभामैअरुझगयो यातेगमनकरकेफेरहटआवतहै॥ दोहा॥ योंजलजंत्रनिमैलसतइकविसालजलजंत्र
ज्योंसदमंत्रिनिमैविसदसोभितअपस्वतंत्र॥ २१२॥ वार्त्ता॥ सर्वजलजंत्रनिकेवीच। एकजोवडोजलजंत्रहै सोयोंलसतहै
जैसेअष्टजोहैमंत्रीवजीरतिनमैविसदउज्जलराजा सोभितहोयजैसे॥ दोहा॥ वहुविलासनृपकेहरीलषप्रमुदावनवी
र॥ गमनतसभानिकेतकोहरनधरनभयभीर॥ २१३॥ वार्त्ता॥ नृपकेहरीनृपनिमैसिंहरूपापरमश्रेष्ठजैसोजोहैराजापते
सिंहफेरकैसोवीररसभट सोप्रमुदावनकेजोहैअनेकविलासतिनकोदेषकेफेरधरनिप्रथ्वीकोमैंजोहैभयअरुपीर
दुष्षइनकेदूरकरनकोसभाकोजोनिकेतघरहै तहांकोगवनकरतहै॥ ससवदना॥ नवलप्रभाको॥ सदनसभाको॥ ध
रधरिसोभे॥ लषमनलोभे॥ २१४॥ वार्त्ता॥ सभाकोमंदरनवीनसोभाकोधारनकरिकेधराप्रथ्वीमैसोभितहै वै
सोहै ताकोदेषकेमनलोभितहै॥ दोहा॥ इमपरपरनपैहौदद्युतिसरसावतमृगराय॥ जिमसज्जनपैअमलगुनअधिकावत
छविआय॥ २१५॥ वार्त्ता॥ पैजोहैजलसोतामैपरपरनकेहौदकीसोभाकोऐसेसरसावतहै जैसेसज्जनपैनिर्मलगुनआयकेसोभा
ऐसेजलहौदकीद्युतिअधिककरतहै॥ मृगरायसंबोधन॥ वसंततिलका॥ कीलालमंडतमहानवहौदसोहै॥ लोलावलीअम
लउर्मनिकीविमोहै॥ मीनादिवारचरदेतअपारसोभा॥ कोहैअनूपलपरूपनमपलोभा॥ २१६ वार्त्ता॥ कीलालजलतासोमं
डितसोभायमानअथवापूरनभयोहुयोनवीनजोहैहौदसोअत्यंतसोहतहै॥ एकतोआपहौदहीसोभायमानहै क्योंनवीनहै दूजे
जलसोंपूरनहै॥ यातेअतिसोभतिहै फेरकैसोहै जामैलोलचंचलजोहैउर्मतरंगतिनकीअवलीपंगतीमनकोमोहतहै॥ कैसीअ

४६ पुनः॥ चंद्रकासुचित्रासतसोमनिवासपासविहाय॥ वासअत्रनिवासकीरहितासकीछविछाय॥ देतरैनअपारओपविचारसोउप
कार॥ औरहूहूतातकोलसैफललैअसेवअगार॥ २२१॥ वार्त्ता॥ फेरकैसोधवलसदनहै मानोचंद्रकाजोहैचांदनीसोसुचित्रोहै
46 सूर्यताकेत्रासतेसोंक्याभयसेसो मनिवासजोहैचंद्रमाताकेपासकोनिकटकोविहायकरकेत्यागकरिके अत्रइसनिवासमैवासकी
योहै॥ सोतिसचांदनीकीस्वेतछविमानोछायरहीहै सोवहिचांदनीमंदरकेउपकारकोचित्तमैविचारकेकिमोकोसूर्यकेतापसों
राष्योहै यहमंदरकोउपकारविचारकरिकेमानोरात्रकोअपारसोभामंदरकोदेतहै।एकतोसहिजहीमंदरउज्जलहै तापैरात्रको
चांदनीकोप्रकासपरकेअधिकउज्जलहोतहै सोमानोवहीउपकारविचारयोहै॥ परस्परउपकारकरनोयहरीतउत्तमनिकीहै तास
मेऔरजोमंदरहै तेभीरात्रकोसोभाकोपावतहै सोकैसेहै इसमंदरकीजोकृतकरनीकोनसीजोचांदनीपैउपकारकीयोहै यर
जोहैकरनीताकोजोहैफलकोनसा रात्रकोचांदनीनेसोभावढावनीसो इसफलकोलैकरकेऔरभीअगारमंदरसोभापावतहै
ज्यों।एकसतपुरषकीकरनीकोफलअनेकलोगभोगतहै त्यों।कयामंदरकीकरनीकोफलसर्वमंदरनिनेपायो॥ चौपई॥ घसचं
दनवनचंद्रकघोर॥ कियोविलेपनजनुचहूंओर॥ यातेसुभसुवासितभींत॥ भावतघ्राननिनैननिनित्त॥ २२२॥ वार्त्ता॥ फेरमं
दरऐसोहै मानोचंदनकोघसकरकेताकोजोहैवनजलतामैचंद्रककपूरघोरकरकेतिसकोमानोमंदरकेचारोतरफविलेपनकी
योहै यातेहेमित्तमंदरसुभ्रउज्जलहै औरसुवासितकरीयेसुगंधितहै याहीतेनेत्रनिकोघ्रानजोहैनासकाताको[illegible]तभावतहै
उज्जलपदार्थनेत्रनिकोप्रियहै मलीनगलानव्यंजकताकोनेत्रनहीदेषतहै औरसुगंधवारोपदार्थघ्राननिको[illegible]योऔर
गंधवारोप्रियनही॥ तारकाछंद॥ अरिपारदतारदईप्रभुताई॥ इहहेतगहीअतिहीसितिघलाई॥ सितनारदबुद्धविसारदसीमी
हिमभारदकीजिहसारदकीसी॥ २२३॥ वार्त्ता॥ फेरकैसोसदनहै जिसकीस्वेततानेपारदपारेकीप्रभुताअंडकरकैदूरबहा ४६

45A

तनहीहोत औ जीह्न रसनाजाकी सोभाको वषानक्या वरनन करवेकूं पतनहीहोत फेरकैसोहै जत्रतत्रजहांतहां काठौरठौरविषेदेव
त्योंकेजोहै चरित्र देवतनिकी लीलातिनको विचित्र सुंदरजोहै चित्रसोजामैसुहातहै सोभतहै कैसेचित्रहै जिनमें रंगरंगनिकेक्यातर
हतरहकेजोहै रंगसोन्यारेकोभी औ प्रभातप्रातहकालकोभी। देषनवारेजोहै तिनकोरागजोहै प्रेमतासोरंगतहै॥ क्याअनुरागजुतोकरतहै
देषनतेदेषवेकोसनेहवढतहै॥ पुनः॥ सुकुसुमसुधाविभूषतसषतामनियार॥ संवुरारिमनोमरच्योनिजउभैपानसुधार॥ कास
हेरकैरैप्रकासहिमममममजुहार॥ हारमानरहेविलौरदुस्योतुषारपहार॥ २१९॥ वार्त्ता॥ फेरसदनकैसोहै सुद्धहै रजतिनादिक
नितेवर्जतहै औ सुभ्रउज्वलहैस्वेतहै क्योंसुधाजोहै कलीतासोंविभूषितसोभायमानहै औ जाकीसषघताजोहैनिर्मलतासोमनियार
सुंदरहै कैसोसुंदरहै मानोसंवुरारिजोहैकामदेवतिसनेआपउभैदोउपानहाथनिसोंवनायकेरच्योहै कासकाहीजोभूममैसु
कतहै सोझुकतनही मानोइसकेप्रकासकोदेषकारिकेजुहारकरतहैनमस्कारकरतहै औविलौरतोयासोंहारमानकेतुषार
वरफाकेजेहैपहारतिनमैछप्योरहतहै अघवाविलौरभीऔतुषारभीपहारनिमेछप्योरहतहै याकीउज्वलतामैसेततानेति
नकोजीत्योयातेमानोभाजकेपहारनिमेदुरे॥ पुनः॥ राजलोकनिकेअनंदितनृविंवतजाल॥ कंजमंजुलमीनसुक्तिकिजन्हुजा
सुकिलाल॥ मालतीमहिपालकित्तप्रकाससोंचहुकोद॥ चित्तचात्रकमोददायकसघनसद्पयोद॥ २२०॥ वार्त्ता॥ फेरसदन
कैसोहै निर्मलहै अनंदितक्याआनंदजुतजोहैराजाकेलोगनिकेवक्त्र क्यामुषतिनकोजानसंदूकतामैविंवतहैदिषाईदेतहै ति
सकीकैसीसोभाहै मानोमंजुलउज्वलअपवामनोहरकंजकमल औमीन सुक्तसिपीयां॥ सर्व जन्हुजाजोहै श्रीगंगाजीतिसकेनि
र्मलजलमैलसतहै मुषकमल नेत्रमीन कर्नसीप फेरकैसोहै महिपालराजाकीमालतीसमानजोहैकित्तकीरततिसकेप्र
कासकेसमहै चहुंकोदचारोतरफतेऔसोहै चित्तरूपीचात्रककोआनंददायकमानोसरदरितुकोसघनपयोदमेघहै॥

४७ होतहै यहअर्थ॥ पादाकुलक॥ चहुंदिसफैलिरहीअरुनाई॥ मंगलसभामनोसुखदाई॥ तस्करादिइनदरीवसाई॥ जनुअरुनोदयकीछवि
47 छाई॥२२५॥ वार्त्ता॥ जिसवितानकीअरुनमसनंदकीलिलाईचारोतरफैलिरहीहै सोकैसीहै मानोसुखदायकमंगलकीसभाहै औरजिमे
इनसोतस्करादिकजोहैचौरादिकदुष्टतिनोनेपर्वतनिकीकंदरावसाईहै कंदरनिमेजायछपेहै यातेअरुनाईकैसीहै मानोअरु
नोदयकीछविछायरहीहै सूर्यकेप्रथमअरुनकोउदैहोतहै तबलिलाईआकासमेछावतिहै तासमैभयभीतह्वैकेचौरादिकभागजा
तेहै सोमानोवहीलिलाईहै॥ मोतीदाम॥ कह्योजुकविंदनिछत्रियधर्म॥ भयोतिहिरूपप्रकासितपर्म॥ वढ्योअरियंडनरौद्रमहान॥ विरा
जतराजसराजदिवान॥२२६॥ फेरलिलाईयहकहाहै॥ जोकविराजनिनेछत्रियनकोधर्मवरन्योहै ताकोमानोयहरूपप्रकासभयोहै
छत्रियनिकोधर्मभीकविनिनेलालवरन्योहै कविप्रियायां यथा॥ छत्रियधर्ममजीठइति अथवाअरिजोहैसत्रुतिनकेनासकरनकोम
हानवड्योरौद्ररसवढ्योहै सोभीअरुनहै अथवाराजाकेदिवानमैराजसरजोगुनराजतहै ताकीलिलाईहै रजोगुनभीलालहै॥ भु
जंगप्रयात॥ लिलाईलसैसेततताईसमाई॥ गिरासोभदेवापगाआपधाई॥ विनापत्रएकत्रपाजासकोचै॥ खिल्योचेतकीचंद्रकामैप्रभालै॥
पाछेदैछंदनमैकेवललिलाईकोवरननकीयो अवलिलाईकोऔसेततताईकोमिलायकेवरनतहै मंदरकीजोहैसेततताईतामैवितान
योमसनंदकीजोलिलाईसमाईहै सोलसतहै कैसीहै मानोगिराजोहैसरस्वतीजीतिसकीसोभादेवापगाजोश्रीगंगाजीतिसकेआप
जलमैछायगईहै सरस्वतीलाल श्रीगंगाजीसेत॥ अथवा विनापत्रपत्रनितेरहतएकत्रएकठाईक्याएकहीस्थानमैसघनपालासजोहैढ
ककेवृक्षतिनकोचैसंवरहहै सोचेतकेमहीनेकीचांदनीमैसोभाकोलैकेफूलनसोहै केसूलाल चांदनीसेत॥ पुनः॥ प्रकसैकिधौंसतेज
सोंभरपरी॥ वहूकोदमपालकीवित्तरूरी॥ किधौंस्रम्रजीमृतसंघातुलानी॥ छईकालरैतेअसारैवषानी॥२२८॥ वार्त्ता॥ फेरसेत
तामैलिलाईकैसीहै॥ किधौंतारोतरपराजाकीसुंदरकीरतवढतेतेजसोंप्रफुल्लहुइप्रकासितहै॥ तेजलाल॥ कीरतसेत॥ अथवाअम्र

46A

दईहै इसीकारनतेमानोम्रारेनेअत्यंतसिषलतापकरीहै ठहरहूंनहीसोवात जिसकीसीजोहैसोभासेतउज्जलदेवीहैनो
रदमुनिसीत्रौविसारदउज्जलवुद्धकेसम अषवानारदकीउज्जलवुद्धसीसेतसोभाहै औजिसनेहिमवरषाकीभाराभ्रमरद
करीहै ऐसीजोहैश्रीसारदाभवानीतिसकीछविजैसीउज्जलछविहै॥दोहा॥न्रपउदारआगमनिसानिपटुफ... रनंद॥
लोहिततानवितानतरअरुनरचतमसनंद॥२२४॥वार्त्ता॥उदारदानीअषवासुंदरऐसोजोहैराजाश्रीकृ... ताकोआ
गमनिआवनोसुनकेपटुकहीयेप्रवीनजोहैफरासतेआनंदकेसहतलोहितलालजोहैवितानसायेवानताकोतानकर
केताकेतरेलालहीमसनंदरचतहै॥कवित्त॥निपटपुरटकेसुघटतिसतुंनतुंगजिनमैनगनिकीनवलरचनासु
ता॥तिनपैवनकजोतिजनकवितानकहुमंजुमनिसीपनिकीमालरैजगमगात॥अरुनहरतिनीलपीतपटडो...
नरनिकेफिरनकरनिमनहेरजात॥सुषमासितातसियरातसरसातईठसुनसुनसकुसरमातविलषातगात॥२२५॥
वार्त्ता॥निपटअत्यंतसुघटतसुंदरघडेहुयेपुरटस्वर्नकेहैतुंगऊचेसतुनजहा॥किंवाअत्यंतऊचेसतुनहै॥फेरकैसे
हैतिनमैनवलनईअद्भुतनगरतनोकीरचनासोभितहै रतनजरेहुयेहै तिनसतुननिकेऊपरजोतजनकक्याजोत
केउपजावनवारोऐसोजोहैवितानचंदोवाताकोवनककहीयेवनावसोभतहै।कैसोवितानहै॥जाकेआरोतरूपमंजुउज्जलजोहै
मनिसीपमोतीतिनकीमालरैजगमगातहै फेरकैसोवितानहै अरुनलालहरितहरीनीलस्याम पीतपीरी ऐसीजेहैपाटकीडोरैसोकैसीहै
जिनकोदेषकेमानुषनिकेजोहैमनसोफेरतिनकेहाथनिमैनहीजात॥तिनडोरनिहीमैउरजेरहितहै ऐसीसुंदरहै ईठजोहैमित्रसोतो
ताकीसुषमाकहुक्यापरमसोभाकोसिहातहैवरनतहै औसियरातसीतलहोतहै सरसातअधिकहोतहै।एकतेहजारदिलहोतहै औस
कुजोहैवैरीसोजाकीसुषमाकोसुनसुनकेसरमातहैसकुचजातहै ऐसीजिनपैनहीवनिआवत याहीतेसरीरजिनकोविलषातदुषीहो

४८ वचवेकेस्पानपर्वतनिकीकंदरामैंजानेहै॥दोहा॥होतअगारिअरानिपधोंसाकीधुंकार॥कियेअहारअपारअरिअवजनुलेतडकार॥
२३३॥वार्त्ता॥पथमारगविषैराजाकेअगाडीअगाडीधोंसेकीधुंकारधुनिहोतहै ताकीकहासोभाहै मानोअपारवहुतेसत्रुधोंसेनेअ
हारकियेहैं काहाभोजनकियेहै सोउदरकोभरकेअवडकारनिकोलेतहै धुंकारतनहीं॥ चौपई॥ औरोंविविधिवाजनेवज्जैं॥पण
48 वनिसाननिसोंउपसज्जैं॥गोमुखभेरनिकीधुनिघनी॥विचविचकरतालनिकीवनी॥२३४॥वार्त्ता॥औरभीविविधिअनेकप्रकारनकेवा
जनेवाजतहै पणवढोलनिसाननगारेतिनकेसाथहीउपसाजतहै गोमुखरणसिंगे भेरी तिनकीधुनिवनिरहीहै विचिविचिकरता
लेवाजतहै॥ पुनः॥ वीनावेनमुरज्जकिन्नरी॥मनगतमिलसहिनायनिहरी॥स्रुतरनिपरदुंधभिघहरात॥नगनहूंडुरेदुवनदहला
त॥२३५॥वार्त्ता॥ वीना औवेनवांसुरी॥औमुरज्ज॥औकिन्नरीभीवाजंत्रहोतहै तिनकीभीधुनिहै सहनाईनिसोंमिलिकरके अथवाइनसों
सहनाईनिनेमिलकेमनकीगतहरलईहै मनमोहोगयो॥औदुंधभीजोहैवडेनगारे सोस्रुतरजेहैं [illegible] तिनपरधरेहूयेघहरातजात
है॥जिनकीधुनिसुनिकेपर्वतनिमैंडुरेछिपेहुयेवैरीभीदहलातडरतहै॥ पादाकुलक॥तालझांझझालरमनमोहै॥ललतपखावजआव
जसोहै॥होतनटंकारनिकरलेखा॥प्रगटतघिनघिनवंहतहेखा॥२३६॥वार्त्ता॥ ताल औझांझ औझालरएभीवाजंत्रहै सोमनकोमो
हतहै॥औपखावज औरुआवजएभीवाजंत्रललतसोहतहै औरुजेसुभटधनुषनिकेटंकारशब्दकरतहै तिनकोअंतहूनहीं कितनेक
टंकारहोतहै औघिनघिनमैवंहितक्याहाथियनिकेशब्द औहेषाघोरनिकेशब्दहोतहै॥आभीर॥घंटावलिघननात॥घुंघरावलिठ
ननात॥मधुपावलिभननात॥२३७॥वार्त्ता॥ हृदयावलिहुलसात॥२३७॥वार्त्ता॥घंटनिकीअवलीकेशब्दहै॥घुंगरावलीकेशब्दहै॥
हस्तीनिकेमस्तकनिपैभमरगुंजतहै तिनकेशब्दहै सुनिकेसर्वकेहृदयहुलसतहैं॥दोहा॥रूपप्रतापसुचककवचनवा[illegible]चलतप्रति
हार॥विरदावलिवंदीविपुलविरदावलीअपार॥२३८॥वार्त्ता॥राजाकेप्रतापकेजतावनवारेवचनप्रतिहारकहतेचलेहैं सोहे १

57A

उज्जलजोहैजीमूतमेघतामैतामैसंध्यामिलीहै संध्याकोरंगलालहै फेरतामैजेजालरैंछायरहीहैतेईमेघकीअसारैंक्याधारैंकहीहै॥दो
हा॥दमकसतूननिकीतडतडोरैंसूरपतिचाप॥नितप्रतिचितचात्रकनिकेविषमविनासतताप॥२२८॥वार्त्ता॥तामैजोसतूननिकीदमकहै
सोईतडतवीजुरीहै औअरुनइत्यादिरंगनिकीजेडोरैंहै तेईसूरचापइंद्रधनुषहै औचित्तरूपीजोहैचात्रकपपीहेतिनकेजोहैविषमताप
दुष्यतिनकोनितप्रतिदूरकरतहै अर्थयहकितहांप्राप्तभयेसर्वकेदुष्यदूरहोतहै अपनीअपनीइछासर्वपूरनकरतहै मधुभार॥इति
औरभूप॥आगमअनूप॥रविदूतदौर॥कहिठौरठौर॥२२९॥वार्त्ता॥इतऔरक्यासभामंदरकीतरफराजाकोजोहैअनूपसंदरआगम
सर्वसमाजकेसमेतआवनोताकोरविजोहैशव्दतेईभयेदूतसोठौरठौरकहिदेतहै किअवइतऔरकोभूपआवतहै सर्वकोषवरदेतहै
हाकलका॥वाजनिधुनिपरपुरअवनी॥वहुरदिगंतनिलोगवनी॥सूनसूनकंपतअरिरवनी॥अर्भकगर्भगिरैअवनी॥२३१॥वार्त्ता
पुरकेअवनोविषैवाजनिकाहावाजंत्रनिकीधुनिपरकेफेरदिगनिकेअंतपर्यंतगवनीकहागई पुरकेअवनअसंभवहै लत्तनाते
पुरलोगनिकेअवनजानिये॥तिनमैपरकेकहातिनकोषवरदैकेगवनकीयो तिसयुनिकोसूनसूनकेअरिसत्रुनिकीजोरवनीस्त्री
सोभयसोंकंपतिहै वेजानतहै कहाजानेंकितकोराजाकोगवनभयोहै जोहमारीओरभयोतोहमकहांडरकेवचेंगी॥याभयसोंजि
नकेगर्भनितेअर्भकजोहैवालकसोअवनीपृथ्वीमैगिरतहै गर्भश्रवजातहै॥पादाकुलक॥मलिनषलिनदलवधिरभयेहै॥कलिन
वलिनिवलप्रवलहयेहै॥छुद्रनषलसमुद्रअवगाहै॥चलनअचलनिगलिनिकहुचाहै॥२३२॥वार्त्ता॥कैसीधुनिपसरीहै षलदुष्टन
केजोहैदलजाकोसूनकेमलिनऔवधिरवहिरेभयेहै॥औराजाकेआगमकोभयजानकेजोतिनकोभागनकेसमैवलेसभयेहै तिनवले
सननेजिनकेप्रवलवलदूरकीयेहै निर्वलह्वैगये॥सेसूजेछुद्रनीचहै सोआगमकोसूनके षलकेजोहैसमुद्रतिनकोनहीअवगाह
तहै अर्थयहकि कोईछलनहीकरसकत॥षलहूंजिनकोभूलगये याहीतेअचलजोहैपर्वततिनकीजोहैगलीकंदरातिनकोचल्योचाहतहै

४५ दग्धज्योहैचतुरतेंभयेवदंवकेवृक्षसोविकासकोंपावतहै वीरजोहैसुभटतेंभयेमैनकामदेवसोचापधनुषनिकोंऔकलंबवाननिकोंसु
धारकेअपारवहुतसोभितहै वर्षामैकामकीभीप्रवलताहोतहै दोहा॥ विपतिपंथकजरजदुरतपरखपवनअधिकाय॥ जरतजवासेतूलखल
५१ दृगपद्मनिदुतिजात॥२४२॥ वार्त्ता॥ विपताहीकेजेपंथहैमारग औविपताहीकेजोहैरुजरोगतेंभयेरजधूरसम सोजोकोवर्षैसोंदुर
तछिपतहै औपरखजोहैपुन्यकेसमैतेंभयेपवनतिनमैअधिकहोतहै औखलजोहैदुष्टसोजवासेकेसमानजरतहै औतिनकेजोहैनेत्र
तेंभयेपद्मकमलतिनकीसोभादूरहोतहै वर्षामैकमलनिकीसोभानहीरहित॥ दोहा॥ अलकिअवनिभागनिहुयेविधकिरसानसु
धार॥ भागवीजतिनकेउठतअंकुरविविधप्रकार॥२४३॥ वार्त्ता॥ लोगनिकेअलिकजोहैमस्तकतेंभयेअवनिप्रथ्वीकेभागफल तिनमै
भागरूपीवीजवीजेहुतेकिसने विधिव्रह्मासोइभयोकृसानतिसनेवीजेहुतो सोइसमेघकेवरषनेकरकेतिनकेअनेकप्रकारकेअंकुर
उठतहै॥ वरषाभयेजैसेवीजनिकेअंकुरउठतहै ऐसेभागरूपीवीजजोव्रह्मानेवीजेहुतेतिनकेअंकुरइसमेघर्षोंवरषैतेउठतहै॥ पुनः॥
इहविधचमूसमेतनृपआवतपुरसुखदेत॥ वंदचरनव्रजराजकेप्रवसतसभानिकेत॥२४४॥ वार्त्ता॥ इहविधकहापूर्वोक्तरीतिसोंरा
जाचमूसैनाताकेसहितआवतहै॥ कैसेपुरनगरताकोसुखदेतआवतहै ईहांलक्षनासोंपुरकेलोकलीजै तिनकोसुखदेतआवतहै॥
औश्रीव्रजराजश्रीकृष्णकेचरनोंकोनमस्कारकरकेसभामंदनमैप्रवेसकरतहै॥ चौपई॥ हुतीजुअनुगतअनीअपार॥ सोभितभई
सुद्वारअगार॥ द्वारनिद्वारपालथितभये॥ विविधायुधनिजुक्तथविध्ये॥२४५॥ वार्त्ता॥ राजाकेअनुगतक्यापाछेजोअपारघनीसैनाहुती
सोद्वारकेआगेसोभायमानभई॥ औसर्वद्वारनिमैद्वारपालस्थितभये कैसेद्वारपाल विविधअनेकतरहकेजोहैआयुधसस्त्रतिनकेजु
क्तथिविसोंआयेहुये सुंदर औसूर औप्रवीनऐसे॥ मधुभार॥ जवनृपप्रवीन॥ आसनअसीन॥ श्रीसहितहोत॥ दाढतउदोत॥२४६
वार्त्ता॥ जवप्रवीनराजाआसनपैविराजतहै कैसे श्रीजोहैसोभाताकेसहित॥ तवसभामंदरकोप्रकासअधिकवाढतहै॥ दोहरा॥

48A

जनविरदावलीकोविरदावतक्यावरनतचलतहै॥ रूपमालाछंद॥ गत्यकोकिसमत्यआवतिअभ्रगर्जितमन॥ माधुरीवहु
धांविहंगनिकीरहीधुनिपूर॥ पाकसासनिकेसरासनिव्योमसोभतिकेत॥ जीगनामणिपीतिजोहितइंद्रगोपसमेत॥ २३९॥ वार्त्ता
राजाआवतहै किधोंगत्यदर्वीकोसमथेवानमेषआवतहै प्रतिकूलपवनकेसमजोहैलोभादिकसोजाकेप्रतवंधिकहैनहीसकतया
तेसमत्यहै फेरमेघकैसेआवतहै अरवहुतगर्जितआवतहै औनानाप्रकारकेजेवाजंत्रवाजतहै तेईतिसमेघमेअनेकप्रकारकेपक्षीवो
लतहै॥ तिनकीमधुरधुनिजामेपूरनहैरहीहै औरुकेतजोहै ध्वजासोआकासमैसोभितहै तेक्याहै तिसमेघमेपाकसासनजोहैइंद्र
ताकेसरासनधनुषहै अषनोविषैजोपीतमणीहै तेईजीगनापटवीजनेहै औरुजेलोहितलालमणीहै तेईइंद्रगोपचीजवहुटीहै
इनकेसमेतहै मेघ॥ पुनः॥ सीपजातवलाकआवलिदामनीनिगजोति॥ औरुभूपप्रतापसूरसकैनपायउदोत॥ हेमधारनिपारवि
जधुनीप्रकासितओप॥ लोकवैरिनिकेमरालभयेघयेघितलोप॥ २४०॥ वार्त्ता॥ फेरमेघकैसोहै॥ सीपजातजोहैमोती तेईवलाकपं
निकीअवलीपंगतिहै॥ जं नगरतनोकीजोहैजोतिसोईदामनीवीजुरीहै॥ औरुभूपनकोजोहैप्रतापसोईभयोसूर्यसोयाकेप्रभावआ
गेप्रकासपायनहीसकत॥ औरुनिकेप्रतापरूपीसूर्यकोधायलेतहै॥ फेरमेघकैसोहै हेमसुवरनकीधारनिकोवरषायकरकेकीरतरूपीजो
हैधुनीताकीउपमाकोप्रकासितहै॥ वैरिनिकेजोहैलोकजसतेईभयेमरालहंससोजोप्रथ्वीपरथायेहुतेतेसर्वलोपहैगये अथवाजिस
मेघकेघितपरघयेतेजसरूपीहंसलोपभये वरषामेहंसउडिजातहै॥ पुनः॥ पोषमित्रमयूरजाचकभेकचात्रकतोष॥ देतसीतलतास
रोषदरिद्रकोतपसोष॥ मुग्धअंकितजैविकासलहैविदग्धकदंव॥ वीरमैनलसैसुधारअपारचापकलंव॥ २४१॥ वार्त्ता॥ मित्रजोहैप्री
तवानतेईभयेमयूरमोरतिनकोपोषनकरके॥ औजाचकजोहैमंगतेतेईभयेभेकदादुरऔचात्रकपपीहेतिनकोतोषकरिके॥ औदरिद्र
हीकोजोहैतपताकोरोषकेसहितसोषनकरके सीतलतादेतहै औमुग्धजेहैमूर्षतेईभयेअंकुराकेवृक्ष सोविकासकोनहीपावत वि

५० ठाढे रहित है विसषवाण तिन सों भरे हुये तनत्र कस अरु वक्र कया वांके जो है धनुष तिनको॥ शक्ति वरछी॥ कुंत नेजे॥ जमधर कटार॥ चक्र सस्त्रवि
50 त्रष तिनको॥ छुरका छुरी॥ करवाल कापेसकवज॥ औ वंदूषै॥ इनको लिये ठाढे रहित हैं॥ पर जो है सत्रु तिनके षंडन वारे जो हैं मंडलाग्र षड्ग
तिनको॥ सीसक षोल॥ औ चारायन॥ तनत्रान कवच तिनको॥ फालन के संजुत जो है ललत संदर ढाले तिनको पानहा घनि मै लिये रहित है
औरु भीषने कासित तीक्ष्न सस्त्रनि को लै के विचक्षन जो है चतुर सो राजा के सूसाने त्रनि को रुष षरे देषत है जाको नेत्रनि सों आगपा होत है
सो आगे आय राषत है किंवा अपने नेत्रनि सों राजा को नष देषते रहित है॥ समान का छंद॥ मंजु मंजु वीजने॥ लै षरे षरे जने॥ वातके
निकेत जे॥ घाम के विजेत जे॥ २५३॥ वार्त्ता॥ मंजु मंजु कया उज्जल उज्जल जो है वीजने पंषे॥ तिनको लै कर के षरे नीके जो है जन सो षरे र
हे है॥ अष वा षरे वीजने जो है तिनको॥ कैसे है जे वात पवन के निकेत घर है औ घाम गरमी ता के विजेत जीतन वारे है॥ दोहा॥ का
रनि अनुराग लीनि षरे रतनादिक मति गेह॥ न्रपद कारस्क नितु रतहीं कहिल कार कर देह॥ २५४॥ वार्त्ता॥ मति गेह मति के घर बुद्धि
का वान इंगत आकार के जानने वारे जो है अनुगदास राजा के सो कारन्या हा घनि मै रतनादिक जे है पदारथ आदि पद तें मुहरै रूपै
ये सो सर्व लिये ठाढे रहित है जब ही राजा की वकसीस जा को होत है तब ही राजा के मुष ते दकार के सुनते ई लकार कहि के ताके हा
थ देत है राजा कहित है या को देहु वे वा को कहित है लेहु॥ किंवा वकसीस मै कैसी सी घृता होत है राजा के मुष ते दकार हूं नि
कसत है सर्व शब्द नहीं निकसत औ सेवकनि के मुष ते लकार हीं निकसत है इतने ही काल मै वकसीस दीजीयत है॥ पुनः
औरु हूं यने वने॥ कौन पै गने वने॥ साज राज के जिते॥ देषिये तहां तिते॥ २५५॥ वार्त्ता॥ औरु भी पदारथ यने वने है सो भाग्यमान भ
ये है॥ वे सर्व कौन पै गने सों वन आवत है काहू पै गने नहीं जात॥ जितने राज के साज है तहां तितने ही दिषाई देत है॥ दोहा कवि

ज्ञातऋज्ञानदिवानसभपायनरेसनिदेस॥ गंधासननहींकरतइकविनानिदेसप्रवेस॥२४७॥वार्त्ता॥ ऋज्ञानचतुरजोहै दरद [illegible]लोगसोअ
वैनरेसराजाकीनिदेसआग्याकोपायकेदिवानकचहिरीमैजातहै॥ एकनिदेसआग्यातेविनाकचहरीविषैगंधासनपवनहीप्रवेसक
रतहै आग्याविनापवनहींजातहै औरऊनहींजात॥ चौपई॥ आवतजातमहीपतिलोग॥ लषियतमनोमनोहरभोग॥ कियोंअनंदअ
नंगअनंत॥ कैउछाहगुनअरतिवंत॥२४८॥वार्त्ता॥ आग्याकेअनुसाररराजाकेलोगसभामैआवतेजातेहै मानोलोगनहीसंदरभो
गदिषाईदेतहै सरीरनिकोधारेहुये ध्यपवाअरतवंतआनंदहै किधोंअनंगकामहै कियोंउछाहहै किधोंअरतिवंत[illegible]है॥पु
नः॥ मंत्रीमित्रपवित्रप्रधान॥ राजकाजजेपरमसुजान॥ सकलसभासदसमतिअगार॥ बैठतिनपतिजुहारजुहार॥२४९॥वार्त्ता
मंत्रीवजीर मित्रहित॥ प्रधानमुसाहव औरुभीजेराजकाजमैपरमसुजानचतुरऐसेजोहैसवैसभासदसभाकेलोग फेरवैसे
मलीवुद्धकेअगारघर सोराजाकोजुहारजुहारकेवैठतहै॥ अडिल्ल॥ सुचिसेवकसभचवरदुरावत॥ सुषमाकीउपमाकोविगा
वत॥ पारदघनमलयजहिमहारत॥ असकीरतभवकीलैवारत॥२५०॥वार्त्ता॥ सुचिपवित्रजोहैसेवकसोतहांराजापैसुंदरचोरदु
रावतेहै॥ तिनकीपरमसोभाकीउपमाकोऐसेकविवरनतहै चवरनहीदुरावतमानोजगतकीकीरतकोलैकरिकेवारतहै॥
कीरतकैसीहै पारदपारो घनकपूर मलयजचंदन हिमवरफ।राजाकोदेषकेसर्वहारजातहै ऐसेजगतिकेऔरुराजनिकी
उज्जलकीरतताकोलैकेवारतहै॥ पुनः॥ तूनविसिषपरनधनुवक्रनि॥ शक्तिकुंतजमधरलेचक्रनि॥ छुरकाकरवालका
वंदूकनि॥ खंडनमंडलाग्रपरस्वकनि॥२५१॥[illegible]॥ पुनः॥ सीषिकचारायनतनत्रानिनि॥ ललतफलकफलनिजुतपानति
औरोसितलैसस्त्रविचषन॥ ठाढेनपरषहेरतचत्तानि॥२५२॥वार्त्ता॥ फेरतहांराजाकेजेहैसस्त्रतिनकोलियेहुयेचतुरसेवक

ति

गरूपीजोहैपयोंधिसमुद्रतामैजिनकेमानसमनमीनहै कवहूंतासोंभिन्ननहीहोत ऐसेगायकसरसअधिकरसकेजुत्तरागको
गावतहै कैसोरागहै द्वाविंसतकत्ताबाईसजोहैदोषरागनिकेतिनसोंहीनकहातिनतेरहतरागकोगावतहै॥पुनः॥कानन
काननविवरनिहार॥जाननिकेमनमृगसुकमार॥रागपनचसुरचापसुधार॥भेदततानतिवाननिमार॥२६५॥वार्त्ता
पुनः॥जनुवहुवपुधरआहतनाद॥लहतमहतमृगयाअहिलाद॥अतिअयानपुनिपसुअविधान॥तेतिनकेतनत्रानवधान॥
२६३॥वार्त्ता॥तिनकीकैसीसोभाहै मानोआहतनादतेअपनेवहुतसरीरनिकोधरकेमृगयासिकारकेमहितवडेअहिलादआनं
दकोपावतहै अर्थयहकिमानोआहतनादसकारषेलतहै कैसेषेलतहै काननजोहैअवनतेईभयेकाननवन तिनकेजोहैवि
वरछिद्रतिनविषेजानचतुरनिकेसुकमारकोमलमनरूपीमृगनिकोदेषकेमारतहै कैसेमारतहै सुरजोहैषड्जादिस
प्तअथवामंदमध्यतारातीनइनहीकोकियोहैचापधनुषजिसने तामैरागरूपीजोहैपनचचिल्लाताकोवनायकेतनेफे
रतानतिहीकेजोहैवानतिनसोंमारकेमनरूपीमृगनिकोवेधतहै अपवाकाननकाननकेविवरनिमैदेषकेमनमृगनिकोऐ
सेभेदतहै काननकाननमैऐसेलष वनवनकेविवर औकनौकनौकेविवर॥औरूअर्थवही फेरकैसीतानैहै अत्यंतजैअयान
है जिनकोरागकीसमझनही औरूजेअविधानपंगनितेरहतपसुहै तेईतिनताननिकेतनत्रानकवचहै॥पुनः॥वाजतसाज
नअलिपिकसोर॥विगसतसुमनसुमनचहुंओर॥त्रिविधसुषदसुरत्रिविधसमीर॥आयोधरवहुसुरभिसरीर॥२६४॥
वार्त्ता॥फेरगायककैसेहै मानोसभामैवहुतेसरीरधारकेसुरभिवसंतरितुआयोहै साजवीनादिकनहीवाजत अलिभ्रमर
पिककोकिलतिनकोसोरहै सुमनभलेजोहैमनतेईभयेसुमनपुस्पतेचारोतरफविगसतहै तीनप्रकारजोहैसुरमंदमध्य
तारसोईसुषदायकतीनप्रकारकोसमीरपवनहै॥याहीतेमानोवसंतआयोहै॥दोहा॥देसदेसकेनपनिकेनिपुनलोगर

गरम

नकरेवनतानिकेसभसोडससिंगार॥राजसिरीकेश्रीसहितराजतश्रत्रश्रपार॥२५६॥[illegible]॥वनताश्रीतिनकेकविननेसर्वसोलां
सिंगारवरनेहै श्रोश्रत्रकहीयेईहांश्रीसोभाकेसहितराजसिरीकेश्रपारसिंगारवराजतहै॥कमलछंद॥महषकतहूंलरै॥धवलकतहूं
मुरैं॥दुरतमदकेभरे॥समरकाननीकरै॥२५७॥वार्त्ता॥कहूंमहषलरतहै॥कहूंधवलजोहैवृषभसोश्रटतहै कहूंमदकेभरेजोहै
दुरदहाथीसोसमरजुद्धमैश्रपनीकरनीकोकरतहै॥मोतीदाम॥कहूंश्रजमेषजुरेरिसजंग॥सुरंगकुरंगनिकेकहुरंग॥कहूंव
लपायकमल्लतनोत॥नचैनटराजनिकेकहुंगोत॥२५८॥वार्त्ता॥कहूंश्रजजोहैवकरे कहूंमेषमीढेक्रोधसोजंगमेजुरेहै॥
श्रर्दमहकहूंवकरेलरतहै कहूंमीढेलरतहै॥कहूंपायकजोहैपटहषेलनवारेसोश्रपनेवलकोकरतहै कहूंमल्लवलकोतनो
तविस्तारतहै कहूंनटराजनिकेगोतनाचतहै॥नीलसरूप॥वाजनिकेरविचित्तकहूंहरषावतहै॥वारवधूकातहूंरसकोवरसावतहै
वेषवनायदिषायविदूषकमायनिको॥संजुतमोदकरैकितहूंउमरायनिको॥२५९॥वार्त्ता॥वाजवाजंत्रनिकेश्रथवावाजघोरनिके
जोहैरवशब्दसोकहूंचित्तकोप्रसन्नकरतहै श्रोकहूंवारवधूवेस्यासोरसकोवरसावतहै श्रोकहूंविदूषकजोहैनकलीयेसोवेष
कोवनायकरकेश्रोवेषानुसारमायनिकोदिषायकरकेउमरायनिकोश्रानंदजुक्तकरतहै॥मोतीदाम॥कहूंजयकारकमंत्रप्रवीन
विचारतमंत्रश्रमातकुलीन॥कहूंकविकोविदवुद्धिनिधान॥वारैनिरनैरससरीतमहान॥२६०॥वार्त्ता॥कहूंकुलीनभलेकुलके
श्रोप्रवीनचतुरश्रैसेजोहैश्रमातवजीरसराजाकेसोजयकेकरनवारेजोमंत्रहैतिनकोविचारतहै कहूंकविश्रोकोविदपंडतवुद्धकेघ
रसोरससरीतकोमहानवड़ोनिरनयकरतहै॥चौपई॥कहूंगायकनायकपरवीन॥रागपयोनिधमानसमीन॥द्वाविंसतदोष
निकरहीन॥गावतरागसरससरसलीन॥२६१॥वार्त्ता॥कहूंगायकजोहैगावनेवारेतिनकेनायककहातिनकोसासनाकरन
वारेश्रत्यंतगुनी श्रोपरवीनचतुर श्रथवावीनकहावीनामेपरउत्तम॥वीनकोभलीप्रकारवजायजानतहै फेरकैसेहै रा

कपरमलपरपूरकीन॥ विरदवदनव्याजगुंजतप्रमत्तभयेदूरकीनसूरखलाननविसूरकीन॥ २६८॥ वार्त्ता॥ राजाकीविरदावली
वंदीजनपढतहै॥ तैसैसोहतहै दिवानजोहैदरवारसोईताकसरसीतलावहै औरसूनीतजोहैभलीनीतसोईभयोललितसुंदरपै
जल तासोंकलितजुतहै सुनीतकोजलहैजामै तिसकेमध्यनरिंदजोहैराजासोईअरविंदकमलहै तिसनेराजाकीकमलाजो
हैसोभासोभरवहुतकरीहै कमलतालकीसोभावढावतहै तैसेईराजादिवानकीसोभावढावतहै पेनराजाजोकमलहैसोकैसो
है अरिसत्रुनकेजोहैगुनसोईभयेनषततारे औतिनसत्रुनिकीजोहैवुद्धिसोईभईनिसाराज औतिनकोजोवलसोईभयोनि
सेसचंद्रमा औचक्रपानजोहैश्रीकृस्नतिनकोजोहैप्रतापसोईभयोचंडकहाप्रचंडसूर्य तिसनेसत्रुनकेगुनरूपीनषतादि
कसर्वदूरकरेहै औसोजोहैश्रीकृस्नकोप्रतापरूपीसूर्य तिसकीप्रवलसहायकोपायकरकेऔसर्वत्रासकोविहायकहा
दूरकरकेनरिंदरूपीजोकमलहैसोविगस्योहै क्याप्रफुल्लितभयोहै तिसनेअपनेलोककहीयेजसहीकीजोहैपरमल
सुगंधतासोंवंदीजनजोहैअलिभ्रमरसोपरपूरनकियेहै सोवेवंदीजनभ्रमरजसरूपीसुगंधमेंप्रमत्तभयेराजाकेवि
रदकोनहीवदतनहीकरनत विरदवदनकेछलकरकेगुंजारकरतहै तिनोनेसर्वकोसूरजोहैसूलदुष्टसोदूरकीयो
है औषलजोहैदुष्टसोतूरनक्यासीघ्रविसूरदुषीकीयेहै अपवासूरजोहैसुभटसोजिनोनेदूरकीये राजाकीकीरतसुन
सुभटभयसोंभागगये औरूअपीवही अपवादुष्टजोहैसूरसुभटसोसीघ्रदूरकीये औविसूरदुषीकीये यहअर्थ अनपत्र
कवित्त॥ नीरनिमेनीरतीरघनिकोरतनतीरघनिकेसुसूनीरमैकलिंदनंदनीकोनीर॥ संततरसनिमेप्रसंसतरतनषी
रषीरनिमेरतनसुषदकामधुकषीर॥ धामनिमेरतनअमरअभिराम धामअमरनिकेमैरतनसून्योसूनासीर॥
नरनमैरतननहीपतिमहीमनिमैरतनमहीपफतेसिंहराणासिंहवीर॥ २६९॥ वार्त्ता॥ वंदीजनसभामेकैसेराजाको

51A

र॥विविधवस्तु लीनेघरेजेल्पायेउपहार॥२६५॥वार्त्ता॥देसदेसकेजेहैनृपराजातिनकेनिपुनचतुरजोहैलोगसोदरवारवि
घेग्रनेकतरहकीवस्तुलीनेघरेहै कौनसीजोराजाकोउपहारमेटल्पायेहैसो॥दोहा॥सवनिगहतलखलखचखनिपुनिदेदै
वहुवित्त॥जथाजोगतिनकोकरतमानमहीपसमत्थ॥२६६॥वार्त्ता॥तिनवस्तुनिकोदेषदेषकेपेरराजासर्वकोचखनेत्रनिसों
वहुवित्त॥जथाजोगतिनकोकरतमानमहीपसमत्थ॥ ग्रहतेहैअंगीकारकरतहैग्रौतिनलोगनिकोजथाजोगदर्वदैदैकरकेसमर्थवानजोहैमहीपराजासोमानकरतहै॥नी
लसरूप॥मीतग्रमीततनमीतग्रमीतमहीपघने॥प्रीतग्रप्रीतनप्रीतग्रप्रीतसलापसने॥धीरग्रधीरनधीरग्रधीरसुनाय
कियै॥वीरग्रवीरनवीरग्रवीरकहायजियै॥२६७॥वार्त्ता॥जेमहीपराजामित्रहैग्ररुजेग्रमित्रहैक्यासत्रुहैग्ररुजेनतोमित्रहै
ग्ररुनाग्रमित्रहैसोकौनउदासीनग्रैसेजोग्रनेकराजाहैतिनसोंयाभांतमहाराजावरततहैजोमित्रहैतिनकोप्रीतकेसनेवचन
सुनायकेजेसत्रुहैतिनकोग्रप्रीतविरोधकेसनेवचनसुनायकेजेउदासीनहैतिनकोनप्रीतकेसनेग्ररुनाग्रप्रीतकेसनेतिन
नकोउदासीननतासोंसनेवचनसुनायकेमित्रतोधीरजमानकीयेसत्रुग्रधीरजवानकियेउदासीननतोधीरजमानताग्रधी
रजमानकीये॥वेसामान्यराषे पाहीतेजगतमैमित्रतोवीरसुभटकहायकेजियेग्रमित्रग्रवीरकहाकायरकहायकेजियेउदा
सीननतोवीरकहायकेग्ररुनाग्रवीरकाहायकेजियेवेसामान्यहैरहे छत्रनियहकैसोप्रतापहैवीरकहायकेजासोंमित्रहीव
चतेहैसत्रुहैकेजोवीरकहावैसोराजासोंनहीवचत ग्रपवावीरसंवंधीग्रवीरग्रसंवंधीनावीरनाग्रवीरसोनतोसंवं
धीना ग्रसंवंधीकहायजियै समीपकेराजासत्रु तिनतेपरेवेराजामित्र तिनतेपरेवेराजाउदासीन सत्रुनिसोंजुद्धमित्रनिसोंसंधिउ
दासीननिसोंसामान्यग्रैसीराजानीतराषतहै॥कवित्त॥ललतसुनीतपैकलितसरसीदिवानकमलानरिंदग्ररविंदमधुमरकीत
ग्ररिगुनवुद्धिवलनषतनिसानिसेसचंडचक्रपानकेप्रतापभानुदूरकीन॥प्रवलसहायपायविगस्योविहायत्रासवंदीग्रलिलो

है राजा फतेसिंह सोई वारध समुद्र के सम गंभीर है तिनकी जो है वाहनी सेना तिसने अरि जो है सत्रु ते ई भये तरु वृक्ष सो जुद्ध मै
जीत करके औ तिनको तासकरके वहाय दिये औ रु जो जीत मृगराज शब्द सो लगायके अर्थ कीजे तो राजाको संपूर्न नाम ति

कस तहै जीतते फतेमृगराज ते सिंह भय पद है ही याते फतेसिंह जो राजा है सोई समुद्र है तिनकी सेनारूपी नदी न सत्रु
रूपी वृक्ष जुद्ध मै तोरकरके वहाय दिये वाहनी मै स्लेष सेना औ नदी नदी को स्वामी समुद्र सेनारूपी नदी को स्वामी
समुद्र सम राजा श्री फतेसिंह नदी औ सेना को दुहू को वाचक वाहनी शब्द है सो व्यंग के लिये है उत्तम काव्य मै व्यंग को
चमत्कार चाहीये जो सेनारूपी नदी अैसे कहीये तो व्यंग प्रकास है जाय फेर काव्य को चमत्कार नही रहै याते वाह
नी पद धस्यो जो सेना औ नदी पै भिन्न भिन्न शब्द लगाय अर्थ करीये तो भिन्नपद स्लेष होय सेना मै प्रकार जु थप्रव
ल है नदी मै फेर प्रवाह प्रवल है सेना मै स्फुरता नदी मै जल सेना मै नरभूषन राजे नदी मै कमल॥ सेना मै वगति
की धारे नदी मै जल की धारै सेना मै चक्र नदी मै भवर सेना मै वाण नदी मै सर्प सेना मै निस्चल नदी मै किनारे सेना मै जुद्ध नदी मै ज
गप सेना मै व्राह्मण नदी मै हंस अैसे जानिये यह भिन्नपद स्लेष भिन्नपद कवि प्रिया यो यथा॥ द्वै पद अर्थ मिलायके कारिकुपके
केन्पाय॥ पुनरुकाढ करि भिन्न करि उपमा भाव जिताय॥ अव याही कवित्त के भिन्न भिन्न छेअर्थ है प्रथम सेना पक्ष अर्थ॥ राजा की
सेना कैसी है प्रवल जे है वडे वलवान तिन पै जाको प्रकार कहीये वडो दंड है जे सरकस है तिनको दंड देत है फेर कैसी है परस्फुर
ता कहा मानो स्फुरता को प्रवाह है सर्व वैरी जाके वेग मै वहि जात है फेर कैसी है सरस सरस कहा रस वीर रस सो जामै अधिक है
उत्साह भरी है ईहां रस पद सर्व रस को वाचक है पै प्रकरन करि वीररस ही लीजीये फेर कैसी है वर नरभूषन वर नर जो है सु
ति अपने जस की औरजो है भमता की भूष जो है चाहना सो जाको नहीं है अर्थ कि इन दै वस्तु निकी भूष नहीं है कांक्षि जल

52A

मैकलिंदनंदनीश्री
वरनतहै नीरजोहैजलतिनमैतीरथनिकोजलरतनहै श्रोतीरथनिकेऊनीरमैकहाभलेजलमै
जमुनाजीकोजलरतनहै श्रोसर्वरसनिमैरतनछीरदुग्धकोसंततनिरंतरप्रसंसतहै सराहतहै श्रोछीरनिमैरा
नकामधुकवकहाकामधेनुकोसुषदायकदुग्धहै श्रोधामजोहैसरीरतिनमैरतनश्रमरदेवतानिकेसुंदरसरीरहै श्रोश्रम
रदेवनिकोजोहैनिकरसंवूह तामैऊनासीरइंद्ररतनमान्योहै श्रोनरजोहैमानुषतिनमैरतनमहीपतिराजाहै श्रोमहीपरा
सिंहसम जनिमैरतनराजाश्रीपतेसिंहहै कैसोहै रणजुद्धविषैधीरजमानहै वासुभटहै॥श्रन्यच॥प्रवलप्रकरपूरऊरतासरस
रसवरननरभूषनजलजछविछायेहै॥धारैषगधारैचक्रचक्रमनहारैहैरपछीव्यालश्रचलपयोधरसुहायेहै॥समनश्रने
ततपदिनहोतहोतहोतद्विजराजहंसनिपरमसुषपायेहै॥वारधगंभीरजुद्धजीतमृगराजभूपश्ररितकतोरतववाहनीव
हायेहै॥२७०॥वार्त्ता॥ इहांसेनाकोश्रोनदीकोरूपकहै स्लेषभीहै प्रथमरूपककोश्रर्थ॥सेनाकोनदीकरकेवरनत
है प्रकरजोहैसंवूहसेनाकेजोपसोईप्रवलपूरहै प्रवाहहैजिसके ऊरताजोहैसूरनिकोधर्मसोईसरसश्रधिक
रसजलहैजामै वरसेवाधन नरभूषननराजेसोईजलजकमलहैजामै कैसे छविसोछायेहुये सानंदप्रफुल्लित षग
जोहैषड्गतिनकीजोहैधारैतेईसेनारूपीनदीमैधारैहैं चक्रसस्त्रविसेषतेईजामैचक्रभ्रमनहै जिनकोदेषकेसत्रुम
नकोहारदेतहै पछीवानसोईजामैव्यालसर्पहै श्रोश्रचलकहाजेचलायमाननहीजुद्धमैनिश्चलहै तेईयाकेपयो
धरकिनारेहै श्रोश्रनेतश्रनेकवैरीनिकेजेहैपूरवजन्मोकेतपतिनकेसमननासकारनवारेदिनहोतजुद्ध जुद्धरूपी
होतजगपहोतहैजहां नदीनिपैजगपभीहोतहै पषाकाविप्रिया जलचरजलजुत जलजतटजगपकुंडमुनिवास
इति द्विजराजपंडिततेईभयेहंसतिनोनेपरमसुषपायेहैजहां मृगराजपदतेराजाकोनाममलीजे मृगराजभूपजो

५४ चक्र॥षगकोअर्थषगकहीयेआकासतामैगमनकरनवारीअर्थकिउतंगअैसीजेहैधारैतिनकोधारतहै चक्रभवर चक्रचकवेतिनको
भीधारतहै चकवेभीजहांनिवासकरतहै फेरकैसीहै मनहारैहैर कहांजाकोदेषकेपंथीमनकोहारतहै अैसीसुंदरहैजोमनह
54 रलेतहै फेरकैसीहै॥पत्रीव्यालअचलपयोधरसुहायेहै अर्थ॥पत्रीजोहैकमलसोजामैवहुतहै व्यालसर्पहै औअचलपर्वत
सेजाकेपयोधरकिनारेहै पर्वतनिकेवीचकोजाकोजलआवतहै अथवा अचलनिश्चलअत्यंतदृढहैकिनारेजाके किंवाअचल
जोहैकनारेसोभीजिसनेहायेहै कहादूरकियेहै वडोवेगहैजाको फेरनदीकैसीहै समनअनंततपदिनक्षतक्षतहोत अर्थदि
नक्षतजोहैसूर्यतिसकोक्षतकहाकियोहुयोजोहैअनंतवहुततपसोजाकेसपर्ससोसमनहोतहैदूरहोतहै अथवासमनकाम
नकरकेजहांअनेकतपहोतहै औदिनक्षतकहानित्यक्रियाहोतहै सनानादिककी औक्षतजपहोतहै अथवाअनंतअनेकजी
वनित्यजामैमनकरकेक्षात्यक्षात्यहोतहै पवित्रहोतहै यहअर्थ फेरकैसीहै द्विजराजहंससतिपरमसुषपायेहै॥द्विजजोहैपक्षीकौ
नसेराजहंस अथवाद्विजपक्षीभीऔराजहंसभीतिनोनेजहांवडेसुषपायेहै जोहंसनहीहै तौभीकविवरनतहै सुक्षमसरव
रहूकहेकेरावहंसविसेष॥यहकविनियमहै अथवाकिसीदिसमैहंसभीहोहिगे देसविरोधनही अथवाऔरअर्थ॥द्विजजो
पक्षीतिनकोजहांमानोराजहै अनंतपक्षीहै यहअर्थ॥औहंसजीवतिनोनेसुषपायेहै अथवापक्षीनिकीराजिपंगतिहैज
हां औरुअर्थवही अथवाद्विजजोहैश्रेष्टब्राह्मनतिनकेहंसजीवनिनेपरमसुषपायेहैजहां अथवा द्विजतीनवर्न ब्राह्मनक्षत्री
वैस्यतिनकेजेराजाकौन अतिश्रेष्टब्राह्मन अतिश्रेष्टक्षत्री अतिश्रेष्टवैस्य औहंसक्या औरुभीअनेकजीवतिनोनेआनंदपाये
अथवाद्विजपक्षीतिनकोराजागरुडतिसकेसमानवेगवंतजोहैहंसघोरेराजाकेतिनोनेस्नानपानादिककरकेसुषपायेहै हे
जीतम्लगराजभूप तुमकैसेहौ वारधगंभीरसुद्र कहासुद्रविषेवारधसमुद्रकेसमगंभीरहौ तुमारेवलकोकोईनहीअ

53A

न्जोहैसंघसोजामेसोभायमानहै विजयजुतसंघनिकीधुनिहोतहै अथवानरभूषनराजासोजामेवरश्रेष्ठहै औजलजजोहै
मोतीतिनकीछविसोंछायेहुयेहै फेरसेनाकैसीहै धारैखगधारै कहाधारनकरतहै खगवानअपवाखड्गतिनकीधारनिकोऔ
चक्रसखविसेषतिनको औचक्रमनफिरवोदेसाटनताकोधारनकरतहै हारैहेर कहा जाकोदेखकेवैरीहारजातहै औपत्री
वानतिनकेजुताहै अथवापत्रजोहैवाहनतिनकेजुताहै फेरकैसीहै व्यालअचलपयोधररूहायेहै याकोअर्थअचलपवि
तपयोधरमेघइनकेसमानउतंगअरुस्यामऐसेजेहै व्यालक्याहस्तीसोजामेसुंदरहै फेरकैसीहै सुमनअनंततपदिनछत
छतहोत अर्थ अनंतअनेकनिकेजेहैतपप्रतापसोजाकेप्रतापसमनहीऐसीजोहै छतकरनीसोजाकीदिनछतजुद्धमेहोतहै॥
अथवा सुमनक्यामनकेसहितअर्थीकिमनकरिकेदिनछतजुद्धमेजाकीछतकरनीकोअनंतवडोप्रतापहोतहै अथावावडेप्रता
पसोंकरनीहोतहै फेरकैसीहै द्विजराजहंसनिपरमसुखपायेहै अर्थकिद्विजजोहैछत्रीराजातिनोनेहंसजोहैजीवनहीहैजेपर
आतमऐसेजेहैदुष्टजीवसोसुकतीयेभलीप्रकारसुखपायेहैदूरकीयेहै हेवारधगंभीरजीतमगराजमपतेरीजोहैवाहनीसे
नातिसनेसत्रुरूपीवृक्षजुद्धमेतोडकरकेवहायदियेहै अवदूजोअर्थकेवलनदीपक्ष दिलसादनामानदीराजाकेनगर
केसमीपपश्चिमदिसाकीतरफवहतहै ताकोवरनन कैसीहै प्रवलप्रकरपूर जामेपूरप्रवाहनिकेजोहैप्रकरसेवूहसो
प्रवलहै वडोवेगहैजिनको याहीते सरतासरसरस अर्थ जाकेरसजलमेअधिकसरताहै वरनरभूषनयहसंवो
धन हे नरभूषनामेवरहेराजनिमेश्रेष्ठ फेरनदीकैसीहै जलजछविछायेहै जलजकहाजलतेजनमेजोहैजलजीव
मीनादिकसोजामेसोभायमानहै सानंदहै अथवा वरनकोअर्थ कहुतकैसीनदीहै रजोहैभमताकोभखनहै साथ देसन
गरवनवागगिरिआश्रमसरितातालाा इत्यादिकविप्रियामैभमभखनकहेहै आगेवहीअर्थ फेरकैसीहै धारैखगधारैवक्र

५५ रथ्या॥वार्त्ता॥हेनरनाथभागसिंहसुत राजाभागसिंहजीकेपुत्र श्रीपतेसिंह तेरेराज्जुद्धकेरंगअस्वारेविसेसवीकोमनभावतेपदार्थ
55 दैदैकरिके आपकोप्रतापरूपीजोहै अग्नि अपरावापावककेसमजोप्रतापहै ताकेतेजकोवढायो किनोने गुरुजोहै आपकेकुलकेइ
ष्टदेव दसोअवतार गुरुनानकजी गुरुअंगदजीर गुरुअमरदासजी३ गुरुरामदासजी४ गुरुअर्जुनजी५ गुरुहरिगुविंदजी६ गुरुह
रिरायजी७ गुरुहरकृसनजी८ गुरुतेगवहादरजी ९ गुरुगोविंदसिंहजी १०॥ एजोदसअवतारहै तिनोनेपावकप्रतापकोअधि
ककीयो अपरवो हेश्रीभागसिंहजीकेपुत्र तेरेरा।वेअस्वारेविसेसवैकोमनभावतेपदारथदैदैकरिकेपावकप्रतापकोजोते
जहै सोगुरुकीयोकहाभलीकियो जोकाहूतेसहाक्योनजायऐसोकीयो किनोने नरनाथजोहै श्रीकालदेव नरअर्जुनताके
नाथस्वामीरक्षाकरनवारे तिनोनेकीयो नरनाथनामसोयहव्यंग किजैसेअर्जुनकोतेजमहाभारथमेअधिककीयोहै
तैसेतुमारोतेजजुद्धमेअतिवढायो यहभाव फेरतिनोनेकोनकोनकोकौनेकोनसोपदार्थदीयो चंडीजीकेचितमेचाव
दीनो औचमुंडाकेकायसरीरमैप्रमादवडोआनंददीनो जोगनिजिहैतिनकोरुधरदीनो औगीधजोहैगिराजिति
नकेकलापसंवरकोमेदचरवीकोभोजनदीयो औरुजेपिसाचहैप्रमथहैइनकोविपुलवहुतपलासनकहापलमास
कोअसनभोजनदीनो रुद्रशिवजीकोमुंडनिकीमालादई औप्रेतनिकोप्रलापकहानिर्थवचनदीनो मगनभयेअनेकभां
तिवोलतहै औरुजेसूरसुभटहै तिनकोसुरपिकोमंडलदीनो औपरसत्रुनिकोजोमंडलहै ताकोपराजयहारदई तिन
केजोकुपट्टनिक्याखोटेनगरहै तिनकोकमंडलदीयो लज्जनातेनगरकेलोगनिकोकमंडलदीयोजानीये अपीकि
सवेपकीरकरदीये मागतफिरतहै यह आपकोकहातुमकोकुमंडल प्रथीमंडलदीयो सत्रुनिकीप्रथ्वीसर्वदी
नी याभांतयेपदारथइनकोदैदैकेतुमारोप्रतापवढायो यहअर्थ॥सोरठा॥इहिविधसभामेंमारवंदीजनवरन

55A

तवरन॥ सुनसुनअपउदारपुलकतहुलसततनरघमर॥ २७३॥ वार्त्ता॥ याप्रकारवंदीजनसभामेराजाकीवरनजोहैस्तुतिताको
वरनतहै औराजासुनसुनकेहरषआनंदसोंपरनहैकेपुलकतहै औहुलसतहै॥ पद्धटिका॥ नवपटअघनअषतसरीर॥ कटतन
पानकोदंडतीर॥ जनुकुसमसमैविगसतदिवान॥ मधसोभतअपतिपंचवान॥ २७४॥ वार्त्ता॥ नवीनवस्त्रऔनवीनअषनतिनकरके
सरीरजिनकोअषितसोभायमानहै अथवानवीनसरीरपटअषनोकरिकेअषितहै कटिविषेतुनतरकसहै पानहाथनिमेजि
नकेकोदंडधनुषऔतीरहै यातेसभामेराजाकैसेलसतहै मानोवचहिरीतोकुसमसमैवसंतरितुकेसमानविगसतप्रफुल्लत
है तामैराजामानोपंचवानकामसोभतहै॥ पादाकुल॥ सुभतिलकराजश्रीअलिकवसे॥ कैसुमनवाटिकातिलकलसै॥ गुनवती
प्रकासिततिलकप्रभा॥ दुतिवलितलसतनृपललितसभा॥ २७५॥ फेरकैसेलसतहै॥ सभासोईराजश्रीराजलक्ष्मीकोअलिक
मस्तकहै तामैराजातिलककेसमानविराजमानहै अथवासुमनफूलनिकीजोहैवाटिकावाडीतामैतिलकहारसिंगारहै॥
अथवासभजोहैसोईभईगुनवतीमालाताकेमध्यराजातिलकरतनसमहै ऐसेदुतिसोंवलितराजाललतसभामेलसतहै
पुनः॥ सुरतरुजिमनंदनवनवारी॥ सुरनिसभामधजिमतिमरारी॥ विधुपरवेषरेषजिमसोहै॥ इमसोभसभाअपमनमोहै
२७६॥ वार्त्ता॥ फेरसभामेराजाकैसेलसतहै नंदनवनजोहैइंद्रकोवागताकीताकीवाटिकामैजैसेसुरतरुकल्पवृक्षलसत
तहोय॥ फेरजैसेसुरदेवतनिकीसभामैतिमरारीसूर्यहोयऐसे॥ फेरकैसे जैसेपरवेषकीरेषामैविधुचंद्रमासोभितहोय
ऐसेसोभितहै॥ चौपई॥ मानसराजमरालउदार॥ नषतनिकरमैध्रुवनिरधार॥ नवरसमध्यवीनअवतार॥ इमनरिंदराजत
दरवार॥ २७७॥ वार्त्ता॥ फेरकैसेराजतहै॥ मानसजोहैमानसरोवरतामैजैसेउज्जलराजहंसहोय॥ अथवानषतजोहैतारेतिन

५७ यात॥ किधोंवंसप्रासादकेदीपराजै॥ भवाकासकेद्वैरूधाधामथ्राजै॥ किधोंराजकेपीठकेमुक्तानीके॥ किधोंग्रावंधरूरेलसैराजश्रीके
२८५॥ वार्त्ता॥ फेरकैसेहै॥ वंसजोहैकुलसोईभयोप्रासादघरतिसकेसुंदरदीपराजतिहै अथवाभवजोहैजगतसोईभयोग्राका
57 सताकेसूधाधामचंद्रमाहै जगतकोप्रकासकरनवारेहै अथवाराजकोजोहैपीठराजसिंहासनताकेमुक्तामोतीहै नीकेश्रेष्ट अथ
वाराजश्रीजोहैराजलक्ष्मीताकेग्रावंधमखनसोहतहै राजश्रीकोसोभादेनवारेहै॥ कवित्त॥ कुसलवजेसेहंसवंसग्रवतंस
वीरराजारामचंदकेग्रनंदकंदगायेहै॥ पुष्कलतक्षजेपेविपक्षदलकाननकेधूमकेतमारुतभरतगुनभायेहै॥ श्रंगदप्रव
लचंद्रकेतरणदक्षजैसेलक्षनकेलक्षनसूलक्षनसिहायेहै॥ जैसेरिपुहंताकेसुवाहुसत्रुघातीग्रैसेराजाफतेसिंहकेसुवनदर
सायेहै॥ २८६॥ वार्त्ता॥ जैसेहंसवंसकेकहासूर्यवंसकेग्रवतंसमुकटकुसलवबरनेहै ग्रैसेतुलसीवंसकेग्रवतंसराजकुमा
रवरनेहै ग्रौजैसेकुसलवदोदेपुत्रराजारामचंद्रजीकेग्रानंदकेदगायेहैकहेहै॥ ग्रैसेराजाकेग्रानंदकेदराजकुमारकरने
है॥ ग्रौविपक्षजोहैवेरीतिनकोजोहैदलसोईभयो।ाकाननकहावनतिसकोधूमकेतग्रग्निकेग्रौमारुतपवनकेसमजैसेपु
त्रकुमार ष्कलग्ररुतक्षकहेहै ग्रैसेईग्ररिनकेदलकोरा[illegible]है ग्रौजैसपुष्कलग्ररुतक्षइनदोपुत्रनिकेगुनभरतजीकोभायेहै प्यारेलगे
है ग्रैसेराजाकोग्रपनेकुमारनिकेगुनभायेहै ग्रौजैसेरणमेंयुद्धमेदक्षचतुरग्रंगदग्रोचंद्रकेतसराहेहै ग्रैसेराजकुमार
युद्धमेवडेचतुरहै ग्रौजैसेलक्षनजोहैश्रीलक्ष्मनजीतिनकेजोलक्षनहैतिनलक्षनोसमजिनकेसूलक्षनभलेलक्ष
नजिनकेसराहेहै ग्रैसेईराजाकेलक्षनोसमराजकुमारनिकेलक्षनवरनेहै ग्रौजैसेरिपुहंताजोहैश्रीसत्रुघ्नजी
तिनकेसुवाहुग्ररुसत्रुघाती।ादेपुत्रसूनेहै ग्रैसेराजाफतेसिंहकेसुवनदरसायेदिषायेहैविधने॥ दोहा॥ इमसोभ
तसूचिसुतनिजुतदक्षनसमानरेस॥ जिमनलकूवरजुतलसतजक्षनसमाधनेस॥ २८१॥ वार्त्ता॥ दक्षचतुरसचिव

56A

यमानहै सूर्यकीकिरणौपरकेअत्यंतप्रभावढी सभामनिमालताभैराजासभा किरणौकेस्थानराजकुमार अथवा ...
लीजोहैहीरनकीपंगती तामैसुभसोभासोंमिल्यो द्विजराजचंद्रमाकोप्रकासप्रवेसभयोहै॥पुनः॥अलिराजतराजकुमारसरे॥
जुगअंगअनंगअनूपधरे॥नृपसूत्रतपादपकेफलसे॥भुजदंडप्रचंडनिकेवलसे॥२८२॥वार्त्ता॥फेरतिससभा ... राजकुमा
रअतिराजतिहै॥ कैसेहै धरेहै कहाअंगहै॥रूपगुनभागप्रसर्वकेजुतहै॥कैसेलसतहै मानोकामदेवनेअपनेदेहअंगधरेहै
अथवाजोकामकेअंगनहीहै तोक्याहै राजाकेजोहैसूत्रातपुन्यतिनहीकोभयो॥कपादपवृक्षतिसपुन्यरूपीवृक्षकेजेहै फ
लहै जोफलभीनहीहैतोक्याहै राजाकेदैजोहैप्रचंडभुजदंडतिनकेवलप्राक्रमहै॥दोहा॥निरखनरेसदिनेसकेगये
तिमरव्यवधान॥विगसतभयेसरोजजनुसरसीसिरसदिवान॥२८३॥वार्त्ता॥फेरकैसीसोभाहै नरेसजोहैराजाश्री
फतेसिंहसोईभयोदिनेससूर्य ताकोदेखके औव्यवधानजोहैअंतरोअन्यअन्यअस्थानमैस्थितसोईभयोतिमरअंधा
रकोअंधकारताकेगयेसोंकहादूरभयेसो मानोसरोजकमलविगसतभयेहै प्रफुल्लतभयेहै दिवानकचहिरीसो
ईभयोसरसीतलाव तामैविगसेहै सोसभारूपीतालकैसोहै॥सरसहै कहारसकेजुतहै रसमैस्लेष जलऔप्रेम
अथवासभारूपीसरमैसरसअधिकफलहै अथवासरससब्दसमतावाचकभीहोतहै सरसीतालकेसमानजोहै
दिवानतामैविगसेहै॥पुनः॥अनुगनिकेअनगनअरघसकुनसकलसुखहेत॥नृपघनरससरसोंवढैथविविरवाथवि
देत॥२८४॥वार्त्ता॥फेरकैसेसोभतहै॥अनुगजोहैदासतिनकेअनगनकहाअनंतजोहैमनोरथतेईभयेसकुनपत्ती तिनो
कोसंपूर्णसुखनिकेकारणमानोथविकेविरवासोभादेरहेहै फेरकैसेथविकेविरवाहै नृपजोहैराजासोईभयोघनमेघ ता
कोजोहैरसप्रेमसोईभयोरसक्याजलतासोंवढैहै ऐसेथविकेविरवाहैमानो सर्वकेमनोरथनिकेआधारहै॥यहभाव॥भुजंगप्र

५८ लविक्रमप्रकासतहै॥फेरसभामै वानतीरनिकेजोगुनहै औकमानधनुषनिकेजोगुनहै सोपानहाथनिकेओकाननकेदुल्लभपा
रेसर्वकोप्रकासकरतहै जासमैवानओधनुषइनकेअपनेहाथनिमैगहनकनकेहैरइनकेगुनसराहतहै अरुओकनिसौंसुनकै
58 प्रसन्नहोतहै तवसर्वजानतहैकिराजाकोवाननिकेओकमाननिकेगुनप्यारेलागतहै अथवागुनकेदेस र्वे॥तीननिवे
गुनवेगवेधनादिक ओधनुषनिकेगुनतपनचादिक इनकोकहिकेअरुसुनकेप्रसन्नहोतहै ।एकरीततोयह औदूसरी
रीतओकहै जासमेएकहाथमैधनुषकोपकरकेओदूजेहाथसौंवाकेपनचकोखैंचकेकानकेप्रर्यंतल्यावतहै तवसर्व
लोगजानतहै किवाननिकेगुनओधनुषनिकेगुनराजाकेहाथनिकोओकाननकोप्यारेहै॥याचतुराईसौंअपनेभा
वतेगुनसर्वकोविषयकरावतहै॥पुनः॥वहुधावसुविप्रनिकोवरषै॥सुनमीतसंगीतकलाहरषै॥जिनकेवसराज
सिरीदरसै॥थवितेथितकीपरमासरसै॥२९०॥वार्त्ता॥फेरविप्रजोहै व्राह्मनतिनकोअनेकप्रकारकरकेद्रव्यकोदेत
है॥दानकेअनेकप्रकारहै॥हेमित्रफेरसंगीतकीजोहैकलाचतुराई॥ताकोसुनकेप्रसन्नहोतहै औजिनोकेवसराज
सिरीराजलक्ष्मीदरसैदिखाईदेतहै राजसिरीकेवसआपनहीभये आपनेवसजिनोनेराजश्रीकरीहै औजिनकीथवि
करकेथितप्रथ्वीकीपरमासोभाअधिकहोतहै प्रथ्वीकोभलीप्रकारपालतहै॥सोरठा॥सुरतक्यौंननरनाथराखेस
वकीसकलविधि॥कियेविमलवदंरजनाथचित्तसदनसदगुननिको॥२९१॥वार्त्ता॥नरनाथराजासर्वविधसोसवे
कीसुरतसुद्धक्यौंनाराखे राखैईयहअर्थ॥काहेतेजिनकेचितवदंजनाथश्रीकृष्णचंद्रनेविमलउज्जलओसदका
अष्टगुननिकोसदनघरकीनोहै सर्वगुनजिनकेचित्तमेवसतहै यातै॥सवैया॥सुरजसुरसनीतमैसुरजसंजु
गवारधमंदरनीको॥वानविधानमैजानविजैदिनदानमैविक्रमविक्रमहूंको॥रागसभागसरोजनिकेवनके

दिकतिनकीसभाविषै अथवा दक्षनचतुरजोराजाहै सोसुचिपवित्रजोहै अपनेपुत्रतिनकेजुत्तसभाविषैऐसेसोभतहै
जैसेनलऔकूवरइनपुत्रनिकेजुत्तगक्षनकीसभाविषैधनेसकुवेरलसतहै॥रूपमाला॥दुष्टदैत्यनिकेनिपातनिके
उपायअसेष॥हर्षिहर्षिअतकीलेषहियेधरेसविसेष॥नीरछीरअलीकसत्यभयेदुवोंमिलएक॥वंसमानसहंसभप
कीयेजुदेसविवेक॥२८८॥वार्त्ता॥ऐसेकाजनिमैराजाप्रवृत्तहोतहै दुष्टजेहैमलीनबुद्धवारतेईभयेदैत्यतिनकोनिपा
तकहीयेनासकरनकेजेउपायहै कैसेअतर्कजिनउपायनमैफेरकाहूकीसंकानउपजे ऐसेअतर्कउपायजानके सोहर्षि
हर्षिकेकहाप्रसन्नहोयहोयकेअसेषसंपूर्नविसेषताकेसहितहृदैमैधारनकीये किअमुकेउपायकरकेदुष्टनिकीप
राज्यहोयगीयामैसंकाकछुनही फेरउरूउपायकीसहायताकेनमित्तवापेऔरुउपायवापेऔरुउपायऐसेविसेष
तासोंविचारकेहियेमैधारनकीये॥ऐसोउपायनहीविचास्योजोवापेसहायताऔरुउपायकीनहोय॥फेरअलीक
जोहैझूठऔसत्यजोहैसाच।जोद्वैपदारथहैसोनीरजलऔछीरदुग्धइनकेसमानहै जथासंख्यकरस्पर्धीकरनो॥
झूठजलसमसत्यदुग्धसम।दोऊमिलके।एकहैगये काहूकोनहीजानेपरत सोराजाफतेसिंहनेजुदेकीयेहै सत्य
भिन्नकीयो झूठभिन्नकीयो राजाकैसोहै तुलसीजोहैअपनोवंससोईभयोमानसकहामानससरोवरताकोहंससहै॥
क्योंनीरदुग्धकोहंसहीभिन्नभिन्नकरतहै औरुकीसमर्थीनही अभिप्राययहकिविवेकपूर्वकऐसेउपायकियेजो
सत्यकोसत्यझूठकोझूठनिर्नैकरसबकोदिखायदीयो॥त्रोटकछंद॥बलविक्रमभारअपारतरे॥उकसेनदबेअरिहंदप
रे॥गुनवल्लभवानकमाँनिनिके॥प्रगटावतपाननिकाननिके॥२८९॥वार्त्ता॥फेरराजानेबलविक्रमकोभारकैसोसत्रुनिपे
पायोहै जिसविक्रमकेअपारभारकेतरेअरिसत्रुनिकेवृंदसंदोह दबपरेहै कैसेपरेहै उकसनहीसकतेहै सभामैऐसोव

५९
59

मलीनहिनकोनिवारकरकेकहाद्दरकरके॥लाखलाखनिकेअनंतअनंतजीवनिकेजोहेलाखप्रकारकेकहाअनंतप्रकार
केअभिलाखमनोरथसोराजानेतहापूरनकीयेहै॥पुनः॥औरहूंवहुराजकेपरकाजदत्तनरेस॥जामदंडगयेउहैषे
दिनकेमनायवजेस॥गोनरावरकोभयोसुखभोनआगमतुल॥धामधामजुहारलोगचलेसभेचितफूल॥२९४॥वार्त्ता
औरभीअनेकराजकेकाजकरकेदत्तचतुरजोहैनरेसराजादिनकेद्वैपहिरवितीतभये वजेसजोहेश्रीकृष्णचंद्रति
नकोमनायकरकेसभामंदरसोंउठे औराजाकोगोनरावरजोहैमहिलताकोभयो कैसोगोन सुखकोभोनघर सर्वकोसु
खदायक फेरकैसो आगमकेसमान जैसीरीतसोंरावरतेसभामंदरकोआयेहुते वैसीरीतसोंसभामंदरतेफेररावरको
चले औसंपूर्नलोगराजाकोसीसनिवायकरकेऔचित्तमैप्रसन्नहैकरकेधामधामकोचले अपनेअपनेअस्थाननिकोचले
दोहा॥श्रीजुतह्रीजुतसुधीसुभभीविहीनसुकमार॥निजनिजसुंदरमंदरनिगवनेराजकुमार॥२९५॥वार्त्ता॥श्रीसो
माताकेसहित ह्रीलज्याकेजुत औसुधीवुद्धवान सुभकल्यानरूप॥अथवाजुतसद्देहरुनीदीपक लज्याकेजुतऔ
सुधीक्याभलीजोहैवुद्धताकेजुत औसुभअरु भीजोहैडरतासोंविहीन सुकमारकोमल ऐसेजोहैराजकुमारसोअ
पनेअपनेसुंदरमंदरनिकोगवनेकहाचले॥हाकलछंद॥उरुनिअनंतनिसोभघये॥उदैअनुग्रहइंदुभये॥मिसमंदु
हसनप्रकासभले॥दरसावतपथजातचले॥२९६॥वार्त्ता॥राजकुवरकैसेहै॥जिनकेउरजोहैहृदयसोअनंतआकासहै
तिनमैसोभासोंघायेहुयेअनुग्रहरूपीजोहैइंदुचंद्रमासोउदैभयेहै सोकैसेजानपरैहै मंदुकोमलहसनकेमिसतिनके
भलेजोहैप्रकासतिनकोदिखावतेहुयेमारगमैचलेजातेहै अनुग्रहरूपीसुसतिकोकोमलहासप्रकासहै मंदमंदनही
१७॥

१९०

58A

भनहै

लिमैनतियानिकेजीको॥ भषनश्रीमृगराजनरिंदविराजतसोभसन्पोस्रवनीको॥ २८४॥ वार्त्ता॥ कैसोराजाहै ऋरजकेस।
मानतोऋरऋभटहै याहीतेदुष्टदैत्यनिकोनासकरतहै ऋषिभगवानहूदैत्यनिकोसिंहारकरकेदिनप्रतिउदितहोतहै फेर
राजाकैसोहै भलीजोहैनीततामैऋरजहैकहाधर्मराजहै याहीतेजलदुग्धसमऋठसत्यमिलहुयेजोहैतिनकोहंसकीत
रहभिन्नकरतहै ऐसोन्यायकरतहै धर्मराजहूविवेकपूर्वकन्यायकरतहै फेरराजाकैसोहै वानधसमुद्रताकेसमजो
हैसंजुगजुद्धताकेमथनकोमंदराचलपर्वतहै याहीतेसत्रुवलविक्रमकेमारतरेदवेनहितहै फेरकैसोहै वाननिकीजो
हैविधानक्रीयातामैविजेअर्जुनकेसमहै याहीतेवानकमाननिकेगुनप्रियहै औदिनप्रतिजिनकोदानमैविक्रमप्राक्रम
विक्रमजोहैराजाविक्रमाजीततिनहीकोहै याहीतेविप्रनिकोधनदेतहै विक्रमाजीतनेवडेदानदियेहै फेरराजाकैसो
है हैसमानरागजेहैभैरवादिकसोईभयो।कसरोजकमलनिकोवनताकोअलिभ्रमरहै॥ याहीतेसंगीतकलाकोसु
नकेप्रसन्नहोतहै फेरकैसोहै तियाजेहैस्त्रीतिनकेजीववसकरनकोमैनकामदेवहै याहीतेराजश्रीजिनकेवसहै राजश्रीभी
स्त्रीहैयाते फेरश्रीपततेसिंहराजाकैसोहै सोभसन्पोअवनीपृथ्वीकोभषनहै याहीतेपृथ्वीकीसोभाजिनसोंसरसहोतहै॥
रूपमाला॥ सोधसोधकनीतप्रीतसमेतमीतनिपोष॥ देअदंडनिदंडचंडनिषंडषंडसरोष॥ पंकरंककलंकदीननाकेम
लीननिवार॥ लाषलाषनिकेकियेअभिलाषलाषप्रकार॥ २८३॥ वार्त्ता॥ ऋकहीयेभलीजोहैनीतताकोसोधसोधक
रके॥ औमित्रनिकोप्रीतजुतपोषनकरके॥ अदंडजेहैसनकसतिनकोदंडदेकरके॥ औचंडकहीयप्रचंडजेहैतुलम
कननवारेतिनकोसरोषकहारोषकेसहितषंडषंडकरके॥ औदीननिकेजोहैरंकमावकेकलंककैसेपंककेसमान

६०
सोथंनाहै कैसीसुंदरीसुंदर फेरकैसी सुकुअष्टजोहै सुधादुग्धतासोंपूरनहै यातेसुधासूतचंद्रमाकेसमहै चं
द्रमाकेसोहै जामैसकुसुधाअंव्तपूरनहै॥ कौनकविगनसकै तिससमग्रीकिघनेवहुतभेदतहाताकेहैदेषैहै के
60 सेभेदहै मोदआनंदकेकरनवारे जिनकोदेषकेचित्तप्रसन्नहोतहै औक्षुधाकेदूरकरनवारेहै॥ तोटक॥ वरनेकुजके
पयकेपलके॥ अतिस्वादितभेदवनेवलके॥ वहुरंगनिकेवहुरंगषये॥ सुमसवैसमैअनुकूलभये॥ ३०२॥ वार्त्ता॥ कुज
अन्पकेजेभोजनहैतिनकेभेद॥ औपयदुग्धकेभोजनोकेभेद॥ पलमांसकेभोजनोकेभेद जहाअतिस्वादितकहावहु
तस्वादकेजुतवरनेहैकहेहै ऐसेवलभोजनकेभेदवरनेहै फेरकैसेहै वहुरंगनिकेकहावहुतभांतकेभेदहै सोवहु
तरंगनिसोंषायेहुये अषवावहुतभांतकेरंगनिसोंषायेहुयेवनेहै सवैहीसुमहैनीके है औसमैअनुकूलहै जैसा
समैतैसेईवनेहै॥ चौरस्ता॥ मधुरसलोने॥ समविधलोने॥ वनतनगाये॥ तनमनभाये॥ ३०३॥ वार्त्ता॥ मधुरमीठेभेदहै
औसलोनेभेदहै सविप्रकारसोंसुंदरहै वरनेवनतनही अनंतहै सवैहीतनमनकोभायेहैप्रियलागेहै॥ रूपमाल
सकिरानिमितपदारथसोभवानअंतपार॥ कूषमांडरूसूरनादिककेअनेकप्रकार॥ हैवनीमनरोचिकाहिममोच
काअभिराम॥ औमुरारसुधारंभनिकेकियेफलआम॥ ३०४॥ वार्त्ता॥ सर्किराषंडताकेनिमितरचेहुयेसोभावानअ
नेकपदार्थजहांमधुरवनेहै कूष्माडपेठे॥ औसूरनजिमीकंदतेआदिलेकेऔरूभीअनेकतरहकेकंदतिनकेअ
नेकप्रकारकेभेदवनेहै औमनरोचिकामनकेरुचनिवारीहिममोचिकामरीसोअभिरामसुंदरवनीहै औमुरा
रजोहैमिहांतिनकोसुधारवनायकरकेरंभजोहैकेलातिनकेआमफलक्याकेचेफलवनायकरकेकीयेहै॥ पधुरी॥
वृंदाककंदछत्रानवीन॥ कीनेसुधारहेयंगवीन॥ औरोअनेकवरनेनजात॥ फलफलमूलदलविवि... ३०

59A

हस्तत हसनके घलकरके तिनकी किरणोप्रकासकरावतेहुयेजातहै॥दोहा॥परम मनहरहरमनिमहीकरप्रवेसदुति कीनो॥
वयमतकेअनुसारप्रियलीलामैचितदीन॥२८९॥वार्त्ता॥ परउत्तम श्रोमनहरक्यामनकेहरनवारेसुंदर ऐसेजोहेहर
रममंदरतिनमैप्रवेसकरकेजिनोनेदुतिप्रकासकीयोहे वयवहिक्रमकेश्रोमतिवुद्धकेअनुसारजोप्रियलीलाहैतामै
चितदीयो जैसीवहिक्रमअरोवुद्धहैतैसीलीलामैमगनभये॥तोटक॥जवरावरमैनृपनाथगये॥वहुमंजुलमंगलमोदभये
सुचिमंदरजोसुभसोभरयो॥तिहजायविराजतरायभयो॥२९०॥वार्त्ता॥नृपनाथराजनिकेराजाश्रीफतेसिंहजवरावर
महिलनिमैगये तवमहिलनिमैमंजुलमनोहरमंगलओमोदआनंदछायगये जोसुभसोभासोभिल्योओसुचिपवि
त्रमंदरहुतोतामैजायकेरायजोहैराजासोविराजतभये॥पुनः॥परचारकचारुपवित्रभले॥वलकोसुखपायसुधायच
ले॥सभजायमहानअगारनिमै॥सुधिदीनप्रवीनसुआरनिमै॥२९१॥वार्त्ता॥तासमैपरचारकजोहैदासकेसेचारुसुं
दर ओपवित्र ऐसेजोहेसेवकसोराजाकोसुखपायकेवलजोहैमोजनताकेलैनकोधायकरकेचले॥तिनोनेमहानरसोई
जोहैअगारघरतिनमैजायकरकेप्रवीनचतुरजोहेसुआररसोईयेतिनमैभोजनकेलेजानकीखवरदई॥पद्धटिका॥स
मसूपसास्त्रवुधसूपकार॥धरतिनकेवैनहियेमंझार॥सुभअसनसौंजहैसावधान॥लागेअसेषपरसनसुजान॥२९२
॥वार्त्ता॥संपूर्णसूपसास्त्रमेवुधक्यापंडितजोहेसूपकाररसोईयेसोतिनपरचारकनिकेवचनचित्तमैधारनकरके॥
ओसावधानहेकरके सुमनीकीजोहेअसनसोंजभोजनकीसमग्री असेससंपूर्णताकोपरोसनलगे॥भुजंगप्र
यात॥वनीसौंजसंभोजकीजत्रसूरी॥सुधासूतकीसीसुधासुद्धपूरी॥गनेकौनताकेघनेभेदताके॥महामोदका
रीप्रहारीछुधाके॥२९३॥वार्त्ता॥जत्रकहाजहांरसोईकेमंदरोमैसंकहीयेभली भोजभोजनिकीजोहैसोंजसमग्री

६१ 61

तसरूपसेलसतहै औरजे धाररजतचांदीकेनिसापतिचंद्रमासेलसतहै तिनधारनिकेविषैनिपुनचतुरजोहैसुआर
रसोईयेतिनोनेवनायकरकेजधाजेगसंपरणभाजनपरोसेहै॥जिनधारनिकौलनिकीअवली॥मनमोहतसोहत
भांतिभली॥तिनतेजिनकीमहिमासरसी॥दरसीपरसीसरसीसरसी॥३११॥वार्त्ता॥जिनधारनिमैकमलनिकीअवली
रंगतीमनमोहतहै औभलीप्रकारसोभितहै तिनकौलनिकीअवलीतेजिनधारनिकीमहिमासरसीहै अधिकभईहैसो
कहितहै सरसीजोहैसरोवरताकेसरकहावरोवरजिनकोसीसोभासपर्सभईदरसीदेषीहै सरनिकेसमानसोभाहै॥
सरनिमैभीकौलहोतहै॥दोहा॥प्रथकप्रथकतिनमैधरीवस्तवनाइवनाइ॥सोभाकरहाटकनिकीनहीसकोलमधि
घाइ॥३१२॥वार्त्ता॥तिनकौलनिमैसकलवस्तप्रथकप्रथकभिन्नभिन्नवनायकरकेधरीहै कैसीहै सर्वविषेकरहा
टकनिकीसोभाधायरहीहै वस्तनहीमनोकमलनिमैकरहाटकैहै केसरहै॥पादाकुलक॥अमलउदकभाजनअति
रूरे॥देवधुनीपैपावनपूरे॥वहुरपानभाजनछविछाये॥भांतभातनहिजातगनाये॥३१३॥वार्त्ता॥अमलनिमैलऔअतं
तसुंदरउदकभाजनजलकेपात्रहैजहा कैसे देवधुनीश्रीगंगाजीकेपवित्रजलसोंपूरनभरेहुयेहै औसंगहीजिनकेसुंदरपान
भाजनहैपीवनकेपात्रहै सोभीअनेकप्रकारकेहैगनायेनहीजात॥दोहा॥लेपरचारकअसनसचसोंजसमैअनुकूल॥दीपदीप
अवनीपकेगयेसमीपसफूल॥३१४॥वार्त्ता॥परचारकसेवकलेकरके सचपवित्रभोजननिकीसौंजसमग्री॥कैसीसमैकेअ
नुकूल जासमैजोसंभवहैतासमैसोईवस्तसविकोलैकरके जंवूदीपकोदीपकजोहै अवनीपमहाराजाधीकतेसिंहतिनकेसमी
पगये॥आनंदकेजुक्त॥कवित्त॥पीरीभईरजनीपरनतेसलौनीदार नेतसोंसरसतुरसाईमुषमाईहै॥पापरसतोरी

60A

वै०॥

वार्त्ता॥ वृंदाकवतारू॥ औकंद॥ घरुआ सुंवा॥ है यंगवीनजैदे तातकालको द्वतत सोसुधारकरकेवनायेहे औरुभी अनेकप्र
लफलमूलदल अनेकभांतसोंकीनेहै सोवरनेनहीजात फलकचनारादिक दलसाकादिक॥ आभीरछंद॥ छुद्रागरीवदाम
वारकादिअभिराम॥ सकलविचारविचार॥ मेलेसौजसुधार॥ ३०६॥ वार्त्ता॥ छुद्रादाष औगनी औवदाम वारकछुहारेइत्यादिकजे
मेवेहै सोसवविचारविचारके कहाजिसजिससौंजमेजोजोउचितहैतिसतिसमेसोसोमिलायो याप्रकारसवसौंजमेंसवसुधार
करकेमेलेहे मिलायेहै॥ चौपई॥ जीरकएलादुविधलवंग॥ जात्रीफलपुंगीफलसंग॥ कुमकुमकर्पूरादिअपार॥ कुंकमजु
जपुनसारंगसार॥ ३०७॥ वार्त्ता॥ जीरकजीरा द्वैप्रकारको स्यामस्वेत॥ एला इलायची द्वैविधकी वडीलघु लवंगलोंगजा
त्रीफलजायफल पुंगीफलसुपारी इनकेसंगसौंजहे कुमकुमगुलाव अघवाओरुकोईसुगंधद्रव्यहोतहै कपूर कुंक
मकेसर सारंगसारकसूरी इनतेआदिलेके औरुसुगंधकेद्रव्य अनेकतिनकेसहितसौंजवनीहै॥ दोहा॥ सतपुसा उप
णका॥ संजीवनीनवीन॥ सूकतुंवरनागरजतुक॥ शृंगवेरकरलीन॥ ३०८॥ वार्त्ता॥ फेरसौंजकैसीहे सतपुसासौंफ॥
उपण छोटीयांमिरचां॥ कणपिपला संजीवनीजवायण सूकतुंवरधनीया॥ नागरसूंठ जतुकहिंग शृंगवेरअदर
कइत्यादिमसालेकेजुतहै नागरसंवोधरनदेयतो चतुरकोअर्थ॥ पुनः॥ विविधवस्तुवर औरुहूं अमलसौंजअनुकू
ल॥ अशनअसेषनिरेखियत तिनकेजुतसुषमूल॥ ३०९॥ वार्त्ता॥ औरुभी अनेकप्रकारकीजे अमलसौंजकेअनुकूलअ
ष्टवस्तुहै तिनकेसहितअसेषसंपूर्नजोहे असनभोजनसुखदायकनिरेषीयतहैदेषीयतहै॥ पुनः॥ दिवसनिसापतिसे
लरजतरजतके थार॥ निपुनसुधारनिअसनसमपरसेतिनमंझार॥ ३१०॥ वार्त्ता॥ जेथाररजतरूपेकेदिवसप

६२ साकवीरनसोंछाईहै क्या साकग्रोवीरेपाननिकेइनसोंछाईहुईहै॥फेरकैसीहै मंडपनीरावासतरूगंधतहैजामै ग्रोनसालाक्यारा
कुहै॥ग्रेसीसेंजकीसीजोहैसोभासोवसनजोहैवस्त्रतिनमैवसकानकेक्यावस्त्रनिसोंग्राछादितभूपराजाकेनिकटनवोढज्यों।
62 ग्राईहै नवोढापत्रग्रर्थ॥नवोढानायकाकैसीहै सषीसषीवचन हेसषीरजनीजोहैरात्रताकेपरनतेकहाग्रावनतेवरजोहैस
त्रोनीसंदरदारस्त्रीसोपीरीभईहै क्योंरात्रकोपतिसोंसंजोगहोयगोयाभयसोंपीतवरनभयोहैजाको ग्रोजाकेसुषमेनेहसोंक्या
प्रेमसोग्रधिकतुरसाईसमाईहै जैसीतुरसाईसरसहैग्रेसोप्रेमसरसनही जोसषीलैजायोचाहतहैताकोतुरसबोलतहै
ग्रोनवोढाहै कछुपतिसोंविस्वासभीहै यातेकछुनेहभीहै पैतुरसाईवहुतहै फेरकैसीहै पापरसतोरी सषीनेताकेपांयपर
सकेक्यापांयपरकरकेनायककीतरफतोरी लैचली फूरीग्रमलसोंवीरवनी वीरसंबोधन हेवीरवहजोवहजोवनीहैदु
लहनिसोग्रमलसोंपरनकरी कछुग्रमलषवायदीयो ग्रथवा वीरवनीकहा पतिकोजोहैवीरभाईताकीदनीकोनभर
जाईतिसनेकुछकग्रमलषवायदियो फेरकैसीहै लाजावृतपायससितकीरुचराईहै॥जद्यपग्रमलभीषवायदियो प
रतोभीससीजोहैचंद्रमाजासमैउदैभयो तासमैचंद्रमाकोपायकरकेजाकीसुंदरतालाजसोंग्रावृतछाईहुईताकीकहा
देषी चंद्रमाचढेलाजमैसमायगई ग्रथवा रुचराईकोग्रोरग्रर्थ॥चंद्रमाकोपायकेलाजसोंछाईहुईदेषी ग्रोरुच
जोहैचाहनानायकसोंमिलनकीसोजाकोराईहैक्याराईप्रमानहै थोडी राईकोग्रर्थ [illegible] सोंथोडीजानीयेलजपास
रसहै रुचिग्रल्पंतथोडीहै याहीतेतरलाहैचंचलहै इतउतभागवेकोदाउदेषताहै फेरकै [illegible] समोदन क्यामोदजो
हैग्रानंदताकेसहितनहीहै भेजुताहै क्योंसंदिग्धहै संसैहैजाको नायकपासगयेलपाजानी [illegible] पाविवस्थाहोय [illegible]
सैहैजाको ग्रथवा॥तरलासमोदनसंदिग्ध याकोग्रैसेग्रर्थकीजै [illegible] मलहै चंचलहै ग्रोग्रस [illegible]

61A

फनीअमलसौंवीरवनीलाजावत पायससिताकीनाचिराईहै॥ तरलासमोदनसंदिग्धफुलका[..]गमानदहत॥
वीरनिसौंषाईहै॥ मंडमहीवासतरसालासीवसनवसभूपपैनवोढाज्योंअसनतेसौंजभ्याईहै[..]ए॥ वार्त्ता॥ असनसौंज
राजाकेपासनवोढानायकाकीतनहआईहै नवोढाकोलक्षनआगेनायकाभेदमेंकहेंगे॥ अ[..]सौंजपदार्थ॥ वैसीसौंज
है रजनीजोहैहरदीताकेपरनतेक्यामिलनतेसलोनीजोहैदानदालसोंपीरीभईहै अथवा रपीरीकोईभोजनविसेष
है सोभीभईहै यहभीअर्थहै येपहिलोईअर्थचमत्कारीहै फेरसौंजकैसीहै नेहसोंकहानेहजोहैघृतताकेसहितहै अैस
रसहैरसजोहैषटरसतिनकेसहितहै अथवारसकेजुक्तहै औमुखनामकवावकोहै कवावकैसेहै जिनमेंतुरसाईक्या
खटाईसोमाईहैसमाईहै अथवा नेहसोंसरसतुरसाईमुखमाईहै॥ कहा मुखजोहैकवावतिनमेंनेहघृतसोंसरस
अधिकातुरसाईहै तुरसाईयोनीहूहोयतोभीघृतकेसवादसोंभिन्नस्वादजाकोमलूमदेतहै॥ फेरसौंजकैसीहै पापरहै
जामे सतोरीकहातोरीजोतरकारीविसेषहै ताकेसहितहै औ फनीअमल क्यानिर्मलफनीहैजामें सौवीरकांजीसोजा
मेवनीहैस्वादितहै फेरसौंजकैसीहै लाजावत कहालाजाजोहैं फलीयांतिनकेजुक्तहै फेरजिससौंजमेंपायससीरयों
सितामिसरीताकीरुचिराईसुंदरताउज्वलताघायरहीहै फेरसौंजकैसीहै तरलाखिचडीहैजामें औसमोदनकहा सं
कहीयेभलेहैओदनचाउलकरेहुयेजामें औसनिग्धक्यासचिक्कणहैफुलकाजामें रीसंवोधनकोईसखीसखीप्रतिकहितहै
री सखीअैसीसौंजहै अथवा सनिग्धफुलकारीमान याकोअैसेअर्थकीजे रकाररलकाराकोहै रीकोजीमयो फुलकाली
कहा फुलकानिकीजोहैअलीपंगतीसोजामेंसचिक्कनहै फेरसौंजकैसीहै मानदहीभले क्याप्रमानकेजामेंदहीभलेहैं प्रमा
नकहाइतनोदहीइतनोमसालाइतनोलवनइत्यादिप्रमानजोसूपसास्त्रमेंलिख्योहै ताहीकेअनुसारवनायेहै फेरकैसीहै॥

MSS. NO 327

(have some Unorganized Folios)

७ हांपावसहै तहांपावसहीं इत्यादिजानीये॥ वामेजोरितुहै वाहीकोप्रकासहै औररितुकोवाकेगयेहोततहै॥ फेरचित्रग्रष्टकैसीहै॥ जामैसर्वकोव
रसुंदररूपहै॥ वामैकुरूपवारेभीहै॥ फेरचित्रग्रष्टमैजरावधतानहींहोत॥ वामेहोततहै॥ याप्रकारकविग्रौवुधपंडतयाकीग्रद्भुतरीतकहि
तहै॥ भुजंगप्रयातछंद॥ कहूंकामनीनैनपीसोंविहारै॥ कहूंवारसीग्रारसीलैनिहारै॥ कहूंमानसोंमाननीप्रीतकीनी॥ दोऊपांयदीदीठपीपी
ठदीनी॥४१ वार्त्ता॥ भावचित्रग्रष्टमैदेषियतहै कहींतोरैनमैस्त्रीपीयासोंकेलकरतहै औकहूंग्रपनेवारकेसनिकीजोहैसीसोभाताको
ग्रारसीलैकेदेषतहै किंवावारवालहैताकहै वालजोहैस्त्रीसोग्रारसीलैकेसीसोभाग्रापनीकिंवामित्रकीदेषतहै॥ औकहूंमाननीमानके
संजुक्तजेस्त्रीहैतिनोनेमानहीसोप्रीतकरीहै॥ ग्रपनेदोऊपायनमैदीकोग्रर्पदईहै दीठजिनोने औपींनायककोपीठदईहै॥ पुनःछंद॥ कहूंपां
वरूरेपीयासोंमवावै॥ ग्रलतैदिवावैमहामोदपावै॥ कहूंरैनप्यारोनसंकेतग्रायो॥ घनींसोचकैप्रेयसीसीसनायो॥४२ वार्त्ता॥ कहूंना
यकाग्रपनेरूरेसुंदरजोपांयहैतिनकोनायकसोंगवावतहै॥ क्यामंजवावतहै॥ औग्रलतजोहैमहावरताकोदिवावतहै॥ यातेवडेग्रानंदकोपा
वतहै॥ ईहांस्वाधीनपतिका॥ औकहींरैनमैप्यारोसंकेतविषेनहींग्रायो तहांप्रेयसीजोहैप्यारीतिसनेवहुतसोचकरिकेग्रपने[illegible]रन
है नीचोकीयोहै ईहांउत्का॥ पुनःछंद॥ कहूंग्रासपीग्रायवेकीलगीहै॥ लषैद्वारत्योंचाहकामाजगीहै॥ कहूंमानसानीनमानीम[illegible] ४३
वैग्रलीकोहितकेसिषाये॥४३ वार्त्ता॥ कहूंकामास्त्रीकोपीयाकेग्रायवेकीग्रासालगीहै यातेसंकेतकेद्वारकीत्योंतरफदेषतहै॥ कहूं[illegible] ४४
चाहनाजाकोजागीहै॥ यहवासकसज्या॥ औकहूंनायकाग्रैसीमानमैसानीहै मिलीहैजोमनायेहूतेनहींमानी॥ फेरहितमित्रको[illegible] ४५
क्यागयेतेग्रलीसषीकोपठावतहैलैनको॥ यहकलहंतरता॥ पुनःछंद॥ कहूंसापराधीपियाजानप्यारी॥ दईचीरकेकोसग्राधैपताकें
हूंमित्रकीग्रोधवालाविचारै॥ हियेमालतीमालसोभानिहारै॥४४ वार्त्ता॥ कहूंप्यारीनेपियाकोग्रपराधकेसहितजानके [illegible]निसंग[illegible]
ग्राधैहै सोचीरकहीयेवस्त्रहीकोजोकोसहैप्यानतामैदई॥ यहषंडता॥ कहूंस्त्रीनायककीग्रोधकोविचारतहै हियेहीहै माद[illegible]
कीमालाहैताकीसोभाकोदेषतहै॥ नायकग्रवधदेगयेहै जिननेचिरमैयहमालाक[illegible]रग्रावहिनेकोविडं

रगीगनआदिकसर्वजहांमनमैंमुदितरहितहै॥फेरकैसोहै हरतपटकोअर्थ हरतनामदिसाकोसोईपटवस्त्रहैजाके।रुद्रदीप
सुगंधकेसहितहै चौपई छंद॥सारकानिकरभावतघनो॥सुरनिकलतत्रिदसालैमनो॥विविधसुगंधजहांनि[illegible]
सोदरलसै॥३७ वार्त्ता॥सारकापक्षीतिनोकरकेवहुतभावतहै पिंजरानिमेंसारकावोलतहैजहां॥सुरजोहैसप्रसुर[illegible]
सोकलतकपाव्याप्तहै॥सातोसुरगाईयतहैजहां॥सोवुरजनहीमानोत्रिदसालयहैस्वर्गहै स्वर्गकैसोहै सारकाअप्सरातिने[illegible]
कोअर्थसोभायमानहै सुरदेवतातिनकेसहितहै॥फेरवुर्जकैसोहै जहांअनेकप्रकारकीसुगंधहै॥सोमानोमलैगिरमलि[illegible]
सोदरवंधुहै आर्धउपमाकरिसमानजानीये॥मलयाचलकैसोहै वामैंभीअनेकप्रकारकीसुगंधवसतहै पद्धरी छंद॥जहांन[illegible]
त्रकीअतिअनूप॥सववरनविराजतविवधिरूप॥नहिवरनसकैधिविवचनईठ॥रचनात्रिधामकीपरतदीठ॥३८ वार्त्ता॥चित्रसा[illegible]
अनूपसुंदरचित्रकीअछहै॥कैसीअछहै॥जामैसंपूर्नवरनविराजतहै वरनकेदैअर्थ रंग सोव्राह्मनआदिवरन॥औ॥विवि[illegible]
रकेरूपहैजहां॥विधकीअछमैभीऔ॥चित्रअष्टमैभी॥दे२ ठहे मित्रतिसकीधिविकोवचनकहिनहीसकत॥त्रिधामतीनहींलोककीरच
नाजहांद्रष्टमैआवतहै॥ पुनः छंद॥नहियटतवढतनिसद्यासजोत॥ससिसूरअचलनहिअस्तहोत जहंरातततहांनहिहोतप्रात॥जहप्राततहांनहि
परतरात॥३९ वार्त्ता॥यहकैसीअछहै याकीजोतरातदिनमैघटतवढतनही सज्याकीअछकीघटतवढतहै॥फेरयहचित्रअष्टकैसीहै यामैंस
सिचंद्रमाऔसूर्यएअचलनिश्चलरहितहै॥औरुअस्तनहीहोत वामैचंद्रमासूर्यभ्रमतहै सोअस्तहैजातहै फेरचित्रअष्टकैसीहै॥जहांरातहैत
हांप्रातनहींहोत॥जहांप्रातहैतहांरातनहीपरत॥वामैप्रातगयेरातआवतहै रातगयेप्रातआवतहै॥ पुनः छंद॥जिहिमध्यसदाषटरितुनिवास
इकइकरितुकोसवरितुप्रकास॥वरनकलसरूपजरानमीत॥इमकविवुधअद्भुतमनतरीत॥४० वार्त्ता॥फेरचित्रअष्टकैसीहै जाकेमध्यस
दाषटरितुरहितहै वामैवारंवारसमैसमैआवतहै फेरएकएकरितुकोसर्वहीरितुनिमैप्रकासहै॥जैसेजहांवसंतरितुहैतहांवसंतमैभी
वसंतहै॥औरुवसंतकेगयेग्रीखममैपावसमैसरदमैहिमंतमैसिसिरमैसर्वरितुमैवसंतहीरहितहै॥ऐसेजहांग्रीखमहैतहांग्रीखमहीज

६

आदिकरातकीरागनी तिनकेसहितहै॥अर्थयहजामैसर्वरागऔसर्वरागनीगाईयतहै फेरकैसोहै तालजेहैगायनविद्याकेसोतहांजानजौ
चतुरतिनकेकाननकोक्याअनंदनोकोसुखदैहै केहेतक्याकारनहै॥चतुरनकोसुखदेतहै॥फेरकैसोहै नागनामश्रेष्ठको श्रेष्ठपुरुषनिविशेमु
खक्याश्रेष्टप्रधम औतीनजोसकतहै तिनकेधारनवारोअैसोजोहैन्रपतराजासोजहांराजतिहैसोभतहै फेरराजाकैसोहै [illegible]धिककोअर्थ क
नामसुखको अघनामविषैको सुखकेविषैहैराजा किंवाधिकनामनिंदाकोहै राजाअधिकहैनिंदातेरहिततहै औविभ[illegible]संपदाकेसमै
तहै राजाकिंवाबुरज॥वामैभीसंपदावधुतहै फेरकैसोहै मधुपोकेजोहैगनसंदूहतिनोकरिकेप्रमुदितक्याप्रकार्यकन्केमुद्रितरहितहै
क्याधायोहुयोरहितहै॥अर्थयहचहूंओरजाकेभ्रमरगुंजततहै फेरकैसोहै मानससकलहरत क्यासर्वकेजोहैमानस[illegible]नतिनकोहर
तहै॥क्यासुंदरहै॥ औपटवासजोहैअंबरिकोसुगंधताकोनिकेतहै सर्वदाजामैअंबीरकोसुगंधरहितहै ध्वनिपहस[illegible]जामैफागकी
होतहै क्रीडारहितहै॥किंवामानस सकलहरतपट॥जिसकेपट जोहै किवारसोसर्वकेमानसकोहरततहै औवाससुगंधकेसहितहै [illegible]
मैशब्दसत्तमूलहै तिनतेकैलासपर्वतसोंऔराजाकेबुरजसोंउपमानोपमेयताव्यंगहोतहै॥शब्दतेअलंकारध्वनिहै [illegible]
पद्मअर्थ॥ कैसोहैकैलासपर्वत॥सुरतरंगनीजोहैश्रीगंगाजीताकेसहितहै औसोमजोहैचंद्रमाताकीजोहै कलाकिरनत[illegible]
इनकरिकेवामक्यासुंदरलसतहै॥औवासुकनामानागजहांप्रविदेतहै फेरपर्वतकेसोहै भैरोशिवजीताकेसहितहै गौ[illegible]
जीकेसहितहै औकाननवनताकेसहितहै तालसरोवरतिनकेसहितहै जानकोअर्थजानोयावातको औसुखकोकारन[illegible]
कैसोहै॥जहा नागमुखनृपतसत्ताधर॥नृपतसंबोधनहै हेराजन् जहानागमुखगनेसजीहै सत्ताधरसामर्थ[illegible]
वडोसोभतहै औविभूतनामघारको शिवजीकीजहांधूनीहै यातेविभूतकेसहितहै॥किंवाविभूतकोऔर
जीको पत्नीयोंकेसहितहै औरभूतनिकेसहितहै भूतशिवजीकीसेनाहै याहीतेभूतेसनामशिवजीध्यान चीकिआ
मधुपगनजोहैभृंगीगनआदिक सोसकलजहांमानसमनमैप्रमुदितरहितहै क्याआनंदितरहितहै किंवामधुप

[illegible] जावे क्याधारतहै॥

तिनकोसुखदेतहै फेरतालकैसोहै आपतोबंधनमैपरतहै औरऔरननिकेबंधनोकोहरदेतहै जोतलाबबंधावतहै तेहहैजाके रुद्दीप
है यहग्रर्थ॥ तोटकछंद॥तटपैनपचैवरनैनगसै॥जनुचारुकसारसिंगारलसै॥ऊषकेतनिकेतसमेतप्रभा॥छविपुंज[illegible]
नी॥ चैनामबुरजको तालकेतटकिनारपैजोहैराजाकोचैबुरज सोवनक्यासुंदरहै॥ औरनेत्रनिकोगसतहै लच्छनातेवसंकचुसुकर[illegible]वर
निकोगसतहै कैसोबुरजहै मानोकसारजोहैतालताकोचारुसुंदरसिंगारहै तिसबुरजकरकेतालसोभापावतहै फेरबुरजकर[illegible]
केसमानजोहैंवालस्त्रीतिनकीसभाजहांछविदेतहै॥सोमानोबुरजमुखकेतजोहैकामताकोनिकेतघरहै कैसोहै प्रभासोभाकेसमेतहै [illegible]
है कामकीवालस्त्रीजोहैरतिताकीसभाजहांछविदेतहै॥भुजंगप्रयातछंद॥लसैसेतभासोंसुधासोंसुधास्यो॥सरत्कालकोमेघमानोतनि[illegible]
जहांकामनीदामनीसीप्रकासै॥मरोछामआवंधधद्योतभासै॥३४ वार्त्ता बुरजकैसोहै सेतसपेदजोहैभासोभातासोंलसतहै [illegible]
हैतासोंसुधास्योहैवनायोहै॥ यातेसेतहै सोसरत्का[illegible]सरदरितुताकेमेघकेसमहै सरत्कालकेमेघकविनसेतवरनेहै औरि[illegible]
हादामनीबीजुरीसीप्रकासतहै औतिनकेसरीरमैआवंधभूसनोकीपांजोहैमणिसोईसद्योतपटबीजनेहै॥पद्धरीछंद॥सोहत[illegible]
दुवारजार तिनमारगहैआवतवियार॥ तीछननिदाघदिनमध्यमांत जहंरहितहिमंतनिसीपसीत॥३५ वार्त्ता॥कैसोबुरजहै मंजसुंदरजिसकेव
हुतवार[illegible]दरवाजेहैं औजारजालहैंमरोखेहै रकारलकारएकहै तिनकेमार्गहैकेवयारजोहैपवनसोआवतहै यातेतहांनि[illegible]कहिताचीखम
कोतीछनजोहै दिनकामध्यदुपहरतामैहैमीतहिमंतरितुकीजोहैनिसीपआधीराततकोसीतरहितहै॥सवैयाछंद॥सुरतरंगनीसोम
कलाजुतलसतवामवासुकछविदेत॥भैरोजुतगौरीकेसंजुतकाननतालजानसुखहेत॥जहांनागमुखमुख[illegible]सहितछाद[illegible]जतअधिकविभ
तसमेत॥प्रमुदितरहतमधुपगनमानससकलहरतपटवासनिकेत॥३६ वार्त्ता॥फेरबुरजकैसोहै॥जाविषैसुरतवध्यासंभोग[illegible]रंगनी
क्यारंगतवारी अर्थयहअनुरागजुक्त करनवारी औरसोमक्याअप्रसूता औकलाचतुराई किंवाकामकला।तिनकेसंजुक्त ऐसीजोहैवाम
स्त्रीसोजाविषैलसतहैसोमहैहै॥फेरकैसोहै॥वासकजोहैपुस्पोकेहारसोजहांछविकोदेतहै फेरभैरोआदिजोहैप्रातकेरागऔगौरी

सुसमोद मोदके सहित जो न होय सो असमोद या... गत त्यौ नायका को वदं ...हे मंडल को मोद होत है ...कामसो ताको लछकेव
...ति कह्यो समोद भी है औ असमोद भी है याही ते जाको नकार जो है नाही नाही कहै रस पर्छ संदिग्ध है जामे नेह औ मे
...कत है अथवा न संदिग्ध कह्यो सच्चिकन नही क्यों भय वीजा मै है याते रुषाई जा ... है चिकनाई नही फेर कैसी
...कानी वीच अर्थ पुलकानी जो है वस्त्र विसेष ताके मध्य है सवि अंगजि सने पुलकारी मे थिपाये है फेर कैसी है मले
साक संबंध तिन सो औ अरुष जो है वीन कनीभषन तिन सो मानद जो है नायक ताको हीकही ये हृदय विषे धाई है ...
...ई है नायक को हृदय आवृत कीयो है अथवा मानद ही मलेसाक वीरनि सो धाई है याको औ अर्थ कीजै वीच पद दे
पपक पुलकानी के वीच है॥ औ मानद जो नायक है ताके हृदय के वीच है नायक को जाकी उलकंठा लगी हुई है फेर कैसी
...है साक संबंध जाके या मै स्वकीयत्व सूचन कीयो औ वीर जो है कनीभषन तिन सो धाई हुई है कनीभषनो सो धाई नही व
...सो तिनकी सोभा सो धाई हुई है कनीभषनो की छवि जाके कपोलनि मै पैली हुई झलकत है याते धाई कही अ
...की अधिकाई आदि ध्वनि अथवा धाइ या पदकी अन्वे सव ठौर नायक के हीये मै धाई है मलेसाकनि सो धाई
...कैसो सो धाई है इहा नायका की रीत द्योतन करी सुंदर सिंगार यथा नवोढानि की रीत पहरनवभषनकी चा
जहां मन कैसी है मंड मही वासत रसाला सी वसन वस अर्थ वासत सुगंधत औ रसाला सभनी है सो कही ये
उपजावत है नायका सो मही जो है प्रथ्वी ताको मंड करके कह्यो सोभायमान करके औ वसन वस्त्र ता मै वसकर
राजा को ... ई अथवा वासत रसाला सी याको औ अर्थ तर अतिसय जो है वास सुगंध ताकी साला सी स्थान
...वासै सो मंड करके प्रथ्वी को औ वसन वस क्या सषी जनो के वसों मै वस करके पति के समीप ल्याई अर्थ किआ

मापप्रका॥ ...

१५

तिनकोरूसदे कामे

है यहअर्थ॥ तो ट घीयोंकेवसनमेवसकरकेआई सोनवोढाकीरतिपराधीनहोततहींहै॥दोहा॥भलेकेरेलेसखवरीमो

नी॥वैनामबुरजके रखनसहितकियेलियेनानारसरूपसरूप॥३१६॥वार्त्ता॥फेरभोजनकीसमग्रीकैसीहै भलेसे

निकोरसतहै कैसो ओसखवरीहै कहारवरीकेसहितहै रवरी ुग्धओकंदकीवनतहै सोव्रजमेप्रसिद्धहै औवि

केसमानजोहैवाल भोगलगतहै फेरसौंजकैसीहै सुंदरमोहनभोगहैजामे फेरकैसी घनघरसहितकिये सहित

है कामकीवारसोजामेघनरसजोहैषटरसतेश्रेष्ठकीयेहै वनायेहै तिनसौंजकेनानाअनेकप्रकाररूपसुखदायक

जहांकामदीपतेसिंहनेलीयेहैक्याग्रहनकीयेहै नवोढापक्ष॥ सखीजाकोनायकपासल्याई भलेकनेलेसखवरीमो

हैतासों अर्थजिसनायकाकोसुखरीनाजमेलैकनकेक्याग्रहनकरकेनायकनेमोहनजोहैमोहनेवारेभोगक्या

हादसतोंसुंदरकीये॥हितप्रेमकेसहितवरजोरऔघरखलनायकनेकीये यौंनारीनारीकेजेरूपसरूपरसहैसोजासोंली नाना

हुव पाये अपवानायकानेवलघलकेसहितजो नारीनारीकेरसकियेहै सोनायकनेलीयेग्रहनकरे वेकैसेरसहैसु

रूपहै यहअर्थ॥दोहा॥अवधावतलसैसरसविविधलद्दजात॥ हरतव्यंजनावत्तचितसौंजकिसतकविहोत॥

को वार्त्ता॥सौंजहैकिश्रेष्ठकविकीहोत्तहैकवितहै सोजपद अवधाजोहैनामतिनोयरकेआवतधाईहुईलसतहै अधिकपिभ

क रनकेभोजनोकेनामहैजामै फेरकैसीहै सरसहै रसत रसतिनकेजुतहै फेरकैसीहै विविधअनेकतनहके हुयनी

तसम तिनसोंआवतहै फेरकैसीहै हरतव्यंजनावत्तचित्त व्यंजनोकरकेआवत ाकामद चित्तकोहनतहै अैसी

क्यारंगत तापक्ष कैसीहै अवधावत्तजामैलसतहै औरस जोहैअंगानादिवतिन फेरमेर तहै औविविधअदेगआगारी

खीसोज तनावत्तजामैलसतहै फेरकैसीहै जामैअ व्यंजनाव्तचित्त रस रसअंगहत

ऽहै सरूपभगवानसोजाकीप्रभाकोअनंतआकासमैप्रकासतहै।।सरपच्छअर्थ।।तालकैसोहै मकरध्वजजोहैकामसोजाकोलच्छकेव
औचारोतरफजाकेखगपंछीहै।।फेरकैसोहै।।कुवलयकोअर्थ कुनामपृथ्वीको वलयमंडल कुवलयजोहैभूमंडलताकोसुखकरत
कोभीहै सोजाकेचारोतरफभूमंडलकोसुखदेतहै।।लच्छनाकरिकेपृथ्वीकेलोगनिकोजानीये फेररसपंछीसोजाकीअनंतबहुतसो
दोहरा।।जेतियमानवतीनहीतिनकोदेतप्रमोद।।जेतियमानवतीनहीतिनकोदेतप्रमोद।।२९ वार्त्ता।।नहीशब्दकोइतउतलगै
अरिलछंद।।चटकसारकाखंजनमोहत।।महावीरकामीबहुसोहत।।सारंगधुनिजिहिरसउपजावत।।गनकाघरसमसरस
वार्त्ता।।सरकीछविगनकाकेसदनसमहै गनकाकोसदनकैसोहै सारकाजोहैसारंगीतिनकीजोहैचटक किंवा चटकऔसारका
कोअर्थ जनमनुष्यनिकेजोहैखंक्यामनतिनकोमोहतहै।।किंवासारकानामअपछराकोहै इहांसाध्यवसानालछनाकरिकेअतिसुंद
लीजे तिनकीचटकजहांजनोके मनकोमोहतहै फेरवेस्याकोघरकैसोहै महावीरक्यावडेजोहैसूरमैसोजहांकामीक्याकामसंजुक्त भनेसोभ
कैसोसदनहै।।सारंगनामाजोरागहैताकीधुनिजहांरसकोउपजावतहै।।ऐसोवेस्याकोघरहै।।तालकैसोहै।।चटकचिडीया सारकामैना।।खंजनम
जहांमनकोमोहतहै।।महावीरकोकिल किंवागरुड ऐसाकामीजोहै बहुतसोहतहै।।फेरसरकैसोहै सारंगपपीहेकीधुनि
उपजावतहै ऐसोतालहै दोहा।।भावतरूचिरूचकोकचितगनकालसतसमीप।।पीनपयोधरधरतजुगवेसकसरकिमहीप।।२०।।
राजाकोसरको किधौंवैसीक नायकहै।।वैसकनायककैसोहै भावतकोअर्थसोभायमानहै फेरकैसोहै रूचिरूचकोअर्थ रूचिजो
तामैहैजाकीरुचिचाहना।।फेरकोकजोहैकामसास्त्रतामैजाकोचित्तहै गनकाजोवेस्याहैसोजाकेसमीपलसतहै।।फेरनायककैसे
कठनजोहैजुगदोयपयोधरकुचतिनकोधरतहै क्यापकरतहै ऐसोवैसकनायकहै तालकैसोहै भावतरूचिरूचकोकचित।।अर्थ
कहीयेपवित्रजोहैरुचक्रांत सोकोकजोहैचकवेतिनकेचित्तकोभावतहै औगनकानामहस्थनीकोहै इहांराजाकीहस्थनीलीजे राजाके
मीपप्रकासितहै।।फेरतालकैसोहै जुगनामचारकोभीहै चारोतरफकेजोहैचार पीनपयोधर क्यासुंदरकिनारेतिनकोधरतहै क्याधरतहै।।

ऐसो तालहै॥ आभीरछंद॥ पुंडरीक[illegible]वास॥ करत नत्रास प्रकास॥ सविष सुषद असमीत॥ लषि सर अद्भुत रीत॥ ३१ वार्त्ता॥ यामै विरोधाभास

अलंकार है॥ शब्दनि मै विरोध सो भासत है अर्थ मैं नही व्रज नाम संवूह को संवूह पुंडरीकनि को वासस्थान है पै त्रास भय को [illegible]करत

यह अद्भुत पुंडरीक सेरना को स्थान भयदायक होत है यह पुंडरीकनि को स्थान है पै भयदायक नही यह विरोध॥ अविरोध दूजो अर्थ॥ पुं[illegible]

लको नाम है तिनिको घर है फेर ताल कैसो है सविस है क्या विस के सहित है पै असु जो है प्रान तिनको सुषदायक है यह अद्भुत वि[illegible]

तजो होत है सो प्राणनि को सुषद नही होत यह विस सो भी है पै प्राणनि को सुषदेत है यह विरोध अविरोध दूजो अर्थ विस नाम कमल[illegible]

के सहित है सवैया छंद॥ जे तोरत तन नत लतन रहु तिन पथकनि के वोरत ताप॥ अमल करत अपनि के अपघन अनुदिन सकल घ[illegible]

हरन जीवनमैं आनंद कारन वंधन पर वंधन हर देत॥ फते मृगेंद्र नरेंद्र सरोवर लोक विलोक विलोकनि केत॥ ३२॥ वार्त्ता॥ फते मृगेंद्र [illegible]

सिंह नरेंद्र राजा ताको जो है सरोवर ताल सो कैसो है लोक जो है जगत तामै विलोक को अर्थ देषो विलोक जो है विसेष जस ताको निकेत घर है अ

जस वारो है कैसो है ताल के तन विषे जे तन रहु कही ये वारनि के तुल्य है समान है किंवा तलाव के पुत्र वरोवर तलाव को निकट के जे वसे है गो

के रोमनि के वरोवर है तिनको जे पथक राही तोरत है तिनके ताप को तलाव वोरत है क्या दूर करत है ताप के द्वै अर्थ एक तो मारग को दु[illegible]

हरत है दूजो अर्थ तापतीन तरहि को सूर्य अग्नि इत्यादि सो जो होय सो आधदैवक॥ १॥ कोई के कहू वचन अनादर इत्यादि सो होय सो[illegible]

रोगादि को सो होय सो आध्यात्मिक ३॥ तिनको सत पुरष दूर करत है अर्थ यह लोक तो अपकार करत है तन रहु तोरत है तल[illegible]के पिम

कार कार करत है ताप हरत है फेर ताल कैसो है अपर क्या औरनि के तो अपघन जो है सरीर तिनको अमल निर्मल करत है॥ [illegible]रगनी

मैल को आप धारत है मल के द्वै अर्थ मलीनता औ पाप॥ आप के द्वै अर्थ जल औ अपनो आप॥ संत जन भी आप दुष सहि के [illegible]नाम

को दूर करत है॥ अनुदिन क्या दिनादिन प्रति ऐसी तरंगो को धारत है॥ फेर ताल कैसो है जीवन हार जे है जीवनि के हरन [illegible]गौरी

रेवा [illegible]त है॥ क्या तिनको आनंद देत है॥ जीवन के द्वै अर्थ॥ एक तो जल ता के हरन वारे तिनको आनंद देत है दूजो अर्थ जो इनके [illegible]

औरु जे चिंतादिक व्यभिचारी है ते शृंगारके हैं औ तिसकी न्याई करुना भयानक के भी है औरु नके नहीं॥ ऐसे ए रसन में असाधा
रन है साधारन नहीं॥ यातैं एक एक ते नियम करके रस की व्यक्ति नहीं होत॥ सो याही वात तैं एक एक के व्यंजक करनें में औ दैवे के आसेप करन
में अनिश्चै है॥ जो विभावादिक साधारन होते तो दैवे को आसेप कै जातो॥ ए तो असाधारन है याते मिले ई हुये रस को व्यंजक है॥ प्रश्न श्री
गोविंद॥ जो ए विभावादिक मिले ई हुये रस के व्यंजक कहै तो चाहीये एक एक तें रस की व्यक्ति न होय सो तो एक एक तें व्यक्ति रस की देखीयत है॥
सो दिखावत है रसरहस्ये॥ विभावन कर व्यक्ति यथा सवैया॥ कुमकुम केवरा च कुंभोर तें दाम नीरूप अनूप दिखायो फूल कमान वढी ल षीये सुनी
ये यह मोर न कूक सुनायो॥ कारी हरी सित पीरी घटा छवि सी रो सुगंध समीर सुहायो अंत कहूं मान रहेगो न प्यारी कहे व्योन शीतम॥ सषी सषी वच
न नायका मानवती है अर्थ सुगम॥ ईहां नायका ही आलंवन मात्र है तस्या को॥ तिस कै ई निकट तें रस की व्यक्ति होत है॥ अनुभावन कर व्यक्ति य
था॥ कवित्त॥ [illegible] दोहा॥ सीतक पोल विधु तें अधिक सिथिल मसीन॥ [illegible] नीठ नीठ सषीयन कहे होत काम में लीन॥ ईहां केव-
ल अनुभावन ही तें रस की व्यक्ति होत है॥ व्यभिचारी भावन कर व्यक्ति यथा॥ रसरहस्ये॥ आनंद सो उमगे तक हूरते॥ ईहा ओत्सुक्य आवेग को
उदासीनता अवहित्था दीनता लज्जा ईर्षा॥ हर्ष इत्यादि व्यभिचारी भावन ही तें रस की व्यक्ति होत है॥ या प्रकार ग्रंथन में एक एक ही तें रस की व्यक्ति
देखीयत है॥ सो यह तो चाहीये न होय॥ औरु जो तुम कहोगे ईहा नायक आलंवन भी है सो आलंवन नहीं है॥ [illegible] कुल जो धर्म है तिस [illegible] के
त है॥ तातें जोग्यता करके आलंवन विभावन ही है॥ उत्तर अभिनवगुप्तपदाचार्य॥ इन विभावादिकन को असाधारन करके औ अन्य जो दैवे है तिनको अ[illegible]
कार कोई हा भी मिले ई हुये रस के व्यंजक कहै॥ प्रश्न श्रीगोविंद॥ जो ए विभावादिक असाधारन है तो अन्य दैवे को आसेप काहे को करने [illegible] ही एक कहु
होयगो॥ उत्तर अभिनवगुप्तपदाचार्य॥ जो एक कही एक को मुख्यता होय तो अन्य जो दैवै है तिनको व्यर्थता माय जाय॥ याहीतें दैवे को आसेप कन [illegible] तो
को अंगीकार करनो जोग्य है॥ औ जद्यपि असाधारन भी है तो भी अन्य दैवे को आक्षेप ही वनत है॥ नहीं तो व्यर्थ है जाय॥ औरु रस में तो विभावा
जो ते मुख्य है तिन सर्व को आश्रय रूप है केवल एक ही कू नहीं है॥ याते तिस रस की एक एक असाधारन विभावादिकन तें व्यक्ति नहीं
मिले ई हुये रस व्यंजक कहै॥ अब कोई क तौ एक सृंगार ही को रस कहत है॥ कोई कवि यो दस रस कहत है तिन वे रोक ने कोर सके मेद कहा
प्रपद्य [illegible] हास्य रस करुना रौद्र वीर भय वीभत्स अद्भुत शांत सुधीर॥ सुगम ऐ रस है आठ तो नाट्य में होत है
व्य में होत है॥ प्रश्न श्रीगोविंद॥ रस तो सकल कस्यो है तिन में करुना भयानकादिक [illegible] है॥ अभिनवगुप्त
उत्तर
नवर

कविनकोभी

॥५१॥ विषेस्वरूपतानहीहै पैतौभीकविनकोवरननकरतेहुयेस्वरूपसहीहै इनवोचमत्कारकवीस्वरनकोहृदयस्वरूपनेहीहै

इनकेवरननमेभीतिनकोआनंदहीहोतहै इसीरसकोरसमानत॥ जोतुमयहनमानोगे तौ एकहोगेकरुनादिकेदुखरूपहीहै याहोमे तौ [illegible]

क्योंतिनकोभीदुखरूपहोयतौकविवरनतिनकोतिनकेवरननकरवेमेंउनकोइछानहोय॥ यातेजानीयेतिनकोस्वरूपहीहै॥

तदुक्तम्॥ वासनाचेन्नहेतुःस्यात्सस्यान्श्रीमांसकादिस्थिति॥ दोहा॥ जोक्तभावकीवासनारसकोहोयनहेत॥ तौ
मिमांसकादिकनमेंताकोहोयनिकेत॥ ३॥ प्रस्न श्रीगोविंद॥ विभावादिकतोनटविषैस्थितहै तिनाकरकेसामाजकों
मेंस्थाईकैसेंव्यक्तहोय॥ उत्तर॥ अभिनवगुप्तपादाचार्य॥ ग्रंथनमेंद्वैनयमहै॥ एकतोस्वईकारनियमहै एकपरहार
नियमहै॥ दोऊनकोलछन॥ जैसैंसंबंधविसेषकोग्रहनहोयसोस्वईकारनियमहै॥ औजामेंसंबंधविसेषकोत्या
गहोयसोपरहारनियमहै॥ तिनकोजितावतहै॥ एपदारथमेरेहै॥ एसत्रुकेहै॥ एउदासीनकेहै॥ यहसंबंधविसे
षकोस्वईकारनियमहै॥ औएपदारथमेरेनहीएसत्रुकेनहीएउदासीनकेभीनही॥ यहसंबंधविसेषकोपरहार
नियमहै॥ सोरसकीउतपतमेंइनदोऊनकोग्यानहोतहै॥ स्वईकारनियमकोभीग्याननहीरहत परहारनियमकोभी
नमें ग्याननहीहोत॥ तातेंविभावादिकैंऔस्थाईइनैंकोयह ग्याननहीहोत एहमारेहै अथवाऔरनकेहै॥ प्रस्न श्री
को गोविंद॥ जोतिनैंविभावादिकनकोग्यानहीनहीहोत तौतिनकोरसकैसेहोतहै॥ उत्तर॥ अभिनवगुप्तपादाचार्य
सामाजकनकोविभावादिकनकीप्रतीततोहोतहै पैसाधारनताकरकेहोतहै॥ विसेषताकरकैंनहीप्रतीतनहीहो
किएवि तहै॥ हमारेंहैकैनटमेहै॥ साधारनताकहा॥ सर्वसंबंधकरकेप्रतीतनहोनी॥ कैसीप्रतीतहोनी॥ विसेषसंबंधकीअप्र
भावादिक तीतमेंप्रतीतहोनी॥ सोजितावतहै एफलानेकेहै यहविसेषबंधकीप्रतीतनहोनी॥ औएफलानेहै इतनीहीप्रतीतहोनी य
यहसाधारनप्रतीत॥ सोविभावादिकफलानेकेहै यहप्रतीतसामाजकोकैसेंकोनहीहोत॥ एविभावादिकहैइतनीसामान्यप्रती

श्री१

तत्रोद्गदे॥ प्रस्न गोविंद॥ जो विभावादिकपदोंकेअर्थनतें विभावादिकनकी साधारनप्रतीत होतहै तो चाहीये सर्वठौरपदों
केअर्थनतें साधारनहीप्रतीत होय विसेषसंबंधकीप्रतीत न होय। सोयहवात तो असंभवहै॥ क्योंपदकेअर्थज्ञानतें विसे
षसंबंधकीप्रतीतभी द्वैजातहै॥ जैसें सीतापदहै याको अर्थ सीनामहत्वके अग्रभणकोहै तातें जोउतपतहोय सो कहीयेसी
ता॥ याअर्थकेज्ञानतें जनककीपुत्रीप्रतीत होतहै॥ जैसें ई ओरजानीये॥ उत्तर अभिनवगुप्तपदाचार्य॥ पदकेअर्थज्ञानतें वि
तेषसंबंधकीभीप्रतीत होतहै यामें कछु विरोधनहीहै॥ पैरसमें विभादिकनकी साधारनप्रतीतहोतहै॥ प्रस्न श्रीगोविंद॥
विसेषसंबंधकीप्रतीत तो पदहीतें होतहै॥ तुमपदके अर्थतें क्यों कहतहो॥ क्योंके सीतापदहीतें श्रीजनकनीसीताप्रतीती
भई याहीमें जनकसंबंधनीजानीपरी॥ अर्थतें क्यों कसो॥ उत्तर अभिनवगुप्तपदाचार्य॥ विसेषसंबंधकीप्रतीत पदतें नहीं
तरे होत पदकेअर्थहीतें होतहै॥ क्यों सीतापदतें तो ह्वीसमनी सीतायहप्रतीत होतहै॥ औ विसेषसंबंधकीप्रतीत याकेअर्थ
हीतें होतहै॥ जो तुम यावातको हठकर न मानोंगे तो अनुभवमें विरोधहोयगो॥ यातें यहग्रहनेंको जोग्यनहीं॥ प्रस्न॥ करे
श्रीगोविंद॥ सामाजिकनको तो विभावादिकहीसाधारन होतहै स्थाई नहीं होत॥ क्यों स्थाई तो अपनेई अपनेहृदयमें स्थि
त होतहै॥ इनको साधारन क्यों कसो॥ उत्तर॥ अभिनवगुप्तपादाचार्य॥ जद्यपस्थाईभावनको असाधारन कहे तो रस
की प्रतीतमें विरोध न हीहोतहै पै जे रूहृदहै क्यों जिनोंमें रस उपजतहै तिनको भलीप्रकार सौं कथनके न होयगो॥
चाहिये सौ॥ जो स्थाईभावनको असाधारन कहीये तो जिसमें रस उपजेवाहीको रसज्ञान होय औरको न होय फेर भलीप्रकार
सौं कथन कैसे होय॥ क्यों भलीप्रकार सौं कथन तो तबहोयगो जबरसादस्थाईभावसामाजकोमें साधारन होयगो॥ यातें

॥ॐ स्वस्ति श्री गणेशाय नमः॥ अथ रस लछन दोहा॥ कारन कारज जे जगत अपर सहायक जान ते थिर भावन के
कवि कृत विभावादि बखान॥१॥ पुनः दोहा॥ तिन करन रत्यादि क चित्त में व्यक्त भाव थिर होय॥ ताकों कवि कोविद कहैं रस
व्यंग्य निमित्त जोय॥२॥ वार्ता॥ जे जगत विषे कारन है औ कारज है औ सहायक है ते थ्याई भावन के विभावादिक कहे
है॥ जे कारन है ते तौ रत्यादिकों के विभाव है॥ सो कारन द्वै प्रकार को॥ एक आलंबन कारन एक उद्दीपक कारन॥ जे कारन आलंब
न है ते तौ रत्यादिकन के आलंबन विभाव है [illegible] नायकादिक॥ जे उद्दीपक कारन है ते रत्यादिकों के उद्दीपन [illegible]
उपवनादिक॥ और जे कारज है ते रत्यादिकन के अनुभाव है स्तंभादिक आठ॥ और कटाक्षादिक॥ और जे सहायक है
ते रत्यादिकों के व्यभिचारी भाव है॥ रस के उपजन लगे जे उत्कंठादिक होत है ते सर्व व्यभिचारी है॥ प्रश्न॥ उद्दीपन विभा
व तौ रत्यादिकन कों कछु कैं (दीपत कर) [illegible] देत है उपजावत तौ नाही तातें इनकों कारन क्यों कहीये उत्तर॥ इनकों दीपत करने थ्याइ
प जौवन ई के समान है॥ तातें ए भी रत्यादिकन के (गौन) कारन ही है॥ कों तिन में भी विभाव व्यवहार पाईयत ही॥ वाग को धा
मन विषै जैं रत्यादि थ्याई भाव है तिनकों जे रस के आनंद के अंकुर करै देत है ते विभाव कहीये॥ और जे हिये अंकुर रूप हुये कों प्रा
प्रकास करे देत है ते अनुभाव कहीये॥ और (जे) प्रकास रूप हुये [illegible] रत्यादि थ्याई है तिनको पुष्ट कार के विषे [illegible] सो सरीर में
र जौन से विचनाय देत क्या सर्व सरीर में जौन से [illegible] हुये रत्यादि थ्याईन कों व्याप्त करदेत है सो व्यभिचारी

अलरसतो १

विकार त्यादिकनको जे पुष्ट करके विसेषता सौं सन्मुख व्है के विचरे ते कहीये व्यभचारी भाव॥ सो इन विभादिकनकर के स्था

ईजहा व्यक्त होय सो कहीये रस॥ व्यक्त नाम चर्वना को है सो स्याई को विसेषन है॥ स्याई विसेष्य है चर्वना विसेषन सो मि

स्याई ली हुयो जो ... है सो कहीये रस॥ याकहनते यह जान्यो कि रस कारज नहीं है॥ विभावादिक कारनोंते उपजत है तातें ... सी नतें वि

कोन होय॥ उत्तर विभावादिकतो ... स्याई को उपजावत है रसको नहीं उपजावत यह हम पाछे कहाई है॥ पुनः श्रीगोविंद॥

ह्योचर्वना विसेषन सों मिल्यो जो स्याई है सो कहीये रस॥ सो ... विसेष्य विसेषनको संयोग है॥ सोई यह जितावत है कि रस कारज

केलाप तुम क्यों नहीं मानत॥ उत्तर॥ विसेष्य विसेषनको संजोग कारजको नहीं जनावत॥ नील घट वत॥ ईहां नील विसेषन

के साथ घट विसेष्य है॥ सो पट विसेषन

... घट कारजको न ... ही जितावत है॥ घट कारजको मृत्यका ही जितावत है॥ तातें स्याई रसको अर्थ यह

को जो स्याई को रस कहीये तो कारज व्है जाय॥ स न्या है विभावादिकन सों मिल्यो हुयो प्रसन्न ही रस है॥ जो तें न माने तो ग्रंथ पर कर

विरोध व्है है॥ क्यों ग्रंथनमें कह्यो है रस कारज नहीं॥ तातें रसको कारज कहनो वादमात्र ही है॥ औरु जिस पदारथके जे कौन

होत है ते तिसी पदारथको उपजावते है॥ ऐसेई विभावादिक ए स्याई के कारन है सो स्याई ही को उपजावत है प्रश्न स्याई का॥

जो मनको विकार विरोधी भावनकर के वा अविरोधी भावनकरके दूर न होय सो कहीये स्याई भाव॥ प्रश्न यह रसको लछन

कपोलकल्पित ही है कि कहूं ग्रंथनमें भी लिख्यो है॥ उत्तर कपोलकल्पित नहीं भरत जीने कह्यो है॥ विभावानुभावव्यभिचारि

संयोगाद्रसनिष्पत्तिः इति॥ दोहा॥ विभाव अनुभाव व्यभिचारिनके संयोग रसकी निष्पति होत यह कहत ... कि थितें

यह भरत जी को सूत्र है या सूत्र पै लोल्लट भट्ट तें आदि लै के जे आचारज हैं तिनोंने व्याख्या करी है। इत्यादिक जे स्थाई हैं ति-
न को विभावादिकन के संयोग भये रस की निष्पत्ति होत है क्या रस की उतपन होत है प्रकासता होत है। पुष्टता होत है।
सो जितावत है॥ स्थाई भावन सौं जब विभावन को उतपाद्य उतपादक भाव रूप संजोग होत है तब तौ रस की उतपत होत है॥ स्था-
ई तौ उतपाद्य है उतपत होन की लायक है विभाव उतपादक है उतपत करन की लायक है॥ सो नायकादि आलंबन विभावनों
इत्यादि — स्थाई की उतपत होत है॥ उपवनादि उद्दीपन विभावन तें दीपत होत है॥ या प्रकार तौ रस की उतपत होत है॥ और जब स्थाई न के
साथ अनुभावन को ज्ञाप्य ज्ञापक भाव रूप संयोग होत है तब रस की प्रकासता होत है॥ स्थाई तौ ज्ञाप्य है क्या प्रकासत होन की
ज्ञापक है क्या — लायक है अनुभाव प्रकासत करन की लायक है॥ कटाक्षादिक इत्यादि स्थाई न को प्रतीत लोग कर देत है यों रस की प्रकासता होत है। कौन
और जब स्थाई भावन के साथ व्यभचारी भावन को पोष्य पोषक भाव रूप संयोग होत है तब रस की पुष्टता होत है॥ स्थाई
भाव तौ पोष्य है पुष्ट होन की लायक है व्यभिचारी पोषक है क्या पुष्ट करन की लायक है॥ उत्कंठादिक व्यभिचारी स्थाई को
पुष्ट कर देत है या प्रकार रस की पुष्टता होत है॥ और नाट्य विषै जहां रामचंद्र के स्वरूप के तुल्य हीन दुःखादि रूपनैं स्वांग को धार-
त है तहां आरोप्यमान जो रस है सो सामाजकों को चमत्कार को कारन होत है॥ अर्थ कि चमत्कार करत है॥ प्रस्न॥ यह बात तौ न-
नु दुखैवि है — ही बनत॥ जो सामाजकों विषै रस ही न ही है तौ रस को चमत्कार तिन में कैसे होयगौ उत्तर लोल्लट भट्ट॥ जो सामाजकों में
न ही है तौ तिनों में रस ज्ञान तौ है॥ सो तहां रस ज्ञान ही चमत्कार को कारन है॥ श्री गोविंद॥ रस को ज्ञान तौ जैं काव्य पै है ति-
प्रस१ यह अनुभव विरोधी है

को
नायक नायकादिमें।

२ भीहोतहै याहीयेरसकोचमत्कारतिनमेंभीहोय सोतोनहीहोत॥ओरु जोकाहूनेंश्रृंगारादिरसदेषेतोवाहीयेनाको भीचमत्कारह्वैजाय॥सोनाविषेतोनहीहोत।त्रिनमेंरसहोतहैतिनहीमेंचमत्कारहोतहै॥उत्तर लोलटभट्ट॥नायकनायकादिमेंजे श्रृंगारादिरसहैतेतोसाक्षातकारहै॥यातेंउनकोंचमत्कारउनहीमेंहोतहै॥ओरुमेंनहीहोत॥ओ नटुवेविषेजेरसहोतहै तेआरोपकहोतहैं साक्षातकारनहीहोत यातेंउनकोचमत्कारसामेजकोमेंह्वैजातहै॥प्रश्न श्रीगोविंद॥जेआरोपकरसहै तेभीसाक्षातकाररसंहीकेतुल्यहोतहै॥औसेमतकहोजोआरोपकरससाक्षातकाररसकेतुल्यनहीहोत॥जैसेजोकाहू कोउष्णताकेसमयेचंदनलगाईयेतोचंदनकीसीतलताकोजोआरोपकरत्रहेसोतिसपुरुषकोसाक्षातकारत्रहीकेतुल्य होतहै॥जोआरोपकरससाक्षातकाररसकेतुल्यनहोयतोवाहीयेचंदनकीसीतलताकोभीलषनहोय॥जोतुमयहकहो अपनोईपक्षराषोगेतोहमतुमारेपक्षमेंप्रमानकोअभावहै॥अवभरतजीकेसूत्रपरश्रीशंकुकजीकिहतहै॥स्याईभावनिकेसंग यविभावादिकनकोअनमाप्य अनमापकभावरूपसंबंधकेसमयेतेंरसकीनिष्पत्तहोतहै काअनमितहोतहैंअनमानके तहै॥स्याईतोअनमाप्यहै क्याअनमानहोनकीलायकहै ओविभावादिकईनकेअनमापकहै अनमानकरायदेन कीलायकहै याप्रकाररसकोअनमानहोतहै॥सोदिषावतहै॥प्रथमजगतविषेचारप्रकारकीवुद्धिहै॥एकसंम्यकवुद्धि॥दूजी मिथ्यावुद्धि॥तीजीसंसयवुद्धि॥चौथीसादृश्यवुद्धि॥संम्यकवुद्धिकोलछन॥पदारथकेविषेनिश्चैकाप्रतसहोनासोकहीयेसं कवुद्धि॥जैसेंयहीरामहै रामहीहैयहहै प्रथमशब्दविषेहीअक्षरओरकेसंजोगकोदूरकरतहै यहीरामहै ओरुनहीं॥दूजे

१ हीहै यहहै   १ रामहै   १ असंजोगपताकोदूरकरतहैरामहीयहहैयामेंअसंजोगपतानहीं दूजे

रामहै मोरन हीं

क्षमें ही अक्षर मैं जोगन को दूर करत है राम हीं है यहीं यामें ~~जैसे सीप में रूपे को~~ भ्रम संभ्रम बुद्धि ॥ अथ मिथ्या बुद्धि लक्षन ॥ जो

विना समय पदारथ उपज्यो है ताके उपजवे को बाध होना होय जामें सो मिथ्या बुद्धि है ॥ जैसे यह राम है पै पाछे ते अब अवतार धार्यो

है याते ईसी काल विषे यह राम है अगले काल में राम नहीं होयगो ॥ इस बाध ते मिथ्या बुद्धि भई ॥ संसय बुद्धि को लक्षन ॥ जा

के दोऊ ओर संदेह होय सो संसय बुद्धि ॥ जैसे यह राम है कि नहीं है ॥ ईहां न राम ही में निश्चै है न और काहू में निश्चै है ॥

याते यह संसय बुद्धि ॥ अथ साद्रस्य बुद्धि को लक्षन ॥ जहां दोऊ पदारथो विषै तुल्य ज्ञान होय तहां साद्रस्य बुद्धि ॥ जैसे यह

राम सद्रस है जैसो राम को सरूप है तैसोई याको सरूप है ॥ यह साद्रस्य बुद्धि ॥ ए जो जगत में चार प्रकार की यां बुद्धि है तिन

ते भिन्न जोन सी बुद्धि है क्या चित्रे तुरंगो यं चित्र विषै घोरा है इस बुद्धि करके स्वांग के धारन वारो जो नट है ताको

प्रथम जानते है कि रामोयं ॥ यह राम है ॥ और जय पन्हु वे विषै विभाव अनुभाव व्यभिचारी भाव ए हु नहीं है ॥

पर तौ भी सभा के लोकन को वैसेई प्रतीत होत है काहे ते नटुवे ने गुरों की सिक्षा पाय के रोमांचादिन के प्रकासने विषै

अत्यंत अभ्यास कियो है याते विभावादिक वैसेई प्रतीत होत है ॥ स्वांगधारी नटु ने जो सीता जी बनाई है तासों कहत है ॥ दोहा ॥

मम तन अव्वल रस छटा सी कटु तेंकर्पूर अभिलाष निर्भरत मनो संमुख सिय कर्ष मर ॥ १ ॥ पुनः दोहा ॥ चपल लोचनी सीय को

मो वियोग मोह आज ॥ पुन करालइह काल में उठे सघन घन गाज ॥ २ ॥ इत्यादि आलंबन उद्दीपन विभाजिंव पनि में कहे है ते नटु

वे में जब प्रगट होत है तब रोमांचादिक जे दर्सनीय अनुभाव है और पोषनीय जे उत्कंठादिक व्यभिचारी है तिनके कारज जो कैसा

तिनके प्रगटे न करके

प्रेसेई

सो जितावत है ॥

होत वास्तवनहीहै १ रूपहै तिसरूप भी २

टनेंतें रसकौ प्रकास होतहै ॥ औरु नट विषए विभावादिक जद्यपि कल्पम भीहैं परसभाके लोकनकों यह ज्ञाननहीहै किये कृ
तिन विभा त्रमहै उनकों वेसेई प्रतीतैहै ॥ याहीतें रत्यादि स्थाई अनुमानकरीयतहै यही अनुमितहै ॥ क्यों चमत्कारके प्रतीतकों चर्वनाहै
वादिकन चर्वना तिसकर केप्रकासरूपकोप्राप्त भयो सो स्थाई भावहै सो रसकहीयतहै ॥ सो चर्वना सामाजको विषैहोतहै तिनोविषैरसहो
करके २ है ॥ प्रश्न श्रीगोविंद ॥ चमत्कारके सहत जो चर्वनाहै सो तो साक्षात्कार ही है ताको याको कैसे अनुमानकरीयतहै ॥
अनुमान तो नहीं ॥ जो ऐसे न मानोगे तो संभव प्रतीतमान जो सुषहै सो भी अनुमान ही होवे सो तो होत नहीं ॥ उत्तर श्रीसं
कुक ॥ इहां जे औरु अनुमान है तिनोतें यह अनुमान भिन्न ही है ॥ क्या औरही प्रकारको है ॥ क्यों ॥ औरु अनुमानोविषै तो दूर
साध्यकी प्रतीत दूरहीतें साधनों करके होतहै ॥ ज्यों अग्नि साध्य धूम साधनकर दूरहीतें अनुमान सो जानीयतहै ॥ औ इहां
होत स्थाई साध्य विभावादि साधन दूर नहीं होत प्रतक्ष हीहै ॥ पेपदारथोंकी अत्यंत कंदरताके वसतें सभाके लोकनको लहां निकट
दूरको ज्ञान नहीं होत है ॥ यातें तहां रसको अनुमान ही रस करीयतहै ॥ प्रश्न श्रीगोविंद ॥ अनुमानतो तहां होतहै जहां साध्य साध
न एकठौर होतहै ॥ औ इहां तो साध्य स्थाई सामाजकोमें है ॥ साधन विभावादिक नटमें है ॥ तातें इहां अनुमान कैसे बने ॥ श्री
शंकुक ॥ उत्तर ॥ जेसामाजिक लोकहै तिनोंको यह निश्चय नहीहै कि हमारे में विभावादिक है नहीं ॥ यातें तहां अनुमान कीयतहै
जो यह निश्चै होय तो अनुमान न बने ॥ प्रश्न श्रीगोविंद यह भी नहीं बनत ॥ क्यों चमत्कारके सहत तो प्रतक्ष ज्ञान ही होत है ॥
अनुमान नहीं होत ॥ यह लोकप्रसिद्ध बात है ॥ इसको दूर करके जो व्यर्थही कल्पना करनी तामें प्रमानको अभाव है ॥ सत्रको अन्य
पाश्चर्थक रचना यामें असंभव दोष होतहै ॥ अबवाही भरतजीके सूत्रपर भट्टनायकजी व्याख्या कहतहैं ॥ राम विषै औरु नट

विषैरसअनुमानभीनहीहोत॥औरऊनविषैरसउपजतभीनहीं॥औरूसामाजकेविषैव्यंगभीनहीहोत॥ऐसरसनिविषै
कोऊरूपसनहीबनत॥जोकहौ दि रसउपजतहै तो रसकारजह्वैजायो सोरसकारजनहीहै॥जोकहौरसअनुमान है
करीयतहै सोभीनहीबनत॥क्यो अनुमानविषैतोसाधनसाध्यरकठौरहोतहै॥कैसे जैसे जत्रधूम तत्रअग्नि॥
यहतोनहीधूमअग्निभिन्नभिन्नहै॥औरईहांविभावदिनटमेंहोतहै रससभाकेलोकनमेंहोतहै॥ईहांअनुमानन
है हीबनत॥औरूजोकहौसामाजकोमेंरसकीप्रगटताहोतहै सोभीनहीबनत॥प्रगटतातोसरूपवारपदारथकीहोत
है औररसकोतोकछुसरूपनही याकीप्रगटताकैसेहोय॥जोकहोगविनासरूपहीप्रगटताहोतहै तोफेरसामाजको गा
ईविषैक्योकहतहै चाहीयेसर्वमेंप्रगटहोयजाय॥तातेकोऊरूपसनहीबनत तातें सूत्रकोअर्थऐसेकीजे॥स्थाईभावन कौन
केसाथविभावादिकनकोभोज्यभोजकभावरूपसंबंधकेभयेतेंरसकीनिष्पत्तिहोतहै क्याभुक्तिहोतहै॥स्थाईतोभो भाव
ज्यहै क्याभोगनेकीलायकहै॥विभावादिकभोजकहै क्याभोगकरायदैनकीलायकहै॥तिनदोऊनकेमिलेरे को
कीभुक्तहोतहै क्यास्वादकोलैनोहोतहै॥यहसूत्रकोअर्थहै॥प्रश्न श्रीगोविंद॥यापक्षविषैभीदोषहै कोतुमकहो
कोचमत्कारकै महोरसभोगहै सोभोगतोलौकककहैअलौककनही॥औरसंचमत्कारकोतोअलौककहै यहभोगकैसेहोय॥उत्तर
भट्टनायक॥रसभोगजोहै सो अलौककहीहै॥क्योयाकीभुक्तिमेंकछुसाधननहीरहत॥यातेंरसभोगअलौककहै॥औ
रूप्रश्न श्रीगोविंद॥भोगनेकीलायकजोस्थाईहै सोतोसामाजकोविषैस्थितहै॥औरूजेभोगकरायदेनवारे विभा

४ दिक है सो तो [illegible] सामाजको मैं नहीं तो सामान्य करस को के से भोगें तिसके भुगावने वारे [illegible] विभावादिक तो ति
नमें दुर्यई नाही ॥ या लक्षन मैं अतिप्रसंग आयो ॥ उत्तर ॥ भट्ट नायक ॥ शब्द रूप जो काव्य है ताके तीन व्यापार हैं ॥ एक अभि
धाव्यापार ॥ दूसरो भावकत्वव्यापार ॥ तीसरो भोजकत्वव्यापार ॥ अभिधा लक्षन ॥ जो नाममात्र [illegible]जनावै सो अभिधाव्यापार ॥ तिस
व्यापार करके तौ विभावादिक औ स्थाई नाममात्र जानीयत है ॥ सो अभिधाव्यापार द्वै प्रकार को है ॥ एक सांतरार्थनिष्ठ ॥ दू
जो निरंतरार्थनिष्ठ ॥ सो सांतरार्थनिष्ठ तो नट मे होत है निरंतरार्थनिष्ठ राम मैं होत है ॥ भावकत्व लक्षन जो विभावादिक
को औ स्थाईन को साधारन करदेइ क्या सामान्य करदेइ सो [illegible] भावकत्वव्यापार ॥ तिस व्यापार करके विभावादि औ स्था
ई सामान्य [illegible] करीयत है ॥ क्यों [illegible] भावकत्वव्यापार करके नट विषै विभावादि सामाजको विषै स्थाई एसाधारन होत है ॥ असाधार
नन ही रहत ॥ भोजकत्व लक्षन ॥ जो विभावादिक को औ स्थाईन को एक करदेय क्या अभेद करदेय सो भोजकत्वव्यापार
तिस व्यापार करके विभावादि स्थाई य प्रकार एजब अभेद ह्वै जात है ॥ तब स्थाई भोगीयत है ॥ ए तीन व्यापार काव्य मैं होत है औ रूना
ट्य साख मैं द्वै ही होत है भावकत्व औ भोजकत्व ॥ क्यो वे अभिधाव्यापार को भावकत्व ही मैं गनत हैं ॥ ~~[illegible]~~
औरु तिस स्थाई के भोगन मैं जो भुक्ति है सोई रस है ॥ यातें रस भोग है ॥ प्रश्न गोविंद ॥ भोग क्या कहीये ॥ उत्तर भट्ट नायक ॥
सतोगुन की अधिकता तें जो आनंद प्रकाशमयो है तिसके स्वरूप वारो जो निरंतर ज्ञान को रूप है सो कहीये भोग ॥ सो भोग कै
सो है ॥ जगत के जे सुख हैं तिनो तें निरालोई है ॥ क्या ऐसो चमत्कार जगत के सुषो मैं नहीं होत ॥ या मैं सो को नर चमत्कार है ॥

नवारोहै५ तिसरसको ज्ञान १ के ग्रहन को ज्ञान ४ रसके ग्रहन को ४ ही १ रस १ तो १

कौरस ग्रहन ... है यातें ग्रहन में प्रतरस को ?

...गी है तिनो विषै अन्तस है ॥ ऐसे कहो है ॥ प्रस्न श्री गोविंद ॥ तुमने कहौ यह रसस्वाप्य नहै है सौ तो अस्वाप्य भयो जानवे की सो

परस्त्व ... म्रेयों को कहत है रस है ॥ याकहनमें तो हम नादी ... ॥ उत्तर अभिनवगुप्तपदाचार्य ॥ अघपय हरस है तो अस्वाप्य ही पै असंभव

तें अस्वाप्य नहीं है कि है नहीं या बात तें अस्वाप्य नहीं है ॥ क्यों याके ग्रहन करावन वारो जो ज्ञान है सो निर्विकल्प न हीं है काहे तें विभावादि कन को जो विचा

र है सो निर्विकल्प के के उत्पत करन को अजोग है ॥ यातें रस निर्विकल्पक नहीं है ॥ प्रस्न श्री गोविंद ॥ जो निर्विकल्पक नहीं मानत तो रस को ऐसे कहो सवि

कल्पकतें भिन्न सविकल्पक ॥ उत्तर ॥ अभिनवगुप्तपदाचार्य ॥ चर्वमान ... है और अलौकिक आनंदमय है तिस की लिङ्ग अपने ईज्ञान करके होत

है क्यों चर्वना विषै और जो दूजो ज्ञान है तिस को अभाव ही होत है ॥ यातें निर्विकल्पक को संग मिलायके सविकल्पक वैसे कहीये ॥

॥ अपने आप हैं अभिन्न जो है विभावादिक ॥ तिन को जो है सविकल्पक ज्ञान तिस ज्ञान के विसय करके स्वाप्य है यह हमारो ...

प्रस्न श्री गोविंद ॥ ज्ञान द्वै प्रकार को है एक ज्ञान तो आत्मचैतन्य रूप निर्विकल्पक है ॥ और निर्विकल्पकतें भिन्न दूजो सविकल्पक ज्ञान है सो तुम क

हत हो स्वाप्य विषै एक ज्ञान के तो अविसय है एक ज्ञान ... के विसय ... है ॥ सो एक ज्ञान के ... विसय हो नेकर के दो ऊ ज्ञान ने रस विसय कै

जात है ॥ क्यों तुम ने यह मान्यो कि निर्विकल्प ज्ञान के विसय को अभाव है ॥ सो इस ज्ञान के भाव ने भी रस ही को विसय कीयो ॥ सो यह विरोध आयो ॥ उत्तर

अभिनवगुप्तपदाचार्य ॥ हम तो इसी विरोध के दूर करन को यह वार्ता प्रथम ही कह आये है ॥ कि विभावादिकनतें अभिन्न विभावादिक तिनको

जो सविकल्पक ज्ञान है ॥ तिस ज्ञान को जो विसय रूप है सो रस की चर्वना विषै लोकोत्तर चमत्कार को प्राप्त करत है ॥ यों कहन तें विरोध नहीं है ॥

और जो हम ऐसे कहे कि निर्विकल्पक ज्ञान तें भिन्न जो सविकल्पक ज्ञान है तिस को विसय रस है ॥ निर्विकल्पक को विसय रस नहीं ॥ तो ते रोऊ प्र ल वने

सो हम ऐसे कहत ही नहीं ॥ यातें विरोध नहीं ॥ प्रस्न श्री गोविंद ॥ विभावादिक मिले ई हुये रस के व्यंजक क्यों कहै है ॥ एक एक व्यंजक क्यों न कहो ॥ क्यों

इन तीन्यो विषै जौन सो चमत्कारी होय सोई रसरूप है ॥ चमत्कार को प्राप्त हुयो जो विभाव है सोई रस है ॥ ऐसे ही याप्रकार को अनुभाव भी रस है ॥ ऐसे ही सो

ई व्यभिचारी भी रस है ॥ इस वार्ता को तो बहुत कहते है ॥ तुम मिले ई हुये तीन्यो को रसव्यंजक क्यों कहत हो ॥ एक एक को व्यंजक कहो ॥ उत्तर अभिन

वगुप्तपदाचार्य ॥ एक एकतें रस की सिद्ध नहीं होत है ॥ सो एक एक व्यंजक कहते व्यभिचार आवत ॥ यातें मिले ई हुये रस के व्यंजक कहे ॥ प्रस्न श्री गो

विंद ॥ जो एक एक को व्यंजक कीजे और दै दै को आक्षेप कीजे तो भी रस की व्यक्ति होत है और व्यभिचार नहीं आवत ॥ यातें ऐसे ई कहो ॥ उत्तर अभिनवगु

प्तपदाचार्य ॥ ए विभावादिक रसन विषै असाधारन है साधारन नहीं है ॥ क्यों व्याघ्रादिक जे उग्र विभाव है ते भयानक रस के है और तिस की न्याई

करुना के अद्भुत के वीर के है और कन के नहीं ॥ और अस्रुपातादिक जे अनुभाव है सो शृंगार रस के है और तिस की न्याई करुना के भयानक के भी है और न के नहीं

५ मेंनेत्रनिसेंडपस्तो ५ वासुक दुयो औ ज्ञान ४ जो

अभिनवगुप्तपदाचार्य॥ रस ज्ञाप्य भी नहीं है औ जन्य भी नहीं है॥ ज्ञाप्य को लछन तो ऐसे कह्यो है॥ पदारथ पतें जो भिन्न है तिसतें उतपत्त
भयो है ज्ञान तिस ज्ञान करके जो पदारथ जान्यो परे ताको ज्ञाप्य कहत है॥ जैसे पदारथ पतो एक घट है तिसतें भिन्न कौन है दीपक॥ तिस दी
पकतें उतपत्त जो भयो है प्रकास तिस प्रकास के ज्ञान करके जो जान्यो परयो है घट याको नाम तो ज्ञाप्य है॥ ऐसेई जो तुम रस कों ज्ञाप्य कहो तो
विभावादिकन तो यातें भिन्न नहीं है यामें मिलेई हुये है यह ज्ञाप्य कैसे होय॥ औ कृत्रिम पदारथ [illegible] उपज्यो है तिनकों दो ज्ञान है क्या यह
अमुक पदारथ है यह अमुक पदारथ है॥ यह जो पदारथों को ज्ञान है सो नेत्रो करके ज्ञाप्य नहीं है जन्य है॥ ऐसेई जो कहो विभावादिकनतें रस ज
न्य है तौ भी नहीं बनत॥ रस कारज ह्वै जात है॥ सो रस कारज है नहीं॥ रस तो इंद्रीयों तें परे है तिसको कारज कैसे कहीये॥ याही तें रस ज्ञाप्य भी नहीं
है जन्य भी नहीं है॥ औ कहो जो तुम विभावादिकनके ज्ञान के [illegible] हुये रस को ज्ञाप्य कहो तो हम नहीं निषेधते॥ औ विभावादिकनतें गोब
र्धना करन की न्याय करत होत है॥ औ चर्वन जो करीयत है सो तिनके ज्ञान कर करीयत है॥ प्रस्न श्रीगोविंद॥ जगत विषे तो द्वैही कारन है एक कारक
कारन है दूजो ज्ञापक कारन है तीजो कारन तो कोउ जगत में प्रसिद्ध नहीं॥ सो तुम नें रस में द्वैही नहीं मानें॥ याको हेत कहा॥ उत्तर अभिनवगु
प्तपदाचार्य॥ रस जो है सो तो अलौकिक कही है सो [illegible]॥ याके जो लौकिक कारन नहीं मानें तौ याको यह वार्ता भूषन नहीं है दूषन नहीं
है॥ प्रस्न श्रीगोविंद॥ जो रस के विभावादिक कारक कारन नहीं है औ ज्ञापक कारन नहीं है तो यों क्यों कहत हैं विभावादिकनतें रस उपजत है॥ औ
विभावादिकनतें रस जानने की जो रत है॥ यों कहनो असंभव है॥ उत्तर अभिनवगुप्तपदाचार्य॥ विभावादिकनतें चर्वना उपजत है तिस चर्वना में रस हो
त है यातें विभावादिकनतें रस उपजत कहीयत है॥ औ कछू रस की उतपत्ति नहीं है॥ गौनता करके उतपत्त कहत है॥ औ केनगुण एण्दिकों तें औ अलंकारा
दिकों तें अभिन्न जो रस है सो अलौकिक विभावादिकनकी प्रतीत करके विषय होत है यातें विभावादिकनतें जानने की जो रस [illegible] हीयत है औ क
छू ज्ञाप्य नहीं है॥ अब यह जो रसानंद है सो जोगीयन को [illegible] होत है सो कहत है॥ सोरठा॥ योगी द्वै विधि प्रमान अपरपक्ष परपक्ष पुन॥ अपरपक्ष के जो ज्ञान
जे परपक्ष के युक्त कहे है॥ १॥ जे अपरपक्ष के जोगी है तिनको नाम तो [illegible] ज्ञान है॥ सो तिनें विषे जगत के नानाप्रकार के जो भेद है तिनको प्रतक्ष करनवारो
ज्ञान है॥ औ कछू जे परपक्ष के जोगी है तिनको नाम युक्त है॥ उनो विषे बाह्य पदारथ जे है घटादिक तिनतें रहत [illegible]॥ अपने आप कोई विषय कर
ना ऐसे ज्ञान है॥ सो अलौकिक जो रस है तिसके विषय करनवारो जो ज्ञान है॥ सो जो ज्ञान योगीयों तें तो भिन्न है॥ उनो के ज्ञान करके विषय नहीं है॥

के ज्ञान॥